Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष- 9
अंक-19-20

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

16-23 ज़ुल्क़ादा 1445 हिज्री क़मरी, 15-22 हिजरत 1404 हिज्री शम्सी, 15-22 मई 2025 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَعَدَ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسۡتَخۡلِفَنَّہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ

(سورۃ النور:٥٦)

(अनुवाद) तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए उन से अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें ज़रूर ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उस ने इन से पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह सदैवी है जिस का काल कयामत तक नहीं टूटेगा

ख़ुदा की वाणी मुझे बताती है कि कई घटनाएँ प्रकट होंगी तथा कई आपदाएं धरती पर उतरेंगी कुछ तो उनमें से मेरे जीवन में प्रकट हो जायेंगी और कुछ मेरे बाद प्रकट होंगी और वह इस सिलसिला को पूरी उन्निति देगा कुछ मेरे हाथ से तथा कुछ मेरे पश्चात्।

यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है तथा जब से कि उसने मानव को धरती पर पैदा किया सदैव इस सुन्नत को वह ज़ाहिर करता रहा है कि वह अपने नबियों तथा रसूलों की सहायता करता है तथा उनको विजय देता है जैसा कि वह फ़रमाता है

کَتَبَ اللّٰہُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیۡ (अल् मुजादिलः आयत 22)

और विजय से अभिप्राय यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि ख़ुदा का तर्क धरती पर पूर्ण हो जाये तथा उसका मुक़ाबला कोई न कर सके इसी प्रकार ख़ुदा तआला दृढ़ निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है। तथा जिस नेक चलनी को वे दुनिया में फ़ैलाना चाहते हैं उसका बीजरोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है। लेकिन उसकी सम्पूर्णता उनके हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे समय में उनको मौत देकर जो सामान्यतः एक नाकामी का भय अपने साथ रखती है, विरोधियों को हँसी और ठट्ठे और व्यंग और अपशब्द कहने का अवसर दे देता। और जब वह हँसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी शक्ति का दिखाता है। तथा ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वे उद्देश्य जो कुछ हद तक अधूरे रह गए थे अपनी सम्पूर्णता को पहुँचते हैं। अर्थात् दो प्रकार की कुदरत प्रकट करता हैः

(1) प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है।

(2) दूसरे ऐसे समय में जब नबी के देहांत के पश्चात् कठिनाइयों का सामना पैदा हो जाता और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत मिट जायेगी और स्वयं जमाअत के लोग भी चिंता में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं तथा कई अभागी विमुख होने का मार्ग धारण कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली कुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अतः वह जो अंत तक धैर्य रखता है ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है जैसा कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के समय में हुआ जब कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौत एक असमय मौत समझी गई तथा बहुत से ना समझ बदियानशीन (ग्रामीण) विमुख हो गए और सहाबा भी दुःख के कारण दीवानों की तरह हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक को खड़ा करके पुनः अपनी शक्ति का नमूना दिखाया। और इस्लाम को मिटते मिटते थाम लिया और उसस वचन को पूरा किया जो फ़रमाया था,

وَلَیُمَکِّنَنَّ لَہُمۡ دِیۡنَہُمُ الَّذِی ارۡتَضٰی لَہُمۡ وَلَیُبَدِّلَنَّہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِہِمۡ اَمۡنًا

(अन्नूर, आयत 56)

अर्थात् भय के बाद फिर हम उनके पैर जमा देंगे ऐसा ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के समय में हुआ। जबकि हज़रत मूसा मिस्र और किन्आन के मार्ग में बनी इस्राईल को वचन के अनुसार निर्धारित मंज़िल तक पहुँचाने से पहले फ़ौत हो गए। और बनी इस्राईल में उन के मरने से एक बड़ा शोक पड़ गया जैसा कि तौरैत में लिखा है कि बनी इस्राईल इस असमय मृत्यु के दुःख से और हज़रत मूसा की अचनाक जुदाई से चालिस दिन तक रोते रहे। ऐसा ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ घटित हुआ और सलीब की घटना के समय समस्त हवारी तित्तर-बित्तर हो गए और एक उन में से विमुख भी हो गया।

सो हे प्रियो जब कि पुरातन से अल्लाह की पद्धति यही है कि ख़ुदा तआला दो कुदरतें दिखलाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को मिट कर दिखलादे सो अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पुरातन पद्धति को छोड़ देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास ब्यान की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह सदैवी है जिस का काल कयामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का ब्राहीने अहमदिय्या में वचन है जैसा कि ख़ुदा फ़र्माता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे मानने वाले हैं क़यामत तक दूसरों पर विजय दूंगा सो आवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ताकि इसके पश्चात् वह दिन आवे जो स्थाई वचन का दिन है वह हमारा ख़ुदा वचनों का सच्चा और निष्ठावान और सच्चा ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिस का उसने वचन दिया यद्यपि यह दिन दुनिया के आख़री दिन हैं और बहुत बलाएँ हैं जिन के उतरने का समय है पर अवश्य है कि यह दुनिया कामय र हे जब तक वह सारे वचन पूरे न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी मैं ख़ुदा की ओर से कुदरत के रूप में प्रकट हुआ तथा मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत हूं। तथा मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी कुदरत के स्वरूप होंगे। सो तुम ख़ुदा की दूसरी कुदरत के इंतज़ार में एकत्र हो कर दुआ करते रहे। तथा चाहिए कि हर एक नेकों की जमाअत हर एक देश में एकत्र होकर दुआ में लगे रहें। ता दूसरी कुदरत आकाश से उतरे। तथा तुम्हें दिखा दे कि तुम्हारा ख़ुदा ऐसा क़ादिर ख़ुदा है। अपनी मौत को निकट समझो तुम नहीं जानते कि किस समय वह घड़ी आ जाएगी।

और चाहिए कि जमाअत के बुज़ुर्ग जो पवित्र आत्मा रखते हैं मेरे नाम पर मेरे बाद लोगों से बैअत (दीक्षित) लें। ख़ुदा तआला चाहता है कि उन समस्त रूहों को जो ज़मीन के विभिन्न आबादियों में बसी हैं। क्या युरोप और क्या एशिया उन सब को जो नेक स्वभाव रखते हैं तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर खींचे और अपने बन्दों को एक धर्म पर एकत्र करे। यही ख़ुदा तआला का उद्देश्य है। जिसके लिए मैं दुनिया में भेजा गया। अतः तुम इस उद्देश्य की पैरवी करो, मगर नर्मी और उच्च आचरण और दुआओं पर ज़ोर देने से। और जब तक कोई ख़ुदा से रूहुल क़ुदुस (पवित्र आत्मा) पाकर खड़ा न हो सब मेरे बाद, मिल कर काम करो।

(अल्-वसिय्यत)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह सदैवी है जिस का काल कयामत तक नहीं टूटेगा	1
2	ख़िलाफ़त का सम्मान करना चाहिए	2
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिन-स्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 अप्रैल 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)	3
4	हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.	8
5	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिन-स्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 04 अप्रैल 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)	10
6	खलीफा-ए-वक्त का मकाम और मर्तबा, ख़िलाफ़त की इताअत और इससे वाबस्तगी की अहमियत और बरकतें	13
7	वैश्विक युद्ध के दुष्प्रभावों से सुरक्षित रहने के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़के निर्देश	17
8	माली क़ुर्बानी के संबंध में जमाअत के सदस्यों के अनुपम उदाहरण और खुदा तआला की विशेष कृपाएँ	22

ख़िलाफ़त का सम्मान करना चाहिए

एक बच्ची ने प्रश्न किया कि हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़के बचपन में किसी बुज़ुर्ग या किसी सहाबी के साथ कोई यादगार घटना हुई हो तो कृपया बताएं। इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

हमारे दादा (हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ि अल्लाहु अन्हु), जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे छोटे बेटे थे, जब उनका निधन हुआ, उस समय मेरी उम्र ग्यारह वर्ष की थी। उससे दो वर्ष पहले, एक बार उन्हें हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाहु अन्हु से मिलने जाना था। वे मुझे भी साथ ले गए। लेकिन यह नहीं हुआ कि चूंकि वे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाहु अन्हु के छोटे भाई थे, इसलिए सीधे घर के अंदर चले जाते उन्होंने ऐसा नहीं किया। बल्कि वे घर के बाहर खड़े रहे और मुझे भीतर भेजा कि जाकर बताओ कि मैं मिलने आया हूँ।

इसलिए मैं ऊपर गया और वहाँ छोटी आपा (हज़रत मरियम सिद्दीक़ा साहिबा मरहूमा) की ड्यूटी थी। मैंने उन्हें बताया कि वे मिलने आ रहे हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाहु अन्हु की तबीयत ठीक नहीं थी, वे लेटे हुए थे। तो हज़ूर रज़ि अल्लाहु अन्हु के बिस्तर के एक तरफ़ एक कुर्सी रख दी गई। फिर मैं नीचे आया और हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ि अल्लाहु अन्हु को ऊपर ले गया। इसलिए, वे ऊपर जाकर कुर्सी एक तरफ़ कर दी और ज़मीन पर बैठ गए। उस समय कालीन वग़ैरह नहीं हुआ करते थे, आम दरियाँ होती थीं जो ज़मीन पर बिछी होती थीं।

इस प्रकार उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाहु अन्हु से जो बातें करनी थीं, कीं। मैं तो आठ-नौ वर्ष का था, मुझे नहीं मालूम कि क्या बातें हुईं। बहरहाल, इसके बाद वे बड़े अदब से उठे और पीछे-पीछे चलते हुए बाहर चले गए। यह एक सबक़ मेरे ज़ेहन में आज भी ताज़ा है कि ख़िलाफ़त का सम्मान किस प्रकार करना चाहिए चाहे भाई ही क्यों न हो, लेकिन ख़िलाफ़त का अदब और सम्मान सर्वोपरि है।

इस तरह कुछ बुज़ुर्गों की बातें होती हैं जो सदा स्मरण रहती हैं। उसी समय से, बचपन से ही यह घटना मेरे मन में बसी हुई है और आज तक यह बात याद है कि ख़िलाफ़त का सम्मान करना है।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 15 नवम्बर 2013 से 21 नवम्बर 2013)

★ ★ ★

जहाँ में फैलेगा अम्न ओ अमाँ ख़िलाफ़त से

जहाँ में फैलेगा अम्न ओ अमाँ ख़िलाफ़त से
मोहब्बतों के हैं दरिया रवाँ ख़िलाफ़त से

नई ज़मीन नया आसमाँ ख़िलाफ़त से
है मोमिनों का रवाँ कारवाँ ख़िलाफ़त से

ज़मीं में चार सू पहुँचा है रास्ती का पयाम
कि गूंजती है बिलाली अज़ाँ ख़िलाफ़त से

हमीं ने थाम के रखा ख़ुदा की रस्सी को
तरक़्क़ियात हैं पिन्हाँ यहाँ ख़िलाफ़त से

अंधेरे बाँटने वाले न जान पाए ये
कि हो के रहता है हक़ तो अयाँ ख़िलाफ़त से

हो जिस के नूर से बातिल की तीरगी ज़ाइल
जहान-ए-नौ भी हुआ ज़ौफ़िशाँ ख़िलाफ़त से

(मंसूरा फ़ज़ल, क़ादियान)

(उद्धृत 26 अल् फ़लज़ 26 नवम्बर 2024)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

"बहुत से ऐसे चमत्कार हैं जो केवल व्यक्तिगत खुदाई सामर्थ्य के रूप में हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रकट किए, जिनके साथ कोई विशेष दुआ नहीं थी।

अनेक अवसरों पर बहुत ही थोड़े से पानी को, जो केवल एक कटोरे में था, अपनी उंगलियाँ उस पानी में डालने से इतना अधिक कर दिया कि पूरा लश्कर, ऊँट और घोड़े सभी उससे पानी पी गए, और इसके बावजूद वह पानी अपनी मूल मात्रा पर ही बना रहा।

कई बार केवल दो-चार रोटियों पर हाथ रखने से हजारों भूखों-प्यासों को पेट भर भोजन कराया।

कभी कभी थोड़ा-सा दूध अपने मुबारक होठों से बरकत देकर एक पूरी जमाअत का पेट भर दिया।

कई बार खारे कुएँ में अपने मुंह की लार डालकर उसे अत्यंत मीठा और मधुर बना दिया।

कई अवसरों पर गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों पर अपना हाथ रखकर उन्हें अच्छा कर दिया। और कुछ अवसरों पर जिनकी आँखों की पुतलियाँ युद्ध की चोट से बाहर निकल आई थीं, उन्हें अपने हाथ की बरकत से फिर से सही कर दिया।

इसी प्रकार और भी बहुत से कार्य आपने अपनी व्यक्तिगत खुदाई शक्ति से किए, जिनमें एक छुपी हुई अलौकिक शक्ति मिली हुई थी।" (हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर और ग़ज़वा-ए-जातुर्रिक़ा के परिप्रेक्ष्य में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पुण्यमयी जीवन-चर्या का वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 अप्रैल 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के बाद के कुछ घटनाओं का वर्णन किया गया है, जिनमें से एक तैमाअ के लोगों के साथ हुई संधि का विवरण भी आता है। तैमाअ, मदीना से शाम के रास्ते में स्थित एक प्रसिद्ध नगर था, जो मदीना से लगभग चार सौ किलोमीटर की दूरी पर स्थित था।

(शरह ज़रक़ानी, जिल्द 3, पृष्ठ 303, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बैरूत)

जब तैमाअ के यहूदियों को ख़ैबर, फ़दक और वादी-उल-क़ुरा की परिस्थितियों की जानकारी मिली, तो उन्होंने मुसलमानों से टकराव या युद्ध करने की बजाय स्वयं दूत भेजकर संधि की पेशकश की, जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वीकार कर लिया और तैमाअ के यहूदियों को उनके माल व सामान के साथ उसी क्षेत्र में निवास की अनुमति प्रदान कर दी।

(अल-बिदाया वन्निहाया, जिल्द 6, पृष्ठ 352, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बैरूत)
(ग़ज़वात व सराया, पृष्ठ 388, फरीदिया पब्लिशर्स, साहिवाल)

इसी अवसर पर फ़ज्र की नमाज़ देर से अदा किए जाने की घटना का भी उल्लेख मिलता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़वा-ए-ख़ैबर से लौटे तो पूरी रात सफ़र करते रहे। फिर जब आपको नींद आई तो मदीना के क़रीब आराम के लिए क़याम किया और हज़रत बिलाल से फ़रमाया कि आज रात नमाज़ के समय की निगरानी करना, अर्थात समय होते ही हमें जगा देना। फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने जितनी उनके लिए मुमकिन थी, नमाज़ पढ़ी। वह रातभर जागकर नफ़्ल नमाज़ें अदा करते रहे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके साथी सो गए। जब फ़ज्र का समय क़रीब आया तो हज़रत बिलाल ने सुबह की दिशा की ओर रुख़ करते हुए अपनी ऊँटनी से टेक लगाई, तो उन पर भी नींद का ग़ल्बा हो गया। इस तरह न तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जागे, न बिलाल, और न ही आपके किसी भी सहाबी में से कोई। यहाँ तक कि धूप उन पर पड़ने लगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सबसे पहले जागे। आप चिंतित हो गए और फ़रमाया, "ऐ बिलाल!" हज़रत बिलाल ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, उसी ज़ात ने मेरी रूह को रोके रखा, जिसने आपको रोके रखा।" फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहाँ से कूच करने का आदेश दिया। अतः सबने अपनी सवारियों को थोड़ी दूरी तक चलाया, फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने थोड़ी दूर जाकर क़याम किया, वहाँ वुज़ू किया और हज़रत बिलाल को आदेश दिया। उन्होंने नमाज़ की इक़ामत दी। फिर आपने उन्हें फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। आपने यह नमाज़ उसी स्थान पर नहीं पढ़ाई जहाँ आप सोए थे, बल्कि कुछ आगे जाकर खुले मैदान में जमाअत से अदा की। जब आप नमाज़ अदा कर चुके तो आपने फ़रमाया:

"जो व्यक्ति नमाज़ भूल जाए, तो जब उसे याद आए, उसी समय उसे अदा कर ले, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है कि नमाज़ को मेरे स्मरण के लिए क़ायम करो।"

(सहीह मुस्लिम, किताबुल-मसाजिद व मवाज़ेअिस-सलात, बाब क़ज़ा-ए-सलात ... 680)
(सुबुलुल-हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 149, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बैरूत)

यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि फ़ज्र की नमाज़ देर से अदा किए जाने की यह घटना कई ग़ज़वात के सफ़र में वर्णित हुई है। कुछ इसे तबूक की घटना बताते हैं, तो कुछ ने इसे हुदैबिया के अवसर पर वर्णित किया है।

(तारीख़ुल-ख़मीस, हिस्सा द्वितीय, पृष्ठ 437, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बैरूत(लुलुअुल-मकनून, जिल्द 3, पृष्ठ 477, लिन्नश्र वत्तवज़ीअ)

संभव है कि रावि से भूल हो गई हो और किसी अन्य युद्ध की घटना को इसके साथ जोड़ दिया हो, या यह भी संभव है कि यह घटना एक से अधिक बार घटी हो। बहरहाल, अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मदीना से वापसी के दौरान सहाबा ऊँची आवाज़ में तकबीरें कह रहे थे। इस बारे में हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि जब लोग मदीना की ओर लौट रहे थे तो एक घाटी पर चढ़े, और उन्होंने "अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला हा इल्लल्लाह" ऊँची आवाज़ में कहा। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें निर्देश दिया कि अपनी आवाज़ को धीमा रखो, तुम किसी बहरे या ग़ैरमौजूद को नहीं पुकार रहे। अल्लाह सुनने वाला भी है और हाज़िर भी है। अतः मध्यम स्वर में पुकारो। तुम उसे पुकार रहे हो जो अत्यंत सुनने वाला और बहुत क़रीब है और वह तुम्हारे साथ है। रावि कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी के पीछे था और मैं "ला हौल वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह" पढ़ रहा था। जब मैंने यह कहा तो आपने मेरी आवाज़ सुन ली और मुझे पुकारा, "ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस!" मैंने अर्ज़ किया: "मैं हाज़िर हूँ।" अबू मूसा अशअरी का असल नाम अब्दुल्लाह बिन कैस था। मैंने कहा: "मैं हाज़िर हूँ, या रसूलल्लाह!" आपने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें एक ऐसा कलिमा न बताऊँ जो जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है?" मैंने अर्ज़ किया: "ज़रूर बताइए, या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों।" आपने फ़रमाया: "ला हौल वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह।" फ़रमाया, यह वह कलिमा है कि इंसान में न तो बुराई से बचने की ताक़त है और न ही

भलाई करने की शक्ति, मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से ही यह संभव है।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़व-ए-ख़ैबर, हदीस 4205)

इस तरह आपने उनकी ओर ध्यान दिलाया और फ़रमाया कि जो कलिमा तुम पढ़ रहे थे, वह अत्यंत श्रेष्ठ है और यह अल्लाह से क़रीब करता है।

बहरहाल, मदीना की ओर यात्रा जारी रही और इस्लामी लश्कर, जो मदीना से स फ़ रपर मुहर्रम 7 हिजरी को निकला था, अल्लाह तआला के अनुग्रह और विजय के साथ सराबोर होकर सफ़र के अंतिम दिनों या रबीउल अव्वल की शुरुआत में मदीना वापस पहुँच गया।

'ख़ैबर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ठहरने की अवधि के बारे में मतभेद है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर में छह महीने तक क़ियाम किया। इस दौरान आप दो नमाज़ों को मिला कर पढ़ाया करते थे। जबकि कुछ रिवायतों में है कि आपने वहाँचालीस दिन तक ठहराव किया।

(सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 156, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बैरूत)

अधिकांश रिवायतें कम अवधि के ठहराव की ही पुष्टि करती हैं।

फ़तह-ए-ख़ैबर के मुसलमानों के पक्ष में कई प्रभाव प्रकट हुए। इसका एक मूल प्रभाव यह हुआ कि अरब में आस-पास के अनेक क़बीले, जो पहले इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध साज़िशों में लगे थे, वे भयभीत हो गए। कुछ ने सुलह का हाथ बढ़ाया, कुछ ने आज्ञाकारिता स्वीकार करना ही बेहतर समझा और इस तरह मुसलमानों की राजनीतिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

फ़तह-ए-ख़ैबर का एक और परिणाम यह हुआ कि अरब प्रायद्वीप में यहूदियों की शक्ति लगभग समाप्त हो गई। मदीना और ख़ैबर के यहूदी आर्थिक और सैनिक दृष्टि से अरब क्षेत्र में शक्ति के प्रतीक माने जाते थे और वे विशेष रूप से इस्लाम के विरोध और द्वेष में इस हद तक बढ़े हुए थे कि लगभग हर बड़े हमले में दुश्मनों को उनका समर्थन प्राप्त होता था।

तीसरा मूल प्रभाव यह हुआ कि मदीना के मुसलमानों की अपनी आर्थिक स्थिति में बहुत सकारात्मक परिवर्तन आया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और अन्य सहाबा बयान करते हैं कि यह फ़तह-ए--ख़ैबर ही थी, जिसके बाद हमें पेट भरकर खाना नसीब हुआ। इससे पहले तो हम पेट भर खाना भी नहीं खा सकते थे। ख़ैबर के बाद मुसलमानों के पास खाने-पीने का इतना सामान हो गया था कि उन्होंने अपने अंसारी भाइयों को वे सारी ज़मीने और हिस्से लौटा दिए, जो उन्होंने अपने मुहाजिर भाइयों को उस समय दिए थे जब वे मक्का से गरीबी और तंगहाली की हालत में हिजरत करके आए थे।

इस संदर्भ में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की एक बहुत रोचक रिवायत है, जिसमें यह सारा विवरण मिलता है। वे कहते हैं कि जब मुहाजिरीन मक्का से मदीना आए तो उनके पास कुछ न था, और मदीना के अंसार भूमि और संपत्ति के मालिक थे। अंसार ने इस प्रकार बँटवारा किया कि हर साल अपनी उपज का आधा हिस्सा मुहाजिरों को देते थे। हज़रत अनस की माँ ने एक फलदार खजूर का पेड़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश किया, तो आपने वह पेड़ उम्मे ऐमन को दे दिया। आपने स्वयं नहीं रखा, बल्कि उन्हें दे दिया। जब ख़ैबर से वापसी के बाद मुहाजिरों ने अंसार को उनके माल वापस कर दिए, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अनस की माँ को वह खजूर का पेड़ वापस लौटा दिया। हज़रत अनस कहते हैं, जब मैंने उम्मे ऐमन को बताया कि वह पेड़ अब हमें वापस मिल गया है, तो उन्होंने कहा कि मैं इसे हरगिज़ वापस नहीं करूँगी। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे दिया है। शायद वे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत के कारण आप द्वारा दी गई चीज़ वापस देना नहीं चाहती थीं। बहरहाल, जो भी कारण रहा हो, उन्होंने कहा कि अब मैं इसे वापस नहीं करूँगी। हज़रत अनस ने जाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सारी बात बताई। आपने उम्मे ऐमन से फ़रमाया: "उम्मे ऐमन! यह पेड़ दे दो, इसके बदले मैं तुम्हें इतने-इतने पेड़ दूँगा।" लेकिन वे तैयार न हुईं। वे कहती थीं, "आपने यह पहले दिया था, इसमें बड़ी बरकत है, मैं इसे नहीं देती।" यहाँ तक कि आपने इसके बदले दस गुना पेड़ दिए, तब जाकर उन्होंने वह पेड़ वापस किया।

(बुख़ारी, किताबुल-हिबा व फज़लुहा, बाब फ़ज़लुल-मनीहः, हदीस 2630)(मुस्लिम, किताबुल--जिहाद व स़ियर, बाब रद्दुल-मुहाजिरीन इलल-अंसार, हदीस 1771), (सुबुलुल-हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 151, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बैरूत)

इतिहास में एक ऐसे युद्ध का वर्णन मिलता है जिसे ग़ज़व-ए- ज़ातुर-रक़ा कहा जाता है। इस युद्ध को ग़ज़व-ए- मुहारिब, ग़ज़व-ए- बनू सअलबा, और ग़ज़व-ए- बनू अनमार भी कहा गया है क्योंकि यह जंग इन्हीं क़बीलों के विरुद्ध लड़ी गई थी।

ग़ज़व-ए- ज़ातुर-रक़ा को ग़ज़व-ए-अ'आजीब भी कहा जाता है क्योंकि इस युद्ध में कई विलक्षण और चमत्कारिक घटनाएँ घटीं। इस युद्ध का नाम 'ज़ातुर-रक़ा' इसलिए पड़ा क्योंकि उस क्षेत्र में एक वृक्ष या पर्वत था जिसे 'ज़ातुर-रक़ा' कहा जाता था।

(सीरतुल-हलबीया, जिल्द 2, पृष्ठ 366, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)

(किताबुल-मग़ाज़ी लिल-वाक़िदी, जिल्द 1, पृष्ठ 333, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)

एक अन्य कारण जो इस नामकरण का बताया गया है, वह हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु की एक रिवायत से स्पष्ट होता है। उन्होंने बताया कि सहाबा के पास बहुत कम सवारियाँ थीं। वे स्वयं भी छह व्यक्ति थे जिन्हें केवल एक सवारी उपलब्ध थी, और वे बारी-बारी उस पर सवार होते थे। पथरीली और कठोर भूमि पर चलने की वजह से उनके पाँव ज़ख़्मी हो गए थे। उन्होंने अपने पुराने और फटे हुए कपड़ों को पाँवों पर लपेट लिया था। स्वयं हज़रत अबू मूसा अशअरी के ना सिर्फ़ पाँव ज़ख़्मी हो गए थे बल्कि नाखून तक उखड़ गए थे। कपड़े की पट्टियों को अरबी में 'रक़ा' कहा जाता है, इसलिए इस युद्ध को 'ज़ातुर-रक़ा' अर्थात् 'पट्टियों वाला युद्ध'क ह ा गया।

(सहीह बुखारी, किताबुल-मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वह ज़ातुर-रक़ा, हदीस संख्या 4128)

ख़ैर, यह इसके विभिन्न नाम हैं। एक अन्य स्थान पर यह लिखा गया है कि वह भूमि जहाँ यह युद्ध हुआ, उसमें कई रंग थे। कुछ का मत है कि इस युद्ध में विभिन्न रंगों के घोड़े थे। कुछ ने लिखा है कि इस युद्ध में झंडों में पट्टियाँ थीं या पट्टियों को जोड़कर झंडे बनाए गए थे, इसलिए इसे ज़ातुर-रक़ा कहा गया। कुछ लोगों ने कहा कि इन तमाम कारणों के सम्मिलन के कारण इस युद्ध को ज़ातुर-रक़ा कहा गया।

(अस्सीरतुल-हलबीया, जिल्द 2, पृष्ठ 371, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)

(शरह ज़ुरक़ानी, जिल्द 2, पृष्ठ 525, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)

(शरह ज़ुरक़ानी अला मुवत्ता, जिल्द 1, पृष्ठ 542, दार इहया-उत्तुरास अल-अरबी, बैरूत)

इस युद्ध का एक नाम ग़ज़व-ए- सुलातुल-ख़ौफ़ भी है क्योंकि इसमें 'नमाज़े ख़ौफ़' अदा की गई थी।

(शरह ज़ुरक़ानी, जिल्द 2, पृष्ठ 521, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)

इस युद्ध की तिथि को लेकर विद्वानों में मतभेद है। इतिहास और सीरत की पुस्तकों के अनुसार यह युद्ध 4 या 5 हिजरी में हुआ था। इब्न हिशाम ने इब्न इस्हाक़ से रिवायत करते हुए इसे 4 हिजरी में ग़ज़व-ए- बनू नज़ीर के तीन महीने बाद का बताया है। जबकि इब्न सअद के अनुसार यह 5 हिजरी में हुआ।

(सीरत इब्न हिशाम, पृष्ठ 614, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)

(अत-तबक़ातुल-कुबरा, जिल्द 2, पृष्ठ 46-47, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)

जबकि ईमाम बुखारी ने एक सशक्त प्रमाण के आधार पर इस युद्ध को 7 हिजरी, अर्थात फ़त्हे ख़ैबर के बाद का युद्ध बताया है। वह प्रमाण यह है कि हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु इस युद्ध में शरीक थे, और वे इस्लाम में ग़ज़व-ए- ख़ैबर के बाद दाख़िल हुए थे, और वहीं आकर शरीक हुए थे। इस कारण 7 हिजरी की तारीख़ अधिक उपयुक्त प्रतीत होती है।

(सहीह बुखारी, किताबुल-मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वह ज़ातुर-रक़ा)

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने *सीरत ख़ातमन नबिय्यीन* के अंत में अपनी पुस्तक के शेष भाग के लिए जो शीर्षक दर्ज किए हैं उनमें ग़ज़व-ए- ज़ातुर-रक़ा को ग़ज़व-ए- ख़ैबर के बाद 7 हिजरी का युद्ध बताया है।

(माख़ूज़: सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 838)

इस युद्ध का एक कारण यह बताया गया है कि नज्द क्षेत्र में कुछ लोग समय-समय पर चोरी और डकैती की घटनाएँ करके मुसाफ़िरों को परेशान करते थे। ये लोग किसी एक स्थान पर नहीं रुकते थे, इसलिए उन्हें पकड़ना एक कठिन कार्य था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इनके विरुद्ध निर्णायक कार्यवाही करने का इरादा किया।

(माख़ूज़: सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 8, पृष्ठ 468, दारुस्सलाम)

इस युद्ध का एक अन्य कारण यह बताया गया है कि एक व्यक्ति व्यापारिक सामान लेकर मदीना आया। जब मदीना के लोगों ने उससे सामान ख़रीदा तो वह कहने लगा कि बनू अनमार और बनू सअलबा ने तुम्हारे विरुद्ध एक सेना इकट्ठी कर ली है जबकि तुम उनसे बेखबर हो। जब यह समाचार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिला तो आपने मदीना पर एक निगरान नियुक्त किया और यात्रा की तैयारी की। इब्न इस्हाक़ कहते हैं कि आपने हज़रत अबू ज़र ग़फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु को उप-प्रभारी बनाया। इब्न सअद और इब्न हिशाम के अनुसार आपने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान

रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना का कार्यवाहक नियुक्त किया।

(शरह ज़ुरक़ानी, जिल्द 2, पृष्ठ 527-528, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)
(सबलुल-हुदा वर-रशाद, जिल्द 5, पृष्ठ 175, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)

ख़ैर, इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यात्रा पर रवाना हुए।

इस युद्ध के घटनाक्रम के बारे में आगे उल्लेख मिलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना से 400 साथियों के साथ, या कुछ रिवायतों के अनुसार 700 या 800 साथियों के साथ रवाना हुए और वादिये शुक़रा पहुँचे। वादिये शुक़रा मदीना से दो दिन की दूरी पर स्थित है। वहाँ एक दिन क़ियाम किया और इधर-उधर टुकड़ियाँ भेजीं। रात तक सभी टुकड़ियाँ लौट आईं और उन्होंने बताया कि किसी को नहीं देखा और उन्होंने अपने पैरों के निशान भी मिटा दिए हैं। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके साथ आगे बढ़े यहाँ तक कि नख़ल पहुँचे। नख़ल मदीना से लगभग 62 मील की दूरी पर है। जब इन क़बीलों के ठिकानों तक पहुँचे तो वहाँ केवल स्त्रियाँ थीं, पुरुष नहीं मिले। स्त्रियों को बंदी बना लिया गया। कुछ इतिहासकारों ने स्त्रियों को बंदी बनाने का उल्लेख नहीं किया बल्कि यह कहा कि कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई और बद्दू लोग पर्वतों की चोटियों की ओर भाग गए थे और वहीं से वे पूरा दृश्य देख रहे थे।

(सबलुल-हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 175, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्यह, बैरूत)
(माख़ूज़: सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 8, पृष्ठ 474, दारुस्सलाम)

पुरुष तो भाग निकले, औरतें वहीं रह गईं। कुछ के अनुसार उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया, जबकि दूसरों के अनुसार यह अधिक संभावना है कि औरतों को गिरफ़्तार नहीं किया गया।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) नख़ल (जो एक स्थान है) से ज़ातु रिक़ाअ़ की ओर गए। वहाँ ग़तफ़ान की सेना से आमना-सामना हुआ, लेकिन कोई युद्ध नहीं हुआ। हाँ, आमने-सामने रहते हुए आपसी हमले का भय बना रहा और यह आशंका थी कि शत्रु किसी भी समय अचानक हमला कर सकता है।

चूँकि शत्रु की ओर से हमले की आशंका थी, इस दौरान जब नमाज़ का समय हुआ तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने नमाज़-ए-ख़ौफ़ अदा फ़रमाई।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा ज़ातु रिक़ाअ़, हदीस संख्या 4127)

अर्थात् ऐसी नमाज़ जिसमें कुछ लोग पहली रकअत में शरीक हुए, फिर हट गए और दूसरे लोग आकर दूसरी रकअत में शरीक हुए। उन्होंने भी आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ नमाज़ अदा की। इसका उल्लेख क़ुरआन-ए-करीम में भी सूरह अन्निसा में मिलता है कि भय की स्थिति में नमाज़ किस प्रकार अदा की जाए जिससे दुश्मन आक्रमण न कर सके।

इमाम बेहक़ी ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। मुशरिक़ीन ने मुसलमानों पर हमला करने का इरादा किया और कहने लगे, "इन्हें अभी छोड़ दो। अगली नमाज़ है जो इन्हें अपने बच्चों से भी ज़्यादा प्रिय है।" तब जिब्रील (अलैहिस्सलाम) नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास आए और दुश्मन की योजना की सूचना दी। उन्होंने पिछली नमाज़ छोड़ दी, लेकिन इरादा किया कि अगली नमाज़ पर हमला करेंगे। बहरहाल, यह रिवायत सिब्लुल हुदा में है कि दुश्मन की योजना की सूचना जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को दी, तो आपने असर के समय नमाज़-ए-ख़ौफ़ अदा की। इब्न सअद के अनुसार यह पहली नमाज़-ए-ख़ौफ़ थी जो आपने अदा की।

(सिब्लुल हुदा व अर्रशाद, जिल्द 5, पृष्ठ 175, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

शारह-ए-बुख़ारी, अर्थात् सहीह बुख़ारी की व्याख्या करने वाले आलिम बदरुद्दीन आइनी लिखते हैं कि नमाज़-ए-ख़ौफ़ के बारे में मतभेद है कि पहली बार कब यह आदेश नाज़िल हुआ। अधिकांश विद्वानों का मत है कि पहली बार यह नमाज़ ग़ज़वा ज़ातु रिक़ाअ़ में अदा की गई, लेकिन किस वर्ष यह आदेश नाज़िल हुआ, इस पर मतभेद है। किसी ने चार हिजरी, किसी ने पाँच, किसी ने छः और किसी ने सात हिजरी कहा है। एक मत के अनुसार नमाज़-ए-ख़ौफ़ ग़ज़वा बद्रुल मवअिद से पहले पहली बार अदा की गई, जो शव्वाल चार हिजरी में हुआ था।

(उम्दतुल क़ारी, जिल्द 6, पृष्ठ 376, दार इहया उत-तरास अल-अरबी, बैरूत)
(फत्हुल बारी, जिल्द 5, पृष्ठ 348–349, क़दीमी कुतुब ख़ाना)

इस अवसर पर एक व्यक्ति द्वारा सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) पर किए गए हमले की घटना का भी वर्णन मिलता है। हज़रत रसूल-ए-अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने एक रात एक स्थान पर क़याम फ़रमाया। उस समय तेज़ हवा चल रही थी। आपने सहाबा से फ़रमाया, "कौन है जो आज रात हमारी निगरानी करेगा?" इस पर हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और कहने लगे, "हम आपकी निगरानी करेंगे।" फिर दोनों घाटी की चोटी पर बैठ गए। हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि "रात के शुरुआती हिस्से में मैं पहरा दूँगा, तुम सो जाओ, और आख़िरी हिस्से में तुम पहरा देना, ताकि मैं सो जाऊँ।"

इसलिए, हज़रत अम्मार बिन यासिर सो गए और हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे। वर्णन आता है कि जब वह नमाज़ पढ़ रहे थे, रात के अंधेरे में शत्रु के एक व्यक्ति ने उन्हें देख लिया। उसने घाटी पर हज़रत अब्बाद बिन बिश्र का साया देखा कि वह नमाज़ में खड़े हैं। उसे यह लगा होगा कि यह कोई मुसलमान पहरेदार है। उसने तीर चलाया और वह तीर हज़रत अब्बाद बिन बिश्र के शरीर में लगा। आप नमाज़ में व्यस्त रहे, आपने तीर निकालकर फेंक दिया और नमाज़ नहीं तोड़ी। फिर उसने दूसरा तीर चलाया, वह भी लगा। आपने वह भी निकालकर फेंक दिया और नमाज़ जारी रखी। तीसरा तीर जब लगा तो आपके शरीर से अत्यधिक रक्त बहने लगा। आपने नमाज़ पूरी की और फिर हज़रत अम्मार बिन यासिर को जगाया। जब उस शत्रु व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को देखा तो वह भाग गया।

हज़रत अम्मार ने जब हज़रत अब्बाद बिन बिश्र को घायल अवस्था में देखा तो पूछा, "पहले क्यों नहीं जगाया?" आप ने कहा, "मैं नमाज़ में सूरह अल-कहफ़ की तिलावत कर रहा था और मेरा दिल नहीं चाहता था कि मैं उसकी तिलावत को बीच में तोड़ दूँ।"

(सीरतुल हलबिया, जिल्द 2, पृष्ठ 368–369, दारुल क़ुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)
(अस्सीरतुन नबविय्यह लि इब्न हिशाम, पृष्ठ 617–618, दारुल क़ुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

यह अल्लाह तआला के साथ एक अत्यंत विलक्षण संबंध, गहन निष्कलंकता और निःस्वार्थ भक्ति का प्रमाण था। इन लोगों में उपासना के लिए इतना तीव्र उत्साह था कि उन्होंने घावों की कोई परवाह नहीं की।

कुछ रिवायतों में यह भी उल्लेख मिलता है कि तीर हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० को लगा था।

(सब्लुल हुदा वल्-रिशाद, जिल्द 5, सफ़ा 180, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

बहरहाल, पंद्रह दिन की इस मुहिम के बाद, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना की ओर वापस रवाना हुए, और आपने जु'आल बिन सुराक़ा को मदीना भेजा ताकि वे मदीना वालों को मुसलमानों की सलामती की शुभ सूचना दें।

(अस्सीरतुल-हलबीया, जिल्द 2, सफ़ा 370, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिरार नामक स्थान पर ठहरे, जो मदीना से तीन मील की दूरी पर है, तो आपने ऊँट ज़बह करने का आदेश दिया और वहां पूरा दिन ठहराव किया। मुसलमान भी आपके साथ थे। जब शाम हुई, तो आप मदीना में दाख़िल हुए और हम भी आपके साथ थे।

(सब्लुल हुदा वल्-रिशाद, जिल्द 5, सफ़ा 180, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत) (अत-तबक़ात अल-कुबरा, जिल्द 2, सफ़ा 47, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

इस ग़ज़वे में कुछ चमत्कार भी प्रकट हुए, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि यह ग़ज़वा चमत्कारों वाला भी कहलाता है।

एक प्रसिद्ध घटना वह है जिसमें दुश्मन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तलवार तान दी।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० ने बयान किया कि वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नज्द की ओर एक ग़ज़वे में गए। दोपहर के समय लोग एक काँटों से भरी घाटी में पहुँचे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहां क़याम किया। उस समय दोपहर हो गई थी और लोग पेड़ों की छांव तलाश करते हुए इधर-उधर ठहर गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक कीकर के पेड़ के नीचे ठहरे और आपने अपनी तलवार लटका दी। हज़रत जाबिर रज़ि० कहते थे कि हम कुछ देर सो गए। फिर देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें बुला रहे हैं। हम आपके पास पहुँचे तो देखा कि आपके पास एक देहाती बैठा है। आपने फ़रमाया, "इसने मेरी तलवार पकड़ ली थी और मैं सोया हुआ था। जब मैं जागा तो यह उसकी नोक मेरी ओर किए हुए खड़ा था।" उसने मुझसे कहा, "तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?" मैंने कहा, "अल्लाह।" तो उसने तलवार म्यान में डाल दी और यह वही है जो अब यहाँ बैठा हुआ है। आपने इस हमलावर को कोई सज़ा नहीं दी।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा ज़ातुर-रिका', हदीस 4135)
(सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद वस्सीर, बाब तफ़रुक़ुन-नास अनिल इमाम..., हदीस 2913)

इस व्यक्ति का नाम ग़ौरस बिन हारिस बताया जाता है। कुछ ने उसका नाम ग़ौरक़ और कुछ ने ग़ुवैरेस भी बताया है।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा ज़ातुर-रिका', हदीस 4136)
(अस्सीरतुल-हलबीया, जिल्द 2, सफ़ा 369, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)
(शरह ज़रक़ानी, जिल्द 2, सफ़ा 532, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

इस व्यक्ति के बारे में यह भी उल्लेख मिलता है कि उसने इस्लाम क़बूल कर लिया था, और यह भी कि उसने इस्लाम क़बूल नहीं किया था। अलबत्ता, उसने यह वचन अवश्य दिया था कि वह भविष्य में कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरुद्ध नहीं आएगा।

(अस्सीरतुल-हलबीया, जिल्द 2, सफ़ा 369, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)
(शरह ज़रक़ानी, जिल्द 2, सफ़ा 530, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तलवार तानने की एक और घटना भी रिवायतों में मिलती है, जिसमें दुथूर नामक व्यक्ति द्वारा हमला करने का उल्लेख है। कुछ विद्वानों ने इन दोनों घटनाओं को एक ही घटना बताया है और कुछ के अनुसार ये दो भिन्न घटनाएं हैं।

(माख़ूज़: अस्सीरतुल-हलबीया, जिल्द 2, सफ़ा 369, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

दुथूर द्वारा हमला करने की घटना तीन हिजरी में ग़ज़वा ज़ी-अमर या ग़ज़वा बनी ग़तफ़ान से वापसी पर पेश आई। विवरण इस प्रकार है कि जब मुशरिक़ीन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक स्थान पर अकेले लेटे हुए देखा तो वे अपने सरदार दुथूर के पास गए। यह व्यक्ति उनमें सबसे अधिक बहादुर था। मुशरिक़ों ने कहा कि अब मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) बिल्कुल अकेले हैं, अब तुम्हारा ही काम है कि उनसे निपटो। एक रिवायत में है कि स्वयं दुथूर ने जब आपको अकेले लेटे हुए देखा तो कहा कि अगर मैं आज मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को क़त्ल न कर सका तो अल्लाह मुझे लाहक़ कर दे। वह तलवार खींचते हुए आपके सिरहाने तक पहुँच गया और कहने लगा, "अब तुम्हें मुझसे कौन बचा सकता है?" आपने पूर्ण शांति से फ़रमाया, "अल्लाह!" इस पर वह ज़मीन पर गिर पड़ा और तलवार उसके हाथ से गिर गई। आपने तुरंत उसकी तलवार उठा ली और फ़रमाया, "अब तुम्हें मुझसे कौन बचा सकता है?" दुथूर ने कहा, "कोई नहीं। अब मुझे कोई नहीं बचा सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।"

उसने कहा, "अल्लाह की क़सम! मैं भविष्य में कभी आपके विरुद्ध किसी जत्थे में शामिल नहीं होऊँगा।" आपने उसकी तलवार उसे लौटा दी। एक रिवायत में है कि दुथूर ने कहा, "अल्लाह की क़सम! आप मुझसे अधिक भलाई करने वाले हैं।" आपने जवाब दिया, "मैं इस बात का अधिक अधिकारी हूँ कि भलाई करूं।" इसके बाद वह अपनी क़ौम के पास लौट गया, लेकिन उसका हृदय पूरी तरह बदल गया था। वह अपनी क़ौम को इस्लाम की ओर बुलाने लगा। उसने लोगों को वह घटना सुनाई जो उसके साथ घटी। वह कहता है कि "जब मैं वहां खड़ा था, मैंने एक लम्बे कद का आदमी देखा जिसने मुझे धक्का दिया और मैं पीठ के बल गिर पड़ा। तब मुझे ज्ञात हुआ कि यह कोई इंसान नहीं बल्कि फ़रिश्ता है।" उसने उसी समय स्वीकार कर लिया कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। उसने कहा, "अल्लाह की क़सम! अब मैं उनके विरुद्ध कोई हरकत नहीं करूंगा।" इसके बाद वह अपनी क़ौम को इस्लाम की दावत देने लगा।

(माख़ूज़: अस्सीरतुल-हलबीया, जिल्द 2, सफ़ा 290, 369, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)
(सब्लुल हुदा वल्-रिशाद, जिल्द 4, सफ़ा 176, जिल्द 10, सफ़ा 257-258, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

वहीं एक पक्षी की घटना घटी। हज़रत जाबिर से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे। सहाबा में से एक व्यक्ति एक पक्षी का बच्चा पकड़ लाया, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसकी ओर देख रहे थे। उस पक्षी की मां या पिता, या दोनों में से कोई, उस व्यक्ति के सामने आकर गिर पड़ा जिसने उसके बच्चे को पकड़ा था। जब उस परिंदे का बच्चा पकड़ लिया गया, तो उसका बड़ा मां या बाप पक्षी आया और सहाबी के सामने गिर गया। लोग इस दृश्य को देखकर चकित हो गए कि यह क्या माजरा है कि एक पक्षी खुद आकर उनके सामने बैठ गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "क्या तुम इस पक्षी पर आश्चर्य करते हो कि यह अपनी जान अपने बच्चे की रक्षा के लिए प्रस्तुत कर रहा है? तुमने इसके बच्चे को पकड़ लिया है और इसने स्वयं को अपने बच्चे की मुक्ति के लिए सौंप दिया है।" फिर फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम! तुम्हारा पालनहार इस पक्षी से भी अधिक तुम पर रहम करता है।"

(उमताअ अल-असमाअ, जिल्द 5, पृष्ठ 275, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

जैसे यह पक्षी अपने बच्चे के लिए रहम करते हुए आया है, वैसे ही अल्लाह तआला तुम पर उससे भी अधिक रहम करता है।

एक पागल बच्चे के इलाज की घटना भी इन चमत्कारों में वर्णित है। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ग़ज़वा-ए-जात अर-रिकाअ में निकले। रास्ते में एक ग्रामीण महिला अपने बेटे के साथ आई और कहने लगी, "या रसूलुल्लाह! यह मेरा बेटा है और उस पर शैतान हावी हो चुका है।" अर्थात, उस पर पागलपन के दौरे पड़ते थे। आप ने उसका मुंह खोला और उसमें अपनी लार डाली और कहा, "ऐ अल्लाह के दुश्मन! दूर हो जा, मैं अल्लाह का रसूल हूं।" आपने यह दुआ तीन बार दोहराई। फिर फ़रमाया, "इस बच्चे को ले जाओ, अब उसे फिर कभी यह तकलीफ़ नहीं होगी।"

(उमताअ अल-असमाअ, जिल्द 5, पृष्ठ 260, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

तीन अंडों में बरकत की एक घटना का भी वर्णन है। ये शुतुरमुर्ग के अंडे थे। हज़रत जाबिर से रिवायत है कि ग़ज़वा-ए-जात अर-रिकाअ के दौरान उल्बा बिन ज़ैद हारिसी तीन अंडे लेकर आए, जो शुतुरमुर्ग के अंडों के स्थान पर पड़े थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ जाबिर! इन्हें ले लो और पका लो।" मैंने उन्हें पकाया और एक प्याले में लाकर रखा। फिर मैंने रोटी ढूंढी लेकिन वह नहीं मिली। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा ने बिना रोटी के अंडे खाने शुरू किए, यहां तक कि सब पेट भर गए, और प्याले में अंडे उसी तरह बचे रहे जैसे पहले थे। फिर बहुत से सहाबा ने भी उसमें से खाया और हम आगे रवाना हो गए।

(उमताअ अल-असमाअ, जिल्द 7, पृष्ठ 321, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

इसी अवसर पर एक ऊंट की घटना का भी वर्णन मिलता है जिसने अपने मालिक की शिकायत की थी। हज़रत जाबिर से रिवायत है कि हम ग़ज़वा-ए-जात अर--रिकाअ से लौट रहे थे, यहां तक कि हम हर्रा पहुंचे। एक ऊंट तेज़ी से आया और कराहने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो यह ऊंट क्या कह रहा है? यह अपने मालिक की शिकायत कर रहा है। इसका मालिक कई वर्षों से इससे काम ले रहा है और अब वह इसे ज़बह करने का इरादा रखता है। ऐ जाबिर! इसके मालिक के पास जाओ और उसे मेरे पास लाओ।" हज़रत जाबिर कहते हैं, "मैंने अर्ज़ किया, 'मैं तो नहीं जानता कि इसका मालिक कौन है।'" आप ने फ़रमाया, "यह ऊंट तुम्हें उसके मालिक तक ले जाएगा।" फिर ऊंट खुद उन्हें लेकर चल पड़ा और उसके मालिक तक पहुंच गया। हज़रत जाबिर कहते हैं, "मैं ऊंट को आपके पास लाया। आपने उसके मालिक से ऊंट के बारे में बात की।" फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "तुम यह ऊंट मुझे बेच दो।" उसने ऊंट आपको बेच दिया और आपने उसे जंगल में चरने के लिए छोड़ दिया।

(मुअज्जम अल-अवसत, जिल्द 9, पृष्ठ 54, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

इसी अवसर पर हज़रत जाबिर का ऊंट खोने की एक घटना का भी उल्लेख मिलता है। हज़रत जाबिर से रिवायत है कि एक अंधेरी रात में मेरा ऊंट गुम हो गया। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से गुज़रा, तो आपने पूछा, "क्या हुआ?" मैंने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह! मेरा ऊंट खो गया है।" आपने फ़रमाया, "तेरा ऊंट फलां जगह पर है, जा और उसे पकड़ ले।" मैं उस ओर गया, लेकिन ऊंट नहीं मिला। मैं लौट आया और वही बात दोबारा अर्ज़ की। आपने फिर वही जगह बताई, लेकिन मुझे ऊंट नहीं मिला। तीसरी बार आप ने शफ़क़त से फ़रमाया, "चलो, मेरे साथ चलो।" आप मेरे साथ चले, यहां तक कि हम ऊंट के पास पहुंचे और आपने वह ऊंट मुझे सौंप दिया।

(सुबुल अल-हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 177, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

इसी ग़ज़वे से संबंधित हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के सुस्त ऊंट का एक और क़िस्सा भी मिलता है। वे कहते हैं, "मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ था। मेरा ऊंट सुस्त पड़ गया था और थक चुका था। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए और पूछा, 'जाबिर?' मैंने अर्ज़ किया, 'जी।' पूछा, 'क्या हुआ?' मैंने कहा, 'मेरा ऊंट सुस्त हो गया है और थक चुका है, मैं पीछे रह गया हूं।'" आप ने अपनी सवारी से उतरकर फ़रमाया, "क्या तुम्हारे पास पानी है?" मैंने कहा, "जी हां।" मैंने एक प्याला पानी लाकर दिया। आपने उसमें फूंका और ऊंट के सिर, पीठ और कमर पर वह पानी छिड़क दिया। फिर फ़रमाया, "मुझे एक छड़ी दो।" मैंने अपनी लाठी दी या किसी पेड़ से छड़ी काटकर दी। आपने उससे ऊंट को कुछ हल्की चोटें दीं और खींचा। फिर फ़रमाया, "सवार हो जाओ।" मैं सवार हुआ। ऊंट इस क़दर तेज़ हो गया कि मैं उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आगे बढ़ने से रोकने लगा। मैं आप के साथ-साथ चलने लगा। आप मुझसे बातें करने लगे और पूछा, "क्या तुमने शादी कर ली है?" मैंने कहा, "जी हां।" पूछा, "कन्या से या विधवा

से?" मैंने कहा, "विधवा से।" आपने फ़रमाया, "क्यों, किसी कुंवारी से क्यों नहीं की? तुम जवान हो, तुम उससे खेलते, वह तुमसे खेलती।" मैंने अर्ज़ किया, "मेरी बहनें हैं। मेरे पिता जंगे उहुद में शहीद हो गए थे और मेरी सात बहनें हैं। मैंने सोचा कि ऐसी औरत से निकाह करूं जो उनकी देखभाल कर सके।" आप ने फ़रमाया, "अब जब तुम घर पहुंचो तो सूझ-बूझ और सावधानी से काम लेना।" फिर आपने पूछा, "क्या तुम अपना ऊंट बेचोगे?" मैंने कहा, "जी हां।" आपने एक औक़िया चांदी में वह ऊंट खरीद लिया। आप मुझसे पहले मदीना पहुंच गए और मैं अगली सुबह पहुंचा। जब हम मस्जिद पहुंचे, तो आपने मस्जिद के दरवाज़े पर मुझसे फ़रमाया, "अब आए हो?" मैंने कहा, "जी हां।" फ़रमाया, "ऊंट छोड़ दो और जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ो।" मैंने नमाज़ पढ़ी। फिर आपने हज़रत बिलाल से फ़रमाया, "इसे एक औक़िया चांदी तौल कर दे दो।" हज़रत बिलाल ने तौल कर मुझे दे दी और कुछ ज़्यादा भी दिया। जब मैं वापस चलने लगा तो आपने फ़रमाया, "जाबिर को बुलाओ।" मैं आया, तो आपने फ़रमाया, "अपना ऊंट भी ले जाओ और उसकी क़ीमत भी अपने पास रखो।" अर्थात आपने न तो ऊंट वापस लिया, न ही उसकी क़ीमत।

(सहीह बुखारी, किताब अल-बयूअ, बाब: शिरा अल-दवाब वल-हुमुर, हदीस नं. 2097)

इन्हीं चमत्कारों में थोड़े से पानी के अत्यधिक बढ़ जाने की एक घटना का वर्णन मिलता है। हज़रत जाबिर बयान करते हैं कि इसी ग़ज़वे के दौरान एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ऐ जाबिर! वुज़ू के लिए ऐलान कर दो।" मैंने कहा: "सुनो! वुज़ू करो! वुज़ू वुज़ू!" मैंने लोगों में यह ऐलान कर दिया। लेकिन मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि इस वक़्त हमारे काफ़िले में तो पानी का एक क़तरा भी मौजूद नहीं है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "फलाँ बिन फलाँ अंसारी की तरफ़ जाओ और देखो, क्या उसकी मश्क में कुछ है?" मैं उस ओर गया और देखा कि उसके मश्कीज़ों में से एक के मुंह में एक क़तरा पानी था, अर्थात बहुत ही कम पानी था। अगर मैं उसे उंडेल देता तो मश्क की सूखी जगह उसे सोख लेती। इतना थोड़ा था कि उसमें से निकलना भी मुश्किल था। फिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! उस मश्क के मुंह में मुझे सिर्फ़ एक क़तरा पानी मिला है, इतना थोड़ा कि अगर मैं उसे डालूं तो सूखी जगह उसे पी जाएगी।" आपने फ़रमाया: "उसे मेरे पास लाओ।" मैं उसे आपके पास लाया। आपने उसे अपने हाथ में लिया और कुछ कहना शुरू किया दुआ की मुझे नहीं मालूम कि आपने क्या पढ़ा। आप अपने हाथ से उसे दबाते जाते थे। फिर आपने मुझे वह मश्क दी और फ़रमाया: "ऐ जाबिर! एक बड़ा टब मंगवाओ।" मैंने टब लाकर आपके सामने रख दिया। आपने टब में इस तरह हाथ उठाया और इस तरह फैलाया, और अपनी उंगलियों को फैला दिया अर्थात टब में यूँ हाथ फैला दिए फिर अपने हाथों को टब की तह तक ले गए। पहले हाथों को पूरी तरह फैलाया फिर नीचे तक पहुंचाया, और फ़रमाया: "ऐ जाबिर! लो और मेरे हाथ पर उंडेलो और बिस्मिल्लाह पढ़ो। जितने भी पानी के क़तरे हैं, उन्हें मेरे हाथ पर डालते जाओ।" मैंने बिस्मिल्लाह पढ़कर पानी को आपके हाथ पर डाला, और देखा कि आपकी उंगलियों के बीच से पानी चश्मे की तरह उबलने लगा, यहाँ तक कि टब भर गया। आपने फ़रमाया: "ऐ जाबिर! हर उस शख़्स को बुलाओ जिसे पानी की ज़रूरत है।" वे कहते हैं कि लोग आए और उन्होंने पानी पिया यहाँ तक कि सब तृप्त हो गए। फिर मैंने पूछा: "क्या कोई और ज़रूरतमंद बाकी है?" तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने टब से अपना हाथ निकाला और टब अब भी भरा हुआ था।

(मुस्लिम, किताबुज़-ज़ुहद वर-रक़ाइक़, बाब हदीस-ए-जाबिर अत-तवील, हदीस 3013, दारुल किताबुल इल्मिय्या, बैरूत)

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऐसे ही चमत्कारों के विषय में हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इस दर्जे की लिक़ा (खुदा तआला से एकत्व) में कभी-कभी इंसान से ऐसे कार्य प्रकट होते हैं जो मानवीय शक्तियों से परे प्रतीत होते हैं और उनमें इलाही ताक़त का रंग पाया जाता है। जैसे हमारे सैयद व मौला, सैयदुल मुर्सलीन, हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग-ए-बदर में काफ़िरों पर कंकड़ की एक मुट्ठी फेंकी और वह मुट्ठी किसी दुआ के ज़रिए नहीं बल्कि अपनी रूहानी ताक़त से फेंकी गई, लेकिन उस मुट्ठी ने अल्लाही ताक़त दिखाई और दुश्मन की फ़ौज पर ऐसा ख़ारिक़ुल-आदत असर डाला कि कोई भी ऐसा न रहा जिसकी आँखों पर उसका असर न पहुँचा हो और वे सब अंधों की तरह हो गए। उनमें ऐसी अफ़रा-तफ़री और घबरा-हट पैदा हो गई कि जैसे बेहोशों की तरह भागने लगे। इसी चमत्कार की ओर अल्लाह जल्ल-शानहु इस आयत में इशारा फरमाता है:

"وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى"

(सूरा अल-अनफाल, आयत 18)

अर्थात, "जब तूने वह फेंका तो तूने नहीं फेंका बल्कि अल्लाह ने फेंका"अर्थात, परदे के पीछे इलाही ताक़त ने काम किया, यह मानवी ताक़त का कार्य न था।

इसी प्रकार हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दूसरा चमत्कार जो 'शक़्क़ुल--क़मर' (चाँद का दो टुकड़ों में होना) है, उसी इलाही ताक़त से प्रकट हुआ था, जिसमें कोई दुआ शामिल न थी क्योंकि वह केवल उंगली के इशारे से, जो इलाही ताक़त से भरपूर थी, प्रकट हुआ था। और इसी प्रकार बहुत से अन्य चमत्कार हैं जो केवल व्यक्तिगत सामर्थ्य के रूप में हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिखाए, जिनके साथ कोई दुआ नहीं थी। कई बार थोड़ा-सा पानी, जो केवल एक प्याले में था, उसमें आपने अपनी उंगलियाँ डालीं और इतना अधिक कर दिया कि पूरी फ़ौज और उनके ऊँट व घोड़े सबने उसे पिया और फिर भी पानी वैसा ही अपनी मात्रा पर मौजूद रहा। कई बार दो-चार रोटियों पर हाथ रखने से हज़ारों भूखों-प्यासों का पेट भर दिया। और कभी-कभी थोड़ा-सा दूध अपने होंठों की बरकत से एक पूरी जमाअत का पेट भरने के लिए काफी हो गया। और कभी-कभी खारे कुएं में अपने मुँह की लार डाल कर उसे अत्यंत मीठा बना दिया। और कभी-कभी गंभीर रूप से घायल लोगों पर अपना हाथ रखकर उन्हें अच्छा कर दिया, और कभी-कभी ऐसी आँखें जिनके डीलें युद्ध की चोट से बाहर निकल आए थे, अपने हाथ की बरकत से उन्हें ठीक कर दिया। इसी प्रकार और भी बहुत से कार्य आपने अपनी व्यक्तिगत शक्ति से किए, जिनमें एक छुपी हुई इलाही ताक़त सम्मिलित थी।"

(आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, ज़िल्द 5, पृष्ठ 65–66)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّآلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमअत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और ख़िताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमअत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

संस्थान

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा
सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

अमेरिका के दूरदराज़ इलाकों से आने वाले जमाअत के अज़ीज़ अहबाब ने अपने प्यारे ईमाम से मुलाक़ात के बाद अपने जज़्बाती तास्सुरात पेश किए।

हज़ूर-ए-अनवर के चेहरे पर नज़र पड़ते ही इंसान को एक सुकून और सरूर महसूस होता है। मुबारक चेहरा मैंने देखा तो उसमें सिर्फ़ और सिर्फ़ नूर ही नूर दिखाई दिया।

मैं नया अहमदी हूँ और पहली बार हज़ूर से मिला हूँ। इस वक़्त मेरा दिल इस क़दर जज़्बात से भरा हुआ है कि आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते। पहले मैं शिया बन गया था लेकिन वहाँ मुझे कोई सुकून नहीं मिला और दिल मुतमइन नहीं हुआ। फिर अहमदियों के बीच आना-जाना शुरू किया और दिल को इत्मीनान मिला। आज हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात करके मैं खुले तौर पर इस बात का इज़हार करता हूँ कि यही सही रास्ता है और यही हक़ है।

मैंने मलेशिया में जो मुश्किल और सख़्त हालात में पाँच साल गुज़ारे हैं, उन्हें वर्णन करना मेरे लिए मुमकिन नहीं, लेकिन आज हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात ने वो सारी तकलीफ़ें और मुश्किलात दूर कर दी हैं और मुझे दिली सुकून मिला है। आज मैं बेहद ख़ुश हूँ।

अमेरिका की यात्रा का इक्कीसवाँ दिन 16 अक्तूबर 2022, रविवार

Joppatown का दौरा

सामुदायिक केंद्र और मस्जिद का निरीक्षण, पौधारोपण कार्यक्रम

पारिवारिक भेंट-मुलाकातें

प्रातः छह बजकर पंद्रह मिनट पर परम आदरणीय हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद बैतुर्रहमान" में पधारकर प्रातःकालीन (फज्र) नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के पश्चात आप अपने निवासस्थान में लौट गए।

प्रातः समय आपने डाक की समीक्षा की और आवश्यक निर्देश प्रदान किए। आप विविध कार्यालयी कार्यों में व्यस्त रहे।

दस बजकर चालीस मिनट पर आप अपने निवासस्थान से बाहर पधारे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, निवासस्थान के प्रांगण में विभिन्न विभागों ने क्रमशः आपके साथ सामूहिक चित्र खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। इनमें सेवा विभाग, विशेष सुरक्षा, सामान्य सुरक्षा, रसोई सेवा, आतिथ्य टीम, एमटीए, संपत्ति विभाग, मेरीलैंड कार्यकारिणी समिति, कनाडा स्थित जमाअत अहमदिया के छात्रगण व अध्यापकगण, पंजीकरण विभाग, एमटीए मसरूर टेलीपोर्ट, प्रशासनिक टीम, निजी सहायक दल, भेंट समिति तथा अहमदी पुलिसकर्मियों के दल सम्मिलित थे।

इसके उपरांत पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार दस बजकर पचास मिनट पर Joppatown की ओर प्रस्थान हुआ। यह स्थान "मस्जिद बैतुर्रहमान" से लगभग पचास मील की दूरी पर स्थित है। "मजलिस अंसारुल्लाह अमेरिका" के तत्वावधान में इस क्षेत्र में एक नदी के किनारे आवासीय योजना के अंतर्गत 52 आवासों का निर्माण किया गया, जिनमें से 48 घर अहमदी सदस्यों के हैं। यहाँ एक सामुदायिक केंद्र और एक मस्जिद का भी निर्माण किया गया है। लगभग एक घंटे की यात्रा के पश्चात ग्यारह बजकर पचास मिनट पर आपका वहाँ आगमन हुआ। बड़ी संख्या में पुरुषों एवं महिलाओं ने अपने प्रिय मार्गदर्शक का अभिनंदन किया। आपने सबको "अस्सलामु अलैकुम" कहकर शुभकामनाएँ दीं।

अपने प्रिय नेता के स्वागत हेतु अमेरिका की विभिन्न राज्यों कैलिफ़ोर्निया, टेक्सस, ओहायो, इलिनॉय, मिशिगन, मैसाचुसेट्स, जॉर्जिया तथा फ़्लोरिडा से सदस्यगण एवं उनके परिवारगण वहाँ उपस्थित हुए थे। कुछ लोग लॉस एंजेलेस और शिकागो से रातभर की यात्रा करके पहुँचे थे।

Joppatown में आप इजतेमाई दुआ करवा रहे हैं।

सम्पूर्ण स्थल को आकर्षक बैनरों से सजाया गया था। कुछ सदस्यों ने अपने घरों को भी बाह्य रूप से सजाया हुआ था। इस निर्माण परियोजना का शुभारंभ वर्ष 2017 में हुआ था और इसका समापन वर्ष 2022 में हुआ।

सबसे पहले आपने सामुदायिक केंद्र और मस्जिद का अवलोकन किया। यह सामुदायिक केंद्र दो मंज़िलों पर आधारित है, जिसकी कुल क्षेत्रफल दस हज़ार वर्ग फ़ुट है। इसमें तीन सौ लोगों के एक साथ नमाज़ पढ़ने की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त एक बहुउद्देशीय सभागार, दो अतिथि कक्ष, एक सम्मेलन कक्ष, दो भोजन कक्ष, दो कार्यालय, एक सामूहिक रसोई, मीडिया कक्ष और दो खुले छज्जे (टेरेस) भी हैं। इसके साथ ही छह स्नानगृह और शौचालय भी बनाए गए हैं।

आपने अत्यंत विस्तार से इस केंद्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के पश्चात आपने बाहरी परिसर में एक पौधा रोपा और प्रार्थना करवाई। इस अवसर पर स्थानीय प्रबंधन समिति को आपके साथ चित्र खिंचवाने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। तत्पश्चात एक बालिका ने आपको पुष्प भेंट किए।

Joppatown में पौधारोपण समारोह आयोजित हुआ।

इस उपनिवेश में निर्मित आवासों में से, सामुदायिक केंद्र से सटे खंड में एक आवास "जमाअत अमेरिका" के अतिथि गृह के रूप में निर्धारित किया गया है। आपने इस घर का भी निरीक्षण किया। इसी खंड में एक अन्य आवास को केंद्रीय अतिथि गृह के रूप में निर्मित किया गया है, जिसका निरीक्षण आपने स्नेहपूर्वक किया।

इसके बाद आप "मजलिस अंसारुल्लाह अमेरिका" के अतिथि गृह में पधारे और उसका भी विस्तारपूर्वक निरीक्षण किया। यह भवन तीन मंज़िलों पर निर्मित है। प्रत्येक मंज़िल पर शयनकक्ष, पूर्ण स्नानगृह, बैठक कक्ष, भोजनकक्ष, एक रसोई, धुलाई कक्ष तथा एक पुस्तकालय की व्यवस्था है।

अनसारुल्लाह गेस्ट हाउस के निरीक्षण के पश्चात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) साथ स्थित एक अन्य घर में भी पधारे। तत्पश्चात आप स्नेहपूर्वक, श्रीमान डॉक्टर फहीम यूनुस क़ुरैशी, जो कि नॅशनल सचिव तरबियत और अनसार हाउसिंग परियोजना के अध्यक्ष हैं, उनके घर भी पधारे। आपने कृपापूर्वक डॉक्टर साहब की पत्नी और बच्चों से संवाद किया।

अब यहाँ से वापसी का कार्यक्रम था। इसी बीच डॉक्टर नुमूद-ए-सहर राणा साहिबा ने आपसे निवेदन किया कि मैं एकमात्र महिला हूँ जिसने यहाँ घर खरीदा है; कृपया आप हमारे घर भी पधारें। आपने अपनी करुणा से उनका निमंत्रण स्वीकार किया और उनके घर भी पधारे।

फिर, बारह बजकर चालीस मिनट पर वहाँ से "मस्जिद बैतुर्रहमान" के लिए वापसी हुई, और लगभग एक घंटे की यात्रा के पश्चात एक बजकर चालीस मिनट पर मस्जिद में आगमन हुआ।

दो बजकर दस मिनट पर आपने मस्जिद में पधारकर ज़ुहर और असर की नमाज़ें

एकत्रित रूप से पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद आप अपने निवास स्थान पर लौट आए।

"लजना इमाईल्लाह यू.एस.ए" को मस्जिद बैतुर्रहमान परिसर के बाहरी क्षेत्र में अपना एक सम्मेलन कक्ष (कॉनफ्रेंस हॉल) निर्मित करने का प्रस्ताव है। उन्होंने हज़ूर से निवेदन किया था कि निर्माण स्थल पर जाकर आप प्रार्थना करवा दें। अतः पाँच बजकर दस मिनट पर आपने अपने निवास से बाहर आकर उस स्थल पर प्रार्थना करवाई। इस अवसर पर लजना की राष्ट्रीय अध्यक्ष अपनी कार्यकारिणी के सदस्यों के साथ वहाँ उपस्थित थीं और उन्होंने इस दुआ में भाग लिया।

इसके बाद निर्धारित कार्यक्रमानुसार पाँच बजकर पंद्रह मिनट पर आप बैठक कक्ष में पधारे जहाँ "लजना इमाईल्लाह यू.एस.ए" की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आपसे बैठक सम्पन्न हुई। (बैठक का विस्तृत विवरण पृथक रूप से उपलब्ध है।)

बैठक के उपरांत आप अपने कार्यालय में पधारे जहाँ परिवारों से व्यक्तिगत मुलाक़ातों का सत्र आरंभ हुआ। आज की इस सभा में 47 परिवारों के कुल 186 सदस्यों ने अपने प्रिय नेता से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त 236 लोगों ने विभिन्न समूहों के रूप में आपसे भेंट की।

आज मिलने वाले ये सदस्य अमेरिका की 34 विभिन्न जमाअतों से आए थे। आज भी कुछ सदस्यों और परिवारों ने अत्यंत लम्बी यात्राएँ तय करके मुलाक़ात की खातिर हाज़िरी दी।

Buffalo से आए हुए सदस्य 374 मील, Chicago से आए 690 मील तथा Miami से आए 1078 मील की यात्रा करके पहुँचे थे। इसके अतिरिक्त Dallas से आए सदस्य 1342 मील और Bay Point से आए सदस्य 2786 मील की दूरी से यात्रा करके वहाँ पहुँचे। इन सभी लोगों ने आपके साथ चित्र खिंचवाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया। आपने विशेष स्नेहवश शिक्षारत छात्रों और छात्राओं को लेखन हेतु कलम भेंट किए और छोटी आयु के बच्चों व बालिकाओं को चॉकलेट प्रदान की।

जमाअत के सदस्यों की भावनाएँ

आज भी मिलने वालों में बड़ी संख्या ऐसे सदस्यों और परिवारों की थी जो अपने जीवन में पहली बार अपने प्रिय आका से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त कर रहे थे।

मिसाल के तौर पर, इमरान नसीर साहिब, जो कि Connecticut से आए थे, मुलाक़ात के पश्चात भावविभोर होकर कहने लगे, "ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हम किसी स्वप्न से होकर लौटे हैं। मैं जो बातें कहना चाहता था, नहीं कह सका। लेकिन हज़ूर-ए-अनवर ने हमसे स्नेहपूर्वक बात की।"

एक अन्य मित्र, आतिफ़ रहमान साहिब, जो Buffalo से आए थे, कहने लगे, "मुलाक़ात के जो थोड़े पल हमें मिले, उन्होंने हमें अत्यंत मानसिक शांति दी। हम अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानते हैं कि हमें अपने आका से मिलने का अवसर मिला। इस समय हमारा हृदय भावनाओं से भरा हुआ है, मानो हम स्वर्ग से हो कर लौटे हों।"

North Virginia से आए एक और मित्र, शब्बीर अहमद साहिब, बात करते हुए रोने लगे। वे कुछ बोल ही नहीं पा रहे थे। कठिनाई से कहने लगे, "हमने कभी सोचा भी नहीं था, हमारे वहम-ओ-गुमान में भी नहीं था कि हम अपने प्रिय आका से मुलाक़ात कर पाएँगे। लेकिन आज अल्लाह ने यह अवसर प्रदान किया। हमने हज़ूर से तबर्रुक भी प्राप्त किया। आपने मेरी अंगूठी को हज़रत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) की अंगूठी से छुआ। आज मेरी संतानें भी इस बरकत से लाभान्वित हुईं मेरा बेटा और मेरा पोता दोनों साथ थे।"

North Virginia से आए एक और सदस्य, लुक़्मान अहमद साहिब की आँखों से भी आँसू बह रहे थे। कहने लगे, "मुझे नहीं लगता था कि मैं कभी हज़ूर-ए-अनवर से मिल सकूँगा। लेकिन अल्लाह ने मार्ग प्रशस्त किया और मैं यहाँ पहुँच सका। आज की यह मुलाक़ात शब्दों में वर्णन नहीं की जा सकती। मेरे हृदय को पूर्ण शांति और संतोष मिला।"

Maryland से आए एक और मित्र, फ़ज़्ल उमर मलिक साहिब ने कहा, "यह अत्यंत ही पुण्यकारी भेंट थी। हज़ूर ने हमारे लिए प्रार्थना की। मैंने अपने आका को देखा। मेरा दिल अत्यंत कोमल हो गया। मैंने तो केवल नेअमतें ही नेअमतें अनुभव कीं। अत्यंत शुभ फल लेकर लौट रहा हूँ।"

North Virginia से आईं एक महिला सदस्य, आयशा अंसारी साहिबा ने अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए कहा, "आज मेरी जीवन की पहली भेंट थी। मेरे पास इसे व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं। मेरा शरीर काँप रहा था। मुझे लगा जैसे आज खुदा तआला ने मुझे सब कुछ दे दिया। यह मेरे जीवन के सबसे मूल्यवान क्षण थे।"

ज़ियाउल अनवर साहिब, जो North Virginia से आए थे, कहने लगे, "मैंने हज़ूर की सेवा में अर्ज़ किया कि मैं मोसी हूँ। मेरे लिए दुआ करें कि मैं वसीयत की शर्तों को पूर्ण कर सकूँ और क्षमा प्राप्त कर सकूँ। इस पर हज़ूर ने फरमाया: 'अल्लाह तआला फ़ज़्ल करे।'"

मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम रात साढ़े आठ बजे तक चलता रहा। तत्पश्चात आपने मस्जिद बैतुर्रहमान में पधारकर मगरिब और ईशा की नमाज़ें संयुक्त रूप से अदा कराईं। नमाज़ के पश्चात आप अपने निवास स्थान पर लौट आए।

अमेरिका की ऐतिहासिक और सफल यात्रा के बाईसवें दिन, दिनांक 17 अक्टूबर 2022, सोमवार को, हज़रत खलीफ़ा-ए-पांचवें (खुदा तआला की सहायता व संरक्षण उनके साथ हो) ने प्रातः ठीक 6 बजकर 15 मिनट पर 'बैतुर्रहमान मस्जिद' में पहुँचकर भोर की प्रार्थना का नेतृत्व किया। प्रार्थना के उपरांत वे अपने निवास स्थान लौट गए।

प्रातः आपने कार्यालय से संबंधित डाक का अवलोकन किया, आवश्यक निर्देश प्रदान किए तथा विभिन्न प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त रहे।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, दोपहर 12 बजकर 45 मिनट पर आप अपने निवास से बाहर पधारे। निवास स्थान के समीप खुले मैदान में वरिष्ठ और युवा संगठनों द्वारा तीरंदाज़ी और हवाई राइफल शूटिंग की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं। आप ने स्नेहपूर्वक वहाँ पहुँचकर इन प्रतियोगिताओं का अवलोकन किया। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर रहे अंतिम चरण के प्रतियोगी आपकी उपस्थिति में प्रदर्शन कर रहे थे। युवाओं तथा वरिष्ठों की ओर से दो-दो प्रतियोगियों ने भाग लिया।

दक्षिण वर्जीनिया के मुईज़ गुल ने तीरंदाज़ी प्रतियोगिता में विजय प्राप्त की, जबकि उत्तर वर्जीनिया के सुलेमान चौधरी ने हवाई राइफल शूटिंग में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इसके पश्चात दोपहर एक बजे आपने पुनः बैतुर्रहमान मस्जिद में पहुँचकर दोपहर तथा अपराह्न की संयुक्त प्रार्थनाएँ संपन्न कराईं। तत्पश्चात आप अपने निवास स्थान लौट गए।

अब आपके प्रस्थान का समय समीप आ चुका था। मस्जिद के बाहर के प्रांगण में अमेरिका की विभिन्न शाखाओं से आए हुए बड़ी संख्या में पुरुष, महिलाएँ और बच्चे उपस्थित थे, जो आपको विदा कहने हेतु वहाँ एकत्रित हुए थे। इनकी संख्या दो हज़ार नौ सौ से अधिक थी।

निर्धारित समयानुसार, दोपहर ढाई बजे आपने निवास से बाहर आकर लोगों को दर्शन दिए। आपके शुभ मुखमंडल के दर्शन होते ही सभी उपस्थित जनों ने अत्यंत जोश और भावनात्मक उल्लास के साथ नारों का उच्चारण किया। एक ओर नारों की गूंज थी, तो दूसरी ओर बालिकाएँ समूहबद्ध होकर विदाई गीत प्रस्तुत कर रही थीं। महिलाएँ हाथ हिलाकर आपको विदा कह रही थीं। चारों ओर से "आपको प्रणाम, हमारे प्रिय मार्गदर्शक!" की स्वरध्वनि गूंज रही थी। आप अपने प्रिय अनुयायियों के पास से गुजरते हुए हाथ उठाकर अत्यंत स्नेहपूर्वक उनका अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। कुछ समय तक आप लोगों के मध्य ठहरे रहे। "हम आपके साथ हैं, हे मसरूर!" की भावविह्वल पुकारें भी गूंज रही थीं। यह विदाई दृश्य अत्यंत करुणामय था। स्त्रियों, पुरुषों, यहाँ तक कि बालकों और बालिकाओं की आँखें भी अश्रुपूरित थीं। हर हृदय उदास और भावुक था।

इसके पश्चात आपने इजतेमाई दुआ करवाई और हाथ उठाकर सभी को "प्रणाम" कहा तथा वाहन में विराजमान हुए। जब आपकी गाड़ी मस्जिद परिसर से रवाना हुई, तो उपस्थित जनों ने हाथ उठाकर "प्रणाम", "खुदा तआला की शरण में रहें", और "अलविदा" जैसे भावों के साथ आपको विदा किया।

करीब 3 बजकर 50 मिनट पर आप वाशिंगटन के डलेस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुँचे।

आपके आगमन से पहले ही सामान की जांच तथा यात्रा अनुमति-पत्र की प्रक्रिया पूर्ण की जा चुकी थी। एक विशेष प्रबंध के अंतर्गत आपको विशिष्ट अतिथि कक्ष में ले जाया गया। संध्या 5 बजकर 15 मिनट पर आपने विमान में प्रवेश किया। आपको विदा कहने हेतु साहबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद (संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रमुख), उनकी धर्मपत्नी, डॉ. नसीम रहमतुल्लाह (उप प्रमुख), मलिक वसीम अहमद (उप प्रमुख), मुख़्तार अहमद मल्ही (महासचिव), और ख़ुर्रम फवाद (कार्यक्रम समन्वयक) आपके साथ अंत तक उपस्थित रहे। इन सभी ने बोर्डिंग क्षेत्र तक जाकर आपको विदा कहा। आपकी धर्मपत्नी को भी उनके परिजनों ने स्नेहपूर्वक विदाई दी। इसके पश्चात आप विमान में प्रवेश कर गए।

यूनाइटेड एयरलाइंस की उड़ान संख्या UA918 शाम 6 बजकर 15 मिनट पर वाशिंगटन के डलेस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे की ओर रवाना हुई। लगभग सात घंटे की निरंतर उड़ान के उपरांत, ब्रिटिश स्थानीय समयानुसार मंगलवार, 18 अक्टूबर की प्रातः 6 बजकर 15 मिनट पर विमान लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे पर उतरा। विमान के द्वार पर एक प्रोटोकॉल अधिकारी ने आपका स्वागत किया। तत्पश्चात आपको विशेष कक्ष में ले जाया गया, जहाँ यूनाइटेड किंगडम के प्रमुख रफ़ीक़ अहमद हयात, उपाध्यक्ष मिर्ज़ा वक़ास अहमद, युवा संगठन के अध्यक्ष अब्दुल कुद्दूस आरिफ़ तथा सुरक्षा प्रभारी मेजर महमूद अहमद ने आपका अभिनंदन किया। वहीं एक आव्रजन अधिकारी ने पासपोर्ट की जाँच की।

करीब 7 बजे वहाँ से "इस्लामाबाद" (टिलफोर्ड, सरे) के लिए प्रस्थान हुआ, और

शेष पृष्ठ 20 पर

ख़ुत्बः जुमअः

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर के अवसर पर हब्शा (इथोपिया) से लौटने वाले प्रवासियों के आगमन पर फ़रमाया: "मैं नहीं जानता कि इनमें से किस बात पर अधिक प्रसन्न हूँ ख़ैबर की विजय पर या जाफ़र के आने पर।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक हब्शी ग़ुलाम के शहीद होने के बारे में फ़रमाया: "अल्लाह ने तेरे चेहरे को ख़ूबसूरत बना दिया, तेरी बदबू को ख़ुशबू में बदल दिया और तेरे माल में वृद्धि कर दी।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके लिए दुआ की और फ़रमाया कि "अल्लाह तआला ने उसे जन्नत में पहुँचा दिया है।"

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की धार्मिक सहिष्णुता और दूसरों के धार्मिक जज़्बात व एहसासात का सम्मान सर्वोच्च स्तर पर था। आपने यहूदियों की तौरात को सुरक्षित रूप में लौटाने का हुक्म दिया। आजकल की तरह यह नहीं हुआ कि मुसलमानों से दुश्मनी में क़ुरआन शरीफ़ को जला दिया जाए। बल्कि आपने यह मिसाल पेश की कि "उनके जो धर्मग्रंथ हैं, उन्हें सुरक्षित रखो और उन्हें लौटा दो।"

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर और ग़ज़वा-ए-वादियुल-क़ुरा के सन्दर्भ में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुबारक सीरत का वर्णन।

मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन शाहिद साहब सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान, श्रीमान अब्दुर्रशीद याह्या साहब पूर्व सदर, क़ज़ा बोर्ड कनाडा, श्रीमान मिर्ज़ा इम्तियाज़ अहमद साहब अमीर, ज़िला हैदराबाद (सिंध), श्रीमान अल-हाज मुहम्मद बिलअरबी साहब अल्जीरिया, तथा श्रीमान मुहम्मद अशरफ़ साहब कोटरी, ज़िला हैदराबाद की मृत्यु पर उनका नेक वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 04 अप्रैल 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

(इससे पहले का भाग अंक 18 मे है) शेष ..

बहुत ही मेहनती और विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। हमेशा यह प्रयास रहता था कि अपने सारे काम स्वयं करें और किसी पर बोझ न बनें। अपने निजी कार्य भी खुद ही किया करते थे। वह एक ऐसे विद्वान थे जो अपने ज्ञान पर स्वयं अमल करते थे। वक़्फ़ का जो संकल्प उन्होंने किया था, उसे पूरी सच्चाई और निष्ठा से निभाया। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद करे। उनकी पहली शादी इक़बाल बेग़म साहिबा से हुई थी जिनसे उनके दो बेटे और दो बेटियाँ हैं। उनके निधन के बाद उन्होंने दूसरी शादी की। उनके बच्चे, बेटियाँ, दामाद आदि सभी को दीन की सेवा की तौफ़ीक मिल रही है। अल्लाह तआला उनकी आने वाली नस्लों में भी सेवा-ए-दीन का जज़्बा क़ायम रखे।

दूसरा उल्लेख अब्दुर्रशीद याह्या साहिब का है जो कि कनाडा के सदर क़ज़ा बोर्ड थे। हाल ही में उन्होंने रिटायरमेंट ली थी। पचहत्तर वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ है। "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।" मरहूम भी मोसी थे। उनके पिता ने 1945 के क़रीब मौलाना सना उल्लाह अमृतसरी, मौलाना अबुल आला मौदूदी और मौलाना मोहम्मद अली एम.ए साहिब के साथ लंबी बातचीत, शोध और बहस-मुबाहिसे के बाद तथा पूरी तरह से हक़ जताने के बाद हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु त'आला अन्हु के मुबारक हाथों पर बैअत की थी। पूरे गाँव में वह अकेले अहमदी थे और धार्मिक मतभेदों के बावजूद गाँव वाले उनका बहुत सम्मान करते थे।

"तालीमुल इस्लाम कॉलेज" रब्वा से बी.ए. की डिग्री लेने के बाद उन्होंने जामिआ में दाख़िला लिया। फिर अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी और 1975 में सेवाओं के मैदान में आए। पाकिस्तान में पहले स्थानीय नियुक्तियाँ होती रहीं, फिर अमेरिका, कनाडा और ग्वाटेमाला में सेवा की तौफ़ीक मिली। दक्षिण अफ्रीका में बतौर राष्ट्रीय अध्यक्ष और मिशनरी इंचार्ज सेवा की तौफ़ीक मिली। ग्वाटेमाला और दक्षिण कोरिया में बतौर मुबल्लिग इंचार्ज और राष्ट्रीय अध्यक्ष सेवा का अवसर मिला। जामिआ अहमदिया कनाडा में उन्हें वाइस प्रिंसिपल के रूप में सेवा का मौक़ा मिला। वहाँ वे क्लासें भी लिया करते थे और तफ़्सीर-उल-क़ुरआन व 'इल्म-उल-कलाम पढ़ाया करते थे।

2017 में उन्हें कनाडा के सदर क़ज़ा बोर्ड के तौर पर नियुक्त किया गया और 2023 तक इस सेवा में रहे। जब वे ग्वाटेमाला में थे, वहाँ बुद्ध धर्म के आध्यात्मिक नेता दलाई लामा से भी उनकी बातचीत हुई और उन्होंने उन्हें इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाया। उनके पीछे तीन बेटे और एक बेटी हैं।

उनके बेटे क़ासिम रशीद साहिब कहते हैं कि वे जमाअत का अत्यंत सम्मान करते थे। जमाअत के ख़िलाफ़ कोई बात उनके लिए बिल्कुल असहनीय होती थी और वे जमाअत के निज़ाम पर होने वाले किसी भी ऐतराज़ का पूरी तरह से उत्तर देते। ऐतराज़ करने वाले की बात ध्यान से सुनते और फिर उसे उसकी ग़लती का एहसास दिलाते। उनका कहना है कि उन्होंने अपने पिता को हमेशा बाअदब जमाअत के साथ और विशेष रूप से तहज्जुद की पाबंदी करते देखा। चाहे बीमारी कितनी ही गंभीर क्यों न हो, वह जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने की कोशिश करते। आख़िरी बीमारी में भी यही हालत रही। उन्होंने हमेशा बीमारी को भी "अल्हम्दु लिल्लाह" कहते हुए स्वीकार किया। अंतिम वर्ष में वह काफ़ी बीमार हो गए थे लेकिन उन्होंने बड़े सब्र और शुक्र के साथ बीमारी को सहा और अपनी औलाद को बार-बार इस बात की ताकीद की कि ख़िलाफ़त से जुड़कर रहो।

वह अपने बेटे को हौसला दिया करते थे कि सोशल मीडिया पर ख़िलाफ़त के बारे में गर्व और बेख़ौफ़ी से लिखो क्योंकि यही मुस्लिम दुनिया और सम्पूर्ण मानवता की एकता का सच्चा हल है। उन्होंने भी वक़्फ़ को पूर्ण निष्ठा से निभाया। 1980 और 1990 के दशक में जब MTA वग़ैरह बाक़ायदा शुरू नहीं हुआ था, उस समय हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबेह रहमहुल्लाह के और हज़रत ख़लीफ़ा सालिस रहमहुल्लाह के खुत्बात को कॉपी कर के लोगों तक पहुँचाते थे। खुद कॉपी करते, उसकी डुप्लीकेट बनाते और फिर 24 से 48 घंटे के अंदर लोगों तक पहुँचा देते ताकि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का पैग़ाम सब तक पहुँचे और एक संबंध क़ायम रहे।

उनके भांजे मंसूर नूरुद्दीन साहिब जो रब्वा में मुर्ब्बी हैं, कहते हैं कि लगभग तिरेपन वर्षों तक उन्होंने वक़्फ़ की ज़िम्मेदारियों को अत्यंत ख़ुलूस और वफ़ादारी के साथ निभाया। वे कहते हैं कि मैंने उन्हें हमेशा वक़्फ़ के साथ बेनियाज़ी और जमाअत के निज़ाम के योग्य प्रतिनिधि के रूप में देखा, और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के पूर्ण आज्ञाकारी और प्रेम करने वाले के रूप में पाया। जामिआ में जब उनका नियुक्ति हुआ तो वह अपने विषय के लेक्चर की इस तरह से तैयारी करते कि जामिआ के छात्र सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी, सर्वश्रेष्ठ मुर्ब्बी और सर्वश्रेष्ठ मुबल्लिग़ बनकर निकलें। वे कहा करते थे कि "ख़लीफ़ा-ए-वक़्त ने मुझ पर छात्रों को पढ़ाने का भरोसा किया है, मुझे उस

भरोसे पर खरा उतरना है।"

मिर्ज़ा मोहम्मद अफ़ज़ल साहिब भी एक मुर्ब्बी थे, उन्होंने कहा कि उनका मिज़ाज बहुत सलीक़ापसंद और खुशगवार था। बहुत मेहनती और संजीदा वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी थे। सेवा-ए-सिलसिला को हर काम पर प्राथमिकता देते और सहयोग करने में कभी हिचकिचाते नहीं थे। अब्दुनूर आबिद साहिब ने कहा कि वे हमें तफ़्सीर-उल-क़ुरआन पढ़ाया करते थे। बहुत मोहब्बत और मेहनत से पढ़ाते और विस्तृत नोट्स लिखवाते थे, जिन्हें बहुत ध्यान से चेक भी करते थे। उन्होंने कहा कि आज भी उनके पढ़ाए हुए नोट्स हमारे काम आ रहे हैं। अल्लाह तआला उन पर मग़फ़िरत और रहमत का सलूक फ़रमाए।

अगला उल्लेख मिर्ज़ा इम्तियाज़ अहमद साहिब, अमीर ज़िला हैदराबाद (सिंध), इब्न मिर्ज़ा नज़ीर अहमद साहिब का है। हाल ही में उनका भी निधन हो गया। "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।" उनके परिवार में अहमदियत उनके दादा श्रीमान इल्मुद्दीन साहिब मरहूम के द्वारा आई जिन्होंने ख़िलाफ़त-ए-ऊला के ज़माने में पहले पत्र के माध्यम से और फिर जलसा सालाना क़ादियान के अवसर पर क़ादियान जाकर हस्तलिखित बैअत की सौभाग्य प्राप्त की थी।

मरहूम मिर्ज़ा इम्तियाज़ अहमद साहिब ने बी.ए. की शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपना निजी व्यवसाय शुरू किया और मेडिकल स्टोर खोला। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से उन्हें युवावस्था से लेकर जीवन की अंतिम घड़ी तक सेवा-ए-दीन की तौफ़ीक़ प्राप्त हुई। नियमित तहज्जुद पढ़ने वाले, ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की बिना किसी को बताए ग़ायबाना बहुत सहायता करने वाले इंसान थे यह बात उनके बेटे ने लिखी है।

उनके बेटे ने कहा कि हमारे वालिद साहिब के जनाज़े पर 'सिंजर चांग' से आए एक शिया दोस्त ने कहा कि मुझे नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा नहीं आता था और न ही रोज़े का कुछ ज्ञान था। इस्लामी तालीम और आदाब का मुझे कुछ पता नहीं था। तो नमाज़ और रोज़ा रखना मुझे इम्तियाज़ साहिब ने सिखाया, लेकिन आज हम ही यहाँ "ग़ैर-मुस्लिम" कहलाते हैं। उन्होंने कहा कि इसके बाद मैंने कभी नमाज़ नहीं छोड़ी और नियमित इबादत करता हूँ।

मिर्ज़ा मशहूद साहिब, जो एक मुर्ब्बी हैं, कहते हैं कि वह नेक फ़ित्रत, ईमानदार और उच्च नैतिकता के व्यक्ति थे और क्षेत्र के बहुत से सिंधी वडेरों के साथ उनके अच्छे संबंध थे। ग़ैर जमाअत के लोग भी अपनी अमानतें उनके पास रखवाया करते थे।

शहबाज़ साहिब, जो हैदराबाद ज़िले के पूर्व क़ायद हैं, कहते हैं कि वह ईमानदार, विनम्र, दूसरों का दर्द समझने वाले, ख़िलाफ़त से अत्यधिक प्रेम करने वाले और जमाअत के निज़ाम के लिए ग़ैरत रखने वाले व्यक्ति थे। यदि मरीज़ों के पास पैसे न होते, तो अपनी तरफ़ से दवाइयाँ मुफ़्त दे दिया करते थे। उनकी वफ़ात पर एक बड़ी संख्या में लोग ताज़ियत के लिए आए और सबका यही कहना था कि उनके जाने से हमारे क्षेत्र में एक बड़ा ख़ला पैदा हो गया है। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहमत का सलूक फ़रमाए।

अगला उल्लेख आदरणीय अल-हाज मोहम्मद बिल्-अराबी साहिब, निवासी अल्जीरिया का है, जिनका हाल ही में 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। “हम सब अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं।” उनका संबंध अल्जीरिया से था, किंतु इन दिनों वे फ्रांस में निवास कर रहे थे। 2015 में वे अपनी पत्नी के साथ यूके के वार्षिक सम्मलेन में मेहमान के रूप में सम्मिलित हुए थे और अल्लाह की विशेष कृपा से यहाँ आकर बैअत कर वापस लौटे।

सम्मेलन के प्रथम ही दिन उन्हें इस स्थान से एक गहरा आत्मीय संबंध प्रतीत हुआ, मानो वे पहले भी यहाँ आ चुके हों। उन्होंने बताया कि वे वर्षों से इस स्थान और इसके वातावरण के स्वप्न देखा करते थे। बैअत से एक दिन पूर्व भी उन्होंने ऐसा ही एक स्वप्न देखा था, जिसके प्रभाव में उन्होंने अपनी पत्नी सहित हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम के समुदाय में सम्मिलित होने का निर्णय लिया।

उस सम्मेलन में फ्रांस से उनके परिवार के कुल पैंतीस सदस्य उपस्थित थे, जिनमें से आठ लोगों ने उनके अनुसरण में सम्मेलन के दौरान ही बैअत कर ली। वे अपने बच्चों को धार्मिक मूल्यों की शिक्षा देने के लिए सदैव प्रयासरत रहते थे। उन्होंने अपने बच्चों को नमाज़ और कुरआन की शिक्षा देने हेतु धार्मिक विद्यालयों में प्रवेश दिलाया। उनके बच्चों को उनसे पहले ही अहमदियत को स्वीकार करने का सौभाग्य प्राप्त हो गया था। उनके बच्चे कहते हैं कि हमारे पिता ने हमें जो धार्मिक शिक्षाएँ दीं, उन्होंने हमारे हृदयों में खुदा तआला-प्रेम और आज्ञापालन का ऐसा भाव उत्पन्न किया जिससे हमारे लिए अहमदियत को स्वीकार करना सहज हो गया।

उनके परिवार में अहमदियत की शुरुआत उनके ज्येष्ठ पुत्र मोहम्मद बिल्-अराबी के माध्यम से हुई। एक दिन वे टेलीविजन चैनलों को व्यवस्थित कर रहे थे कि सहसा एम.टी.ए. चैनल दिखाई दिया, जहाँ उन्होंने हज़रत खलीफा राबे (चतुर्थ खलीफा) को देखा। इसके बाद उन्होंने विशेष रूप से हज़रत ईसा की मृत्यु के विषय पर गंभीरता से अध्ययन किया और अंततः 1995 में यूके के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर बैअत कर अहमदियत को स्वीकार कर लिया। उनके पिता ने लगभग बीस वर्ष बाद बैअत की, जबकि पुत्र पहले ही सम्मिलित हो चुके थे।

स्वर्गीय मोहम्मद साहिब प्रायः फ्रांस और अल्जीरिया के बीच यात्रा करते रहते थे। 2017 में अल्जीरिया में उनके घर पर पुलिस ने छापा मारा और उनके बच्चों को अहमदी होने के आरोप में हिरासत में ले लिया। इस अवसर पर उन्होंने अत्यंत साहस का परिचय दिया। जब पुलिस स्टेशन में उनसे पूछा गया कि क्या वे अहमदी हैं, तो उन्होंने बिना किसी संकोच के स्पष्ट रूप से कहा, “हाँ, समस्त प्रशंसा उस खुदा तआला के लिए है, मैं अहमदी हूँ।” उन्होंने यह भी कहा कि वे देश के कानूनों का सम्मान करते हैं, किंतु जिस दिन प्रशासन अनुमति देगा, उनका घर जमाअत अहमदिया का पहला केंद्र बनेगा। उन्होंने इस बात को अत्यंत निर्भीकता से कहा।

स्वर्गीय मोहम्मद साहिब को ख़िलाफ़त और तत्कालीन खलीफा से अत्यंत गहरा और प्रेमपूर्ण संबंध था। उनमें जमाअती सेवा के प्रति विशेष उत्साह था। कई वर्षों तक उनका घर फ्रांस में अनेक बैठकों और शुक्रवार की नमाज़ का केंद्र बना रहा।

उन्होंने अपने पीछे 81 वर्षीय पत्नी तथा आठ संतानों को छोड़ा है, जिनमें से सात खुदा तआला की कृपा से अहमदी हैं। उनके एक पुत्र फ्रांस में प्रचार विभाग के सचिव तथा अरबी डेस्क के प्रभारी हैं। उनकी बेटियाँ भी धर्म-सेवा में संलग्न हैं।

अल्जीरिया के एक अहमदी लिखते हैं कि अल-हाज मोहम्मद साहिब अत्यंत सज्जन, उदार एवं धर्मपरायण व्यक्ति थे। वे सदा खुदा तआला का इस बात के लिए धन्यवाद करते रहते कि उन्हें युग के ईमाम को पहचानने और उन पर विश्वास करने का अवसर प्राप्त हुआ। वे कहा करते थे कि जब से मैंने इमाम-ए-ज़माना की बैअत की है, मेरा विश्वास और अधिक सुदृढ़ एवं गहन हो गया है।

अल्जीरिया के अंसारुल्लाह के अध्यक्ष लिखते हैं कि उन्होंने हर जमाअती कार्यक्रम या बैठक के लिए अपने घर को प्रस्तुत किया, यहाँ तक कि अपने घर के एक भाग को नमाज़ स्थल के रूप में समर्पित कर दिया था। एक अन्य अहमदी कहते हैं कि अल्लाह के साथ उनका संबंध अत्यंत गहन था और वे धार्मिक आचरण की एक जीवंत मिसाल थे। वे हर परिस्थिति में समय पर नमाज़ अदा करने के लिए व्याकुल रहते थे। यहाँ तक कि गंभीर बीमारी की अवस्था में भी वे प्रातःकाल की विशेष प्रार्थना (तहज्जुद) में संलग्न रहते और अत्यंत विनम्रता व अटूट विश्वास के साथ खुदा तआला से प्रार्थना करते।

खुदा तआला स्वर्गीय मोहम्मद साहिब को क्षमा प्रदान करे, उन पर अपनी अनुकंपा बरसाए और उन्हें स्वर्ग में उच्च स्थान प्रदान करे।

अगला उल्लेख आदरणीय मोहम्मद अशरफ़ साहिब, कोटरी ज़िला हैदराबाद का है। हाल ही में वे 70 वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हो गए। “हम सब खुदा के हैं और उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं।” वे मुरब्बी (धार्मिक शिक्षक) नवीद अशरफ़ साहिब (कांगो) के पिताश्री थे। नवीद साहिब कार्यक्षेत्र में होने के कारण अपने पिता के अंतिम संस्कार में सम्मिलित नहीं हो सके।

उनके परिवार में अहमदियत हज़रत नूरुल्लाही साहिब (रजि.) के माध्यम से आई, जो हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे तथा उनके दादा थे।

मुरब्बी नवीद अशरफ़ साहिब लिखते हैं कि पिता को धर्म से प्रेम अपने पूर्वजों से विरासत में प्राप्त हुआ था। वे अत्यंत भले, शांत स्वभाव के, प्रार्थना में लीन रहने वाले तथा ख़िलाफ़त से अत्यंत स्नेह रखने वाले व्यक्ति थे। उन्हें विभिन्न प्रकार की जमाअती सेवाओं का अवसर प्राप्त होता रहा। वे बड़े परिश्रमी और अतिथि-सत्कार में निपुण थे। वर्ष 1992 में उन्हें कुछ समय के लिए “राहे-मौला” (धर्म के मार्ग में बंदी) बनने का सम्मान भी प्राप्त हुआ।

वे पवित्र कुरआन की तिलावत तथा हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम और खलीफ़ाओं के वचनों को बड़े प्रेम से पढ़ते थे, जिससे श्रोताओं के हृदयों में वह गूंज उठता था। उनकी आवाज़ अत्यंत मधुर थी। उनके देहांत पर एक कट्टर विरोधी भी शोक व्यक्त करने आया और उसने कहा कि इतने नेक और उत्कृष्ट व्यक्ति मैंने पहले कभी नहीं देखे।

वर्ष 1992 में कोटरी में जब जमाअत के विरुद्ध तीव्र विरोध हुआ, उस समय उन्होंने साहस और ईमानदारी का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। मृत्यु से एक दिन पूर्व तक वे जमाअती आमिला (प्रशासनिक समिति) की बैठक में उपस्थित रहे, अपना आर्थिक अंशदान दिया, और मृत्यु वाले दिन भी प्रातःकाल की विशेष प्रार्थना की, पवित्र कुरआन का पाठ किया, फज्र की नमाज़ अदा की और फिर लगभग पौने

आठ बजे प्रभु के चरणों में चले गए।

शहबाज़ अहमद साहिब, (पूर्व नेता, हैदराबाद) कहते हैं कि वे अत्यंत सेवा-निष्ठ, जमाअत के लिए समर्पित, साहसी और प्रचार कार्य के लिए उत्साहित व्यक्ति थे। वे कहते हैं कि मैंने उनके भीतर यह देखा कि वे धर्म की सेवा उसी प्रकार करते जैसे कोई व्यक्ति अपने दैनिक कार्य करता है।

एक अवसर पर जब हम एक कंपनी में कार्यरत थे, और जमाअत के विरुद्ध भारी विरोध हुआ, तब कुछ मौलवियों ने प्रबंधन पर दबाव डाला कि इन्हें नौकरी से हटा दिया जाए। कंपनी के महाप्रबंधक ने मौलवियों से कहा कि अहमदी या "क़ादियानी" कहने की बात छोड़ दीजिए, केवल यह बता दीजिए कि इनमें क्या कमी है जिसकी वजह से मैं इन्हें हटा सकूँ। मौलवियों के पास कोई उत्तर नहीं था और उनकी नौकरी सुरक्षित रही।

स्वर्गीय मोहम्मद अशरफ़ साहिब के पीछे उनकी पत्नी, तीन पुत्रियाँ और चार पुत्र हैं, तथा उनकी संतानों की आगे भी पीढ़ियाँ हैं। खुदा तआला उन्हें क्षमा प्रदान करे, उन पर अपनी कृपा बरसाए और उन्हें स्वर्ग में श्रेष्ठ स्थान प्रदान करे।

(स्रोत: अल-फ़ज़्ल इंटरनैशनल, 25 अप्रैल 2025, पृष्ठ 2 से 7)

★ ★ ★

शेष पृष्ठ 24 पर

सकता है कि इसी कारण मैं इस माली परेशानी में फंसा हूँ। इस पर मैंने तीन महीने बाद चार हजार नायरा चंदा अदा किया। खुदा का करना ऐसा हुआ कि उसी माह विनीत ने एक क़तआ (टुकड़ा) ज़मीन बेची, जिस पर मेरे मालिक करीम ने आठ लाख नायरा का मुनाफ़ा अता किया। उस वक़्त मेरे इमाँ को जहां और भी ताकत मिली, वहीं यह बात भी समझ में आई कि खुदा अपने वादों का सच्चा है। अगर उसकी राह में क़ुर्बानी करोगे तो वह जरूर कई गुना बढ़ाकर तुम्हें वापस लौटाएगा। अब उन्होंने कोगी (Kogi) राज्य के क़ैपिटल लोकोजा (Lokoja) में जमाअत को मस्जिद और मिशन हाउस के लिए एक बहुत बड़ा प्लॉट भी शहर के इलाके में ले कर दिया है।

हमारे गिनी कनाकरी के मुबल्लिग लिखते हैं कि एक अहमदी नौजवान मोहम्मद साको ने बताया कि मेरी शादी की तारीख़ तय हो गई थी और घर में इतनी रकम नहीं थी कि शादी की तैयारियां की जा सकें और जहां से रकम आने की उम्मीद थी, वहां से लगातार मायूसी हो रही थी। इस दौरान चंदे का मांग हुआ तो जो रकम घर में मौजूद थी, वह चंदे में अदा कर दी। इस पर उसकी मंगेतर ने बहुत शोर मचाया कि यह तुमने क्या किया? जो मामूली रकम थी, वह चंदे में दे दी। तो यह नौजवान कहते हैं कि मैंने उसे कहा कि अल्लाह के फ़ज़्ल से मैं एक ईमानदार शख़्स हूँ और खुदा पर यकीन रखने वाला शख़्स हूँ, इस लिए घबराओ मत, अल्लाह तआला खुद हमारी मदद फरमाएगा और अल्लाह की राह में दिया हुआ कभी ज़ाया नहीं होता। कहते हैं कि अगले ही दिन जब वह काम पर गए तो उन्हें वह सारी रकम मिल गई, जो एक लंबे अरसे से रुकी हुई थी। और जब शाम को घर ला कर उन्होंने दी, तो लोग हैरान रह गए कि किस तरह इतनी जल्दी अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया।

अतः आज हम दुनिया पर नज़र डालें तो इस्लाम की तालीम के मुताबिक़, अगर कोई जमाअत असल में खर्च कर रही है तो वह जमाअत अहमदी है, जो अल्लाह तआला की रजा के हुसूल के लिए खर्च करती है या क़ुर्बानियाँ देती है। बाकी दुनिया अगर कुछ कर भी रही है तो बहुत मामूली। और हर एक खेल कूद और नफ़्स की ख़्वाहिशात की तम्मीम में लगा हुआ है। बहुत सारी बिद'आत और रस्में मुसलमानों में रज़ा पा चुकी हैं। जो दुनियावी रस्में हैं, शादी ब्याह हैं, उन पर दिखावे के लिए बेइंतिहा खर्च किया जाता है।

(खुतबा जुमा 6 नवम्बर 2009)

अतः आज अहमदी इस हाथ पर जमा होने की वजह से ख़ैर उम्मत कहलाते हैं और यह उनकी जिम्मेदारी है कि नेक बातों का हुक्म दें और बुरी बातों से रोकें और यह सब कुछ तब तक नहीं हो सकता जब तक अपने आमल भी इसके मुताबिक न हों और जब तक ख़ुदा तआला पर मजबूत ईमान न हो और फिर इन नेकियों को फैलाने और बुराईयों से रोकने के लिए मिन्हीअल-जमाअत क़ुर्बानी का जज़्बा न हो। बड़े मक़ासिद हासिल करने के लिए बहरहाल क़ुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं। अपनी इबादतों के मियार क़ायम करने पड़ते हैं और अपने माल का तज़्क़िया करना होता है। सूरा-हज में अल्लाह तआला ने इस मजमून को इस तरह बयान किया है। फ़रमाया: "अल्लाह के वे लोग जो अगर हम उन्हें ज़मीन में ताक़त दें, तो वह नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात अदा करते हैं, नेक बातों का हुक्म देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और हर बात का अंजाम अल्लाह ही के हाथ में है।" (हज: 42)

मुअज़्ज़ नाज़रीन, अल्लाह की राह में खर्च करने के बेशुमार वाक़ियात दुआ-ए--अहमदीयत में रोनमा हो रहे हैं। हज़ूर-अनवर अ़एदह अल्लाह तआला बिन-नस्र-ए--अज़ीज़ के खुतबात में हमें इस तरह के मुमतन्ना वाक़ियात सुनने को मिलते हैं, जहाँ अहमदी दोस्तों के कारोबार में बेइंतिहा बरकत हो गई, उनकी ईमानी हालत बदल गई, वह मोहब्बत-ए-इलाही में बढ़ गए, वह नुक़सान से बच गए। गरज़ बेशुमार वाक़ियात हैं, जिनको वक़्त की राएत से पेश किया गया। एक ईमाँ अफ़रोज़ वाक़िया गिनी कनाकरी का है। चूंकि गिनी कनाकरी के मुबल्लिग लिखते हैं कि एक नौजवान मुहतरम मोहम्मद मारीगा साहब (Muhammad Marega) लंबा अरसा तबलिग़ के बाद खुदा के फ़ज़्ल से जमाअत में दाख़िल हुए। पेशे के लिहाज़ से ये एक आर्किटेक्ट इंजीनियर हैं। जब उन्होंने बीअत की तो ये कंस्ट्रक्शन कंपनी में नौकरी करते थे और मामूली तनख्वाह लेते थे। बीअत के बाद जब उन्हें जमाअत के माली निज़ाम का तआरुफ़ कराया गया तो उन्होंने पूछा कि इन चंदों में सबसे अहम चंदा कौन सा है। उन्हें बताया गया कि चंदा वसीयत, चंदा आम और चंदा जलसा सालाना हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) के ज़माने के जारी किए गए हैं और वसीयत की अहमियत के बारे में उन्हें बताया। फ़ौरन कहने लगे कि मैं आज से ही चंदा वसीयत अदा करूंगा। मुबल्लिग ने उन्हें बताया कि वसीयत का एक निज़ाम है, उसमें दाखिल होने के बाद आप चंदा वसीयत अदा कर सकते हैं। तो कहने लगे, मैं इस निज़ाम में भी दाखिल होता हूँ। फिर उन्होंने रिसाला अल-वसीयत पढ़ा और उसके बाद वसीयत की और बड़ी ईमांदारी से अपनी तनख्वाह का दसवां हिस्सा चंदा देना शुरू किया और वसीयत की मंज़ूरी में कुछ वक्त लगता है तो उस वक्त के आने तक लगातार बाक़ायदा वसीयत देते रहे और फिर कुछ अरसे बाद इसके अलावा दूसरी माली तहरीकात में भी उन्होंने हिस्सा लिया। फिर कुछ अरसे बाद कंपनी छोड़ दी और अपना कारोबार शुरू किया और अब अल्लाह के फ़ज़्ल से अपनी कंपनी के मालिक हैं और पूरे मुल्क में अपनी ईमांदारी की वजह से मशहूर हैं और उसकी वजह से उनका कारोबार भी बड़ा चमका है और सबके सामने बैठ कर बरमला इज़्हार करते हैं कि ये नमतें आखिर पर अपनी मआरिजात को हज़रत आक़दस मसीह मौऊद (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) के माली क़ुर्बानी के बारे में एक रूह पर इक़तिबास पर खत्म करता हूँ, आप फ़रमाते हैं कि:

"मेरे प्यारे दोस्तों! मैं आप को यकीन दिलाता हूँ कि मुझे ख़ुदा तआला ने सच्चा जोश आप लोगों की हमदर्दी के लिए बख़्शा है। और एक सच्ची मअरीफ़त आप साहिबों की ज़ियादत ईमान और इर्शाद के लिए मुझे अता की गई है, इस मअरीफ़त की आपको और आपकी ज़रीयत को निहायत ज़रूरत है। सो मैं इस लिए मस्तइद खड़ा हूँ कि आप लोग अपने अमवाले तैबिया से अपने दीनी मिहमतों के लिए मदद दें और हर एक शख़्स जहाँ तक ख़ुदा तआला ने उसे विसअत और ताक़त दी है इस राह में दरिघ ना करें और अल्लाह और रसूल से अपने अमवाले को मुक़द्दम ना समझें और फिर मैं जहाँ तक मेरे इमकान में है तालीफ़ात के ज़रिए इन उलूम और बरकतों को एशिया और यूरोप के मुल्कों में फैलाऊं जो ख़ुदा तआला की पाक रूह ने मुझे दी हैं।"

(अज़ाला-ए-उहाम, रूहानी खज़ाइन, भाग 3, पृष्ठ 516)

وآخر دعوانا عن الحمد للہ رب العالمین

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्अत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्अत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

"खलीफा-ए-वक्त का मकाम और मर्तबा, ख़िलाफ़त की इताअत और इससे वाबस्तगी की अहमियत और बरकतें"

(मुज़फ़्फ़र अहमद नासिर साहब, नाज़िम इस्लाह और इर्शाद मर्कज़िया, क़ादियान)

भाषण जलसा सालाना क़ादियान 2024

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُوْنَنِي لَا يُشْرِكُوْنَ بِي شَيْئًا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَأُولٰئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ۔ (النور:٥٦)

ख़िलाफ़त का जिसको नहीं एहतेराम
ज़माने में होगा ना वो शाद-काम
ना क्यों जान-ओ-दिल से हूँ इस पर फ़िदा
इसके है दम से हमारी बका

(अर्थात : जिस व्यक्ति में ख़िलाफ़त के प्रति सम्मान नहीं होता, वह संसार में कभी भी सफल और सुखी नहीं हो सकता। फिर मैं क्यों न अपने प्राणों और हृदय से उस पर न्योछावर हो जाऊँ, क्योंकि उसी के अस्तित्व से हमारी स्थायी सुरक्षा और जीवन जुड़ा हुआ है।)

माननीय अध्यक्ष महोदय और सम्मानित श्रोतागण,

जैसा कि आप सब सुन चुके हैं, इस भाषण का विषय है "समय के खलीफ़ा का स्थान और दर्जा, ख़िलाफ़त की आज्ञाकारिता तथा उससे जुड़ाव का महत्व और उसकी शुभफलित अनुभूतियाँ।"

अभी मैंने 'सूरा नूर' की उस आयत का पाठ किया है जिसे 'आयत-ए-इस्तिख़लाफ़' कहा जाता है, उसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है:

"जो लोग तुम में से सच्ची श्रद्धा रखते हैं और सद्कर्म करते हैं, खुदा तआला ने उनसे दृढ़ वचन दिया है कि वह उन्हें अवश्य ही पृथ्वी पर प्रतिनिधित्व प्रदान करेगा, जैसे वह उनसे पूर्व के लोगों को प्रतिनिधित्व प्रदान कर चुका है; और उनके उस धर्म को, जिसे उसने उनके लिए प्रिय ठहराया है, सुदृढ़ता प्रदान करेगा, तथा उनके भय की स्थिति को निश्चित ही शांति और सुरक्षा में परिवर्तित कर देगा। वे मेरी ही उपासना करेंगे और मेरे साथ किसी को भी साझी नहीं बनाएँगे। और जो इसके पश्चात भी कृतघ्नता दिखाए, वही लोग वास्तव में अवज्ञाकारी हैं।"

(अनुवाद: हज़रत खलीफ़ा तुल मसीह चतुर्थ, रहमहुल्लाह सूरा नूर, आयत 56)

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने कहा:

"खलीफ़ा उसे कहा जाता है जो उत्तराधिकारी हो। और किसी रसूल का सच्चा उत्तराधिकारी वही हो सकता है, जो उसकी छाया रूप में उसके गुणों को अपने भीतर धारण करता हो... खलीफ़ा वास्तव में पैग़म्बर की प्रतिछाया होता है। और चूँकि किसी भी मनुष्य का जीवन शाश्वत नहीं होता, अतः खुदा तआला ने यह व्यवस्था की कि रसूलों के अस्तित्व जो समस्त सृष्टि के प्राणियों से श्रेष्ठ एवं उच्च हैं को छाया रूप में अनंतकाल तक बनाए रखा जाए। इसी उद्देश्य से खुदा तआला ने 'ख़िलाफ़त' की स्थापना की, ताकि संसार का कोई भी काल या युग 'नबूवत' की दिव्य बरकतों से वंचित न रहे।"

(स्रोत: शहादतुल क़ुरआन, रूहानी ख़ज़ाइन, खंड 6, पृष्ठ 353)

हज़रत पहले खलीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा:

"खलीफ़ा चाहे किसी भी प्रकार का हो, उसका चयन केवल और केवल खुदा तआला का कार्य है। आदम को खुदा तआला ने चुना, दाऊद को भी उसी ने नियुक्त किया, और हम सबको उसी ने उत्पन्न किया। इसी प्रकार, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के उत्तराधिकारियों के लिए भी वही निर्देश देता है।"

: وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا(النور:٥٦)

जो लोग ईमान वालों में से खलीफ़ा बनाए जाते हैं, उन्हें भी केवल और केवल खुदा तआला ही नियुक्त करता है। उन्हें भी भय और कठिनाइयाँ सामने आती हैं, किंतु खुदा तआला उन्हें दृढ़ता और स्थायित्व प्रदान करता है। जब समाज में किसी प्रकार की अशांति फैलती है, तो वही परमेश्वर उनके लिए शांति के मार्ग खोलता है। जो व्यक्ति खलीफ़ा का इन्कार करता है, उसकी पहचान यह होती है कि उसके अच्छे कर्मों में निरंतर गिरावट आती जाती है और वह धीरे-धीरे धार्मिक कर्तव्यों से विमुख हो जाता है।

(हक़ायक़ुल फ़ुर्क़ान, खंड 1, पृष्ठ 125–126)

खलीफ़ा-ए-वक़्त का स्थान

हज़रत सय्यद मोहम्मद इस्माईल साहिब शहीद (रहमहुल्लाह) खलीफ़ा-ए-वक़्त के स्थान और दर्जे के विषय में लिखते हैं:

"इस पद पर आसीन पवित्र व्यक्ति समस्त संसारों के पालनहार की छाया, नबियों और पैग़म्बरों का पड़ोसी, धर्म की उन्नति की पूँजी और खुदा तआला के प्रिय फ़रिश्तों की कोटि में स्थान रखने वाला होता है। वह संभावना के क्षेत्र का केंद्र, हर दृष्टिकोण से गर्व का स्रोत, और ज्ञानीजनों का अधिपति होता है। उसका हृदय खुदा तआला की महिमा का सिंहासन, उसका वक्षस्थल दया और कृपा का भंडार तथा खुदा तआला की महानता की झलक होता है। उसकी लोकप्रियता, परमात्मा की सुंदरता का प्रतिबिंब होती है... उसकी कठोरता, खुदाई फ़ैसले की तलवार और उसकी कृपा, उपहारों का स्रोत होती है। उससे विमुख होना, भाग्य से विमुख होना है, और उसका विरोध करना, स्वयं सर्वशक्तिमान प्रभु का विरोध करना है... जो कोई भी अपनी प्रतिभा की तुलना उसके साथ करे, वह वस्तुतः खुदा तआला से स्पर्धा करने जैसा है। सच्चे गुणवान लोगों की यही पहचान है कि वे उसकी सेवा में तत्पर रहते हैं, उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, उसके समकक्ष होने का दावा नहीं करते, और उसे पैग़म्बर का उत्तराधिकारी मानते हैं।"

(मंसब-ए-इमामत, पृष्ठ 121–122)

सम्मानित श्रोतागण!

खलीफ़ा-ए-वक़्त, नबी के पश्चात एक अत्यंत विशिष्ट और सर्वोच्च स्थान पर आसीन होता है। उसे खुदा तआला स्वयं नियुक्त करता है और वही उसे इस पद पर स्थिर भी रखता है। खुदा तआला उसकी हर प्रकार से सहायता और समर्थन करता है। वह उसे आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है, स्वयं उसे बुद्धिमत्ता सिखाता है, और उसे क़ुरआन-ए-करीम के अर्थ, गूढ़ विषयों, रहस्यों और गहराइयों से परिपूर्ण कर देता है। इस कारण से वह क़ुरआन की व्याख्या सबसे भली प्रकार समझता और प्रस्तुत करता है। परमेश्वर हर कठिन परिस्थिति में उसका मार्गदर्शन स्वयं करता है।

हज़रत मसीह मौऊद के द्वितीय उत्तराधिकारी हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं:

"जिस प्रकार किसी नबी की आज्ञा का पालन अनिवार्य होता है, उसी प्रकार खलीफ़ाओं की आज्ञा का पालन भी आवश्यक होता है। हाँ, इन दोनों प्रकार की आज्ञाकारिता में एक मौलिक अंतर अवश्य है और वह यह कि नबी की आज्ञाकारिता इसलिए की जाती है क्योंकि वह खुदाई प्रकाश और पवित्रता का केंद्र होता है, जबकि खलीफ़ा की आज्ञाकारिता इसलिए की जाती है क्योंकि वह खुदाई आदेशों के क्रियान्वयन और समस्त प्रणाली का केंद्र होता है। इसी कारण विद्वान और सूझबूझ रखने वाले लोग यह कहते हैं कि नबियों को 'महानतम पवित्रता' प्राप्त होती है जबकि खलीफ़ाओं को 'प्रारंभिक पवित्रता'।"

(अल-फ़ज़्ल, 17 फ़रवरी 1935)

फिर आपने फ़रमाया:

"खुदा तआला जब किसी को खिलाफ़त पर नियुक्त करता है, तो उस युग की आवश्यकताओं के अनुसार उसे ज्ञान भी प्रदान करता है... इसका अर्थ यही है कि खलीफ़ा को खुदा तआला स्वयं बनाता है। यदि वह उसे अपनी विशेषताएँ प्रदान नहीं करता, तो उसके द्वारा खलीफ़ा नियुक्त करने का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता।"

(अल-फ़ज़्ल, 22 नवंबर 1950)

हज़रत खलीफ़ा तुल मसीह राबे (रहमहुल्लाह) फ़रमाते हैं :

"हर खलीफ़ा के युग में जो परिस्थितियाँ होती हैं, उनके संबंध में खलीफ़ा की

दी गई सलाह अन्य सभी उपदेशों की तुलना में अधिक प्रभावशाली होती है चाहे वह संबंध आत्मीय हो या इस कारण से हो कि खुदा तआला ने जो ज़िम्मेदारी उसे सौंपी होती है, उसी के परिणामस्वरूप खुदा तआला उसे विशेष प्रकाश प्रदान करता है।"

(ख़ुत्बात-ए-ताहिर, खंड 10, पृष्ठ 894)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह खमिस (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) फ़रमाते हैं:

"हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि खलीफ़ा खुदा तआला स्वयं बनाता है और उसके चुनाव में कोई भी त्रुटि नहीं होती। जिसे खुदा तआला यह वस्त्र पहनाता है, कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो उससे यह वस्त्र उतार सके या छीन सके। वह किसी दुर्बल व्यक्ति को चुनता है, उसे ऊपर उठाकर अपनी गोद में स्थान देता है और हर स्थिति में अपनी सहायता और विजय उसे प्रदान करता है। वह उसके हृदय में अपनी जमाअत के लिए ऐसा गहन दर्द उत्पन्न कर देता है कि वह उस दर्द को अपने व्यक्तिगत कष्टों से अधिक महसूस करने लगता है। और इस प्रकार जमाअत का प्रत्येक सदस्य यह अनुभव करता है कि कोई ऐसा है जो उसके कष्टों को समझता है, उसके लिए खुदा तआला के समक्ष प्रार्थनाएँ करता है, और उसका सच्चा शुभचिंतक बना रहता है।"

(दैनिक अल-फ़ज़्ल, 30 मई 2003, पृष्ठ 6)

खिलाफ़त की आज्ञाकारिता: सम्माननीय श्रोतागण!

किसी भी राष्ट्र, धर्म या समुदाय की उन्नति उसके आज्ञापालन के स्तर पर आधारित होती है। इस्लाम धर्म की बुनियाद पूर्णतः आज्ञाकारिता पर ही रखी गई है, क्योंकि 'इस्लाम' शब्द का अर्थ ही है पूर्ण समर्पण। इसी संदर्भ में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अपनी उम्मत को यह उपदेश दिया है:

"जिसने मेरे द्वारा नियुक्त किए गए शासक की आज्ञा का पालन किया, उसने मेरी आज्ञा का पालन किया, और जिसने मेरी आज्ञा मानी, उसने खुदा तआला की आज्ञा मानी। और इसी प्रकार, जिसने मेरे शासक की अवज्ञा की, उसने मेरी अवज्ञा की, और मेरी अवज्ञा करने वाला, वास्तव में खुदा तआला की अवज्ञा करता है।"

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल अहकाम, बाब 'खुदा तआला और उसके रसूल और तुम में से शासकों की आज्ञा मानो', हदीस 7137)

हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है:

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा:

"जो अपने शासक में कोई अप्रिय बात देखे, उसे चाहिए कि वह धैर्य रखे, क्योंकि जो व्यक्ति समुदाय की एकता से मात्र एक बालिश्त दूर हो जाए, उसकी मृत्यु अज्ञानता की मृत्यु मानी जाएगी।"

(सहीह मुस्लिम, किताबुल अमारह, बाब 'फितनों के समय मुसलमानों की जमाअत से जुड़े रहने की अनिवार्यता और कुफ्र की ओर बुलाने वालों से सावधान रहना')

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"क्या आज्ञा का पालन करना कोई सरल बात है? जो व्यक्ति पूर्ण निष्ठा से आज्ञा का पालन नहीं करता, वह इस खुदाई आंदोलन को बदनाम करता है। कोई एक ही आदेश नहीं होता, बल्कि आदेश तो अनेक होते हैं। जिस प्रकार स्वर्ग के कई द्वार हैं कोई एक से प्रवेश करता है और कोई दूसरे से उसी प्रकार नरक के भी अनेक द्वार हैं। ऐसा न हो कि तुम नरक का एक द्वार तो बंद कर दो और दूसरे को खुला छोड़ दो।"

(संकलन 'मल्फ़ूज़ात', खंड 2, पृष्ठ 411; शुक्रवार का प्रवचन, 27 अगस्त 2004; प्रकाशित 'अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल', 10 सितम्बर 2004, पृष्ठ 6)

आज्ञापालन का उदाहरण हमें प्रारंभिक इस्लामी युग के अनुयायियों में इस प्रकार मिलता है एक अवसर पर पवित्र पैग़म्बर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मस्जिद में खड़े अपने साथियों से कहा: "बैठ जाओ।" यह आदेश गली से आते हुए हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह ने सुना, और उन्होंने तुरंत वहीं रुककर बैठ जाना उचित समझा यह सोचते हुए कि कहीं अल्पतम विलंब भी आज्ञा के उल्लंघन में न आ जाए।

इसी प्रकार, एक युद्ध के दौरान जब हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने सेना की नेतृत्व की ज़िम्मेदारी हज़रत ख़ालिद बिन वलीद से हटाकर हज़रत अबू उबैदा को सौंप दी, तो हज़रत अबू उबैदा ने यह सोचकर पदभार नहीं लिया कि ख़ालिद बिन वलीद कार्य को अत्यंत दक्षता से निभा रहे हैं। किन्तु जब ख़ालिद बिन वलीद को इस निर्णय की जानकारी हुई, तो उन्होंने स्वयं अबू उबैदा से कहा "चूंकि यह समय के खलीफा का आदेश है, अतः आप इसे तत्काल पालन करें। मुझे इस बात की कोई चिंता नहीं कि मैं आपके अधीन कार्य करूँ।"

सम्माननीय उपस्थितगण! वर्तमान युग में भी पवित्र पैग़म्बर (स.अ.) के सच्चे सेवक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब, जिनको मसीह और महदी के रूप में खुदा तआला की ओर से भेजा गया और उनके उत्तराधिकारी खलीफा की आज्ञा के पालन की ऐसी अनुपम घटनाएँ मिलती हैं जो प्रारंभिक युग की स्मृति को जीवंत कर देती हैं।

ऐसी ही एक घटना यहाँ भी हुई एक अवसर पर जब हज़रत मसीह मौऊद ने मस्जिद में खड़े लोगों से कहा, "बैठ जाओ", तो हज़रत मियाँ करीम बख़्श साहिब, जो मस्जिद से सटी गली में थे, यह आवाज़ सुनते ही वहीं बैठ गए। जब किसी ने कारण पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया "जब मसीह की वाणी मेरे कानों तक पहुँची, तो मेरा कर्तव्य था कि मैं तुरंत उसका पालन करता।"

इसके बाद, जब परमेश्वर की दूसरी शक्ति के पाँचवे प्रतिनिधि, हमारे प्रिय नेता हज़रत अमीरुल मोमिनीन (अल्लाह उनकी सहायता करे) खिलाफ़त के पद पर प्रतिष्ठित हुए, तो संसार ने पुनः देखा कि एक ही आदेश पर सहस्रों लोग बैठ गए। मस्जिद फ़ज़्ल लंदन के बाहर हज़ारों अनुयायी केवल एक झलक पाने और उनके हाथ पर प्रतिज्ञा करने के लिए एकत्रित थे। जैसे ही उन्होंने आदेश दिया "बैठ जाओ" तो बिना किसी विलंब के सभी वहीं बैठ गए। और यह आत्मा को छू लेने वाला दृश्य पूरे संसार ने एम.टी.ए. के माध्यम से देखा।

हज़रत अबू अब्दुल्लाह साहिब, जो जोखीवा बाजवा से थे, हज़रत मसीह मौऊद के साथियों में से थे। एक बार वे हज़रत खलीफ़ा प्रथम (रज़ियल्लाहु अन्हु) की संगति में बैठे थे और उन्होंने निवेदन किया"मुझे कोई उपदेश दीजिए।"

तो खलीफा प्रथम ने कहा "मौलवी साहब! मैं नहीं समझता कि कोई ऐसा कार्य हो जो आवश्यक हो और आपने न किया हो। अब तो केवल कुरआन का कंठस्थ करना शेष है।"

अतः यह सुनकर उन्होंने लगभग पैंसठ वर्ष की अवस्था में पवित्र कुरआन का कंठस्थ अध्ययन आरंभ कर दिया और इतने आयु में भी सम्पूर्ण कुरआन कंठस्थ कर लिया।

(स्रोत: दैनिक 'अल-फ़ज़्ल', 8 दिसम्बर 2010, पृष्ठ 4; संदर्भ: 'अल-फ़ज़्ल', क़ादियान, 19 अप्रैल 1947)

प्रिय श्रोतागण! खलीफा की आज्ञा और संगठनात्मक अनुशासन का पालन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं एक दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते। इसी संबंध में हमारे वर्तमान खलीफा, हज़रत मसीह के पाँचवें उत्तराधिकारी (अल्लाह उनकी सहायता करे) फ़रमाते हैं।

"हमेशा स्मरण रखो कि तुम्हारा उद्देश्य, तुम्हारा जीवन का लक्ष्य केवल और केवल परमेश्वर की प्रसन्नता होना चाहिए। और इसका उपाय यह है कि जो आदेश, नियम और निर्णय परमेश्वर, उसका दूत और उसका संगठन प्रदान करें, उनका पूर्णतः पालन किया जाए, और इस संदर्भ में आज्ञाकारिता में कोई अंतर न आने दिया जाए।"

(शुक्रवार का प्रवचन, 27 अगस्त 2004; प्रकाशित 'अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल', 10 सितम्बर 2004, पृष्ठ 6 से 7)

साथ ही हज़रत खलीफा मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

"लोग तो यह कहते हैं कि हम खलीफा की आज्ञा का पालन करने से बाहर नहीं हैं, हम पूरी तरह से आज्ञाकारिता में हैं, हर आदेश को मानने के लिए तैयार हैं। लेकिन जब कोई अधिकारी या अमीर कोई कमी दिखाए, तो उसकी आज्ञा का पालन नहीं कर सकते। खलीफा-ए-वक्त की आज्ञा का पालन तभी सही है जब संगठन के हर अधिकारी की आज्ञा का पालन हो। तभी हम अल्लाह के रसूल की और अल्लाह की आज्ञा का पालन कर रहे होते हैं।"

(शुक्रवार का खुतबा, 31 दिसंबर 2004; प्रकाशित 'अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल', 14 जनवरी

2005, पृष्ठ 8)

सुनिए! खिलाफ़त के तहत संगठन की आज्ञा का पालन ही वास्तव में खिलाफत की आज्ञा का पालन है, इस बात को स्पष्ट करते हुए हज़रत खलीफा मसीह राबे रहमहुल्लाह ने फ़रमाया:

"जैसे प्राकृतिक नियम आपकी सुरक्षा के लिए अनिवार्य हैं और इसके कई पहलू होते हैं, वैसे ही संगठन भी आपकी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। यदि संगठन न हो, तो किसी की आध्यात्मिक जिंदगी की कोई गारंटी नहीं दी जा सकती। अन्य लोगों का हाल देखो, क्या हुआ? कैसे वे विघटित हो गए? कैसे एकजुटता टूटकर अंततः व्यक्तिगतता में बदल गई और हर व्यक्ति स्वतंत्र है, वह अपनी स्वतंत्रता का आनंद ले रहा है। अर्थात वह समझता है कि वह स्वतंत्र है और अहमदी गुलाम हैं। और हर समय की मुसीबतें। यह स्थिति हो तो संगठन से पूछो, बैठना हो तो संगठन से पूछो, क्या परेशानी है...

हज़ूर फ़रमाते हैं: अहमदी संगठन का जो ढाँचा है, वह ऐसा ढाँचा है जो प्राकृतिक कानून की तरह आपको हर दिशा से घेरता है। अब कोई व्यक्ति कह सकता है कि दुनिया में, अद्भुत प्रकृति है, मुसीबत आ गई है, हाथों को आग में न डालो, अधिक ठंडी हवा न खाओ, सर्दियों में गर्म कपड़े पहनो, गर्मियों में ठंडे कपड़े पहनो, भूख लगे तो यह करो, भूख न लगे तो यह करो, उठो, बैठो, सोओ, जाओ, बोलो लेकिन संतुलन बनाए रखो। खाओ, लेकिन जब भूख समाप्त न हो, तो हाथ रोक लो। अर्थात जो प्राकृतिक कानून आवश्यकताएँ करते हैं... पूरी दुनिया का ढाँचा समान रूप से हर व्यक्ति पर बंधन लगाए हुए है और जहां भी कोई व्यक्ति इस बंधन से बचने की कोशिश करता है, वहाँ उसे सजा मिलती है...

इसलिए हज़रत पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने इस दुनिया को कारागार बताया है और मौमिन की जन्नत को बताया है। अब देखिए, अल्लाह के रसूल ने इस दुनिया को कारागार कहा है और मुमिन की पूरी ज़िन्दगी इसी कारागार में गुज़रेगी। और काफ़िर के लिए जन्नत ठहराई है। लेकिन जो मुमिन भी हो और स्वतंत्र भी हो, वह किस श्रेणी में आएगा? इसलिए मुमिन के साथ संगठन के बंधन और अनुशासन का पालन एक अनिवार्यता है...

यदि आप संगठन के साथ न्याय करेंगे और इसके सभी सूक्ष्म तत्वों का पालन करेंगे तो आपको स्वतंत्रता का आभास होगा। आपको शांति और संतोष का आभास होगा। अतः इस दृष्टि से आप संगठन की रक्षा में तत्पर रहें और इसके सामने सिर झुकाएँ क्योंकि यही वास्तव में अल्लाह के सामने सिर झुकाना है। कुछ लोग कहते हैं कि यह संगठन क्या है, यह एक निरर्थक चीज़ है, संगठन, संगठन।

लेकिन यह संगठन अल्लाह तआला का स्थापित किया हुआ है, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह का स्थापित किया हुआ है और यह जो बैअत है, वह संगठन की खातिर की जाती है। अन्यथा हज़रत पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मानने वाले जिन्होंने उनके हाथ पर बैअत की थी, उन्हें एक के बाद एक खलीफा के हाथ पर बैअत करने की आवश्यकता क्यों थी? इस बैअत में जो आज्ञाकारिता का क़रार है और फिर इस पर जोर है और बार-बार कहा जा रहा है कि हम निश्चित रूप से आज्ञा का पालन करेंगे, यह स्पष्ट रूप से बताता है कि केवल धर्म के विश्वास का नाम नहीं है या शरिया के सामान्य कर्तव्यों का पालन नहीं है, बल्कि जो व्यक्ति निश्चित रूप से संगठन का हिस्सा बनकर इसके सामने सिर नहीं झुका सकता, वह वास्तविक रूप से धर्म से बाहर होता है।"

(शुक्रवार का खुतबा, 31 मई 1996)

खिलाफ़त से जुड़ने की अहमियत और उसके लाभ

"क़ुरआन में आदेश है, 'और तुम सभी अल्लाह की रस्सी को मजबूती से थाम लो और बिखर न जाओ। और तुम पर अल्लाह का उपकार याद करो।' अर्थात, अल्लाह की रस्सी को मजबूती से थामे रहो, अर्थात वह रस्सी जिसे अल्लाह तआला ने खिलाफत के रूप में हमें दी है। हम तभी खिलाफत की पूरी आज्ञाकारिता कर सकते हैं जब हम खलीफा-ए-वक्त की आज्ञा के साथ संगठन की पूर्ण आज्ञाकारिता करेंगे। इस प्रकार हम सभी प्रकार के विभाजन से बच सकेंगे और खिलाफत की आज्ञा के आशीर्वाद से सही मायनों में लाभान्वित हो सकेंगे।

खिलाफ़त अल्लाह तआला का एक बड़ा उपहार है जो क़ौम को एकजुट करता है और विभाजन से बचाता है। इसमें संगठन मोती की तरह सजा हुआ होता है।

हज़रत खलीफा मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक बार फ़रमाया, 'आज हम पर अल्लाह तआला का यह आशीर्वाद है कि उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) को मानने की तोफ़ीक़ दी है और हम उस संगठन में समाहित हुए हैं जो अल्लाह तआला के आदेशों की ओर ध्यान दिलाता रहता है और अल्लाह के प्यारे रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की सुन्नत की ओर भी ध्यान दिलाता रहता है, और हम दूसरे मुस्लिम समुदायों की तरह बिखरे हुए नहीं हैं, बल्कि खिलाफत के आशीर्वाद के कारण एक धागे में पिरोये हुए हैं।'

(शुक्रवार का खुतबा, 9 जून 2006)

खिलाफ़त से जुड़ने के लिए, खलीफा के साथ निष्ठा और वफादारी रखना अनिवार्य है, तभी हम खिलाफत के आशीर्वाद से सही मायनों में लाभान्वित हो सकते हैं।

अतः हमें चाहिए कि हम खलीफा-ए-वक्त के हर आदेश पर 'लब्बैक' कहने वाले हों और उनकी आज्ञा में समर्पित होकर वह आदर्श स्थापित करें जो हमें हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के साथियों में देखने को मिलता है।

मान्यवर श्रोतागण! आज दुनिया के हालात कितनी तेज़ी से बदल रहे हैं। चारों ओर अशांति, अव्यवस्था है। दुनिया आग के मुहाने पर खड़ी है। तीसरी विश्व युद्ध सिर पर खड़ी है, और जो कुछ हो रहा है और होने वाला है, उसकी वजह यही है कि लोग इमाम-उल-ज़माँ हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का इंकार कर के खिलाफत जैसी महान नेअमत से वंचित हैं। यह अल्लाह की रस्सी, जिसे थामकर अहमदी समुदाय अल्लाह के अनगिनत आशीर्वाद से लाभान्वित हो रहा है, वही खिलाफत का आशीर्वाद है। आज के परिप्रेक्ष्य में, जब हम देखते हैं, हमारे प्यारे ईमाम खलीफा मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दुनिया को वैश्विक युद्धों के नुकसानों से बचाने और दुनिया में शांति स्थापित करने के प्रयासों में दिन-रात जुटे हुए हैं।"

आज अगर दुनिया को तबाही से बचाने के लिए कोई बेचैन और बेक़रार अस्तित्व दुनिया में है तो वह हमारे प्यारे इमाम, खलीफा-ए-वक्त, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस ही हैं। खलीफा-ए-वक्त हमारे और अल्लाह तआला के बीच एक क़ुर्बत का वासिता हैं, जो अपनी जमाअत और पूरी मानवता के लिए अपनी दुआओं और प्रेम में अत्यधिक समर्पित रहते हैं। खलीफा-ए-वक्त के दिल में अपनी जमाअत और सभी मानवता के प्रति जो हमदर्दी और प्यार पाया जाता है, उसका अंदाज़ा दुनिया नहीं लगा सकती। खलीफा-ए-वक्त की दिली हालत कैसी होती है, इसका इज़हार बहुत प्यारे अंदाज़ में हज़रत खलीफा-त-मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने एक मौक़े पर किया था। वह फ़रमाते हैं:

"मैं आप में से आप ही जैसा एक इंसान हूँ और आप में से हर एक के लिए अल्लाह तआला ने मेरे दिल में इतना प्यार पैदा किया है कि आप लोग इसका अंदाज़ा भी नहीं कर सकते। कभी कभी सिजदा में मैं जमाअत के लिए और जमाअत के सदस्यों के लिए ऐसी दुआ करता हूँ कि, ऐ अल्लाह! जो मुझे खत लिखना चाहते थे, लेकिन किसी आलस्य के कारण नहीं लिख सके, उनकी मुरादें पूरी कर दे। और ऐ अल्लाह! जिन लोगों ने मुझे खत नहीं लिखा और ना ही उन्हें यह ख्याल आया कि दुआ के लिए खत लिखें, अगर उन्हें कोई तकलीफ है या उनकी कोई जरूरत है, तो उनकी तकलीफ को दूर कर दे और उनकी जरूरतें पूरी कर दे।"

(रोज़नामा अलफ़ज़ल रब्वा, 21 दिसंबर 1966, पृष्ठ 5)

आज भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक मुबारक अस्तित्व हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) की शक्ल में मौजूद है। खलीफा-ए-वक्त की मोहब्बत और दुआएं हमारे लिए एक ऐसा खज़ाना हैं, जिसकी क़ीमत और अहमियत का अंदाज़ा लगाना नामुमकिन है और हमारा सिर अगर सारी ज़िंदगी भी अल्लाह तआला के सामने इस नेअमत का शुकर अदा करने के लिए झुका रहे, तब भी शायद हम इसका शुकर

अदा नहीं कर सकते। लेकिन इस नेअमत पर शुकर का इज़हार ज़रूर करना चाहिए और उसकी कोशिश करते रहना चाहिए। इसका एक ज़रिया यह भी है कि हम खलीफा-ए-वक्त के लिए नियमित तौर पर दुआएं करते रहें। अल्लाह तआला के सामने रो-रो कर यह दुआ मांगें कि, ऐ अल्लाह! तू हमारे खलीफा को अपनी हिफ़्ज़ व अमान में रख। जैसे वह हमारे दर्द में तड़पते हैं और हमारे लिए दुआएं करते हैं, हमें भी दुआओं के ज़रिए उनका मददगार बना। हमें खलीफा-ए-वक्त का सुलतान-ए-नसीर बना और ख़िलाफ़त के साथ हमेशा जुड़ा रख। आमीन।

प्रिय श्रोतागणों!

ख़िलाफ़त से वाबस्तगी कैसी होनी चाहिए, इसके बारे में हज़रत खलीफा-ए-मसीह-अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया:

"तुम अपने आप को ईमाम के साथ ऐसा वाबस्ता कर लो जैसे गाड़ियाँ इंजन के साथ। और फिर हर रोज़ देखो कि तुम अंधकार से निकल रहे हो या नहीं। अस्तग़फार क़स्रत से करो और दुआओं में लगे रहो। तेरह सौ साल के बाद यह ज़माना मिला है और आने वाला यह ज़माना क़ियामत तक नहीं आ सकता। इसलिए इस नेअमत का शुकर अदा करो क्योंकि शुकर करने पर नेअमत में इज़ाफ़ा होता है।"

(खुतबात-नूर, पृष्ठ 131)

प्रिय श्रोतागणों!

अल्लाह तआला ने जमाअत को तरक्की देनी है और दे रहा है, ख़ुद लोगों की रहनुमाई करता है, ख़िलाफ़त के साथ उन्हें जोड़े रखता है और जोड़े रखेगा। इसकी कुछ मिसालें पेश हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) फ़रमाते हैं:

"कैमरून के शहर 'ग्वांडिरे' के एक मोहल्ले में आठ परिवारों ने बैअत करके जमाअत में शमूलियत इख़्तियार की। नौमुबाईन का कहना है कि एम.टी.ए. ने हमारे बच्चों की ज़िंदगी बदल दी है और धर्म के बारे में उनके ज्ञान में इज़ाफ़ा हुआ है। उनमें से एक युवक अब्दुलरहमान है जो ओ-लेवल कर रहा है। यह मेरे खुत्बात बड़े शौक से सुनता है। बड़ा शिद्दत से चाहने वाला है। जुमे के दिन स्कूल टीचर से कहता है कि मैंने घर खुत्बा सुनने के लिए जाना है और स्कूल छोड़ सकता हूँ, खुत्बा जुमे को नहीं छोड़ सकता। यही उनका ईमान है। उनके वालिद ने कहा कि हर जुमे को स्कूल छोड़ कर एम.टी.ए. पर खुत्बा सुनने आता है और अब्दुलरहमान कहते हैं कि खुत्बा सुनने से मेरा ईमान और ज्ञान बढ़ता है। पहले जो कुछ भी गलत काम करता था अब उसे छोड़ दिया है।"

फिर अमीर साहब बेल्जियम लिखते हैं कि मरोक्को के एक दोस्त मुस्तफा साहब हैं। लंबा अरसा अहमदीयत के बारे में तअलुक़ कर के उन्होंने बैअत की। कहते हैं कि मैंने बचपन से ही बहुत से उलमाओं की सोहबत में वक्त बिताया है लेकिन खलीफा-ए-वक्त के खुत्बात ना सिर्फ़ क़ुरआन करीम की सही तफ़्सीर हैं बल्कि इंसान को अल्लाह तआला के क़रीब ले जाते हैं।

कहते हैं कि ये खुत्बात सुनने के बाद मुझे नमाज़ों का मज़ा आने लगा है। अल्लाह तआला ने मुझे सच्ची ख़्वाबें भी दिखाईं हैं। अहमदियत ने मेरी ज़िन्दगी बदल दी है और अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वर्णन करते हुए वह शख़्स आंसुओं से भर जाते हैं।

अल्लाह तआला अपने वादे के मुताबिक़ हज़रत मसीह मौऊद (अलैहि सलाम) की जारी ख़िलाफ़त की ताइद करता है, कैसे वह दिलों को खोलता है।

गिनी बिसाउ के मुब्लिग कहते हैं कि... एक गाँव में पिछले साल तबलिग़ के ज़रिए अहबाब ने अहमदियत क़ुबूल की थी लेकिन उस गाँव के चार परिवारों ने अहमदियत क़ुबूल करने से इंकार कर दिया था। जब हमारी टीम इस गाँव में एम.टी.ए. इंस्टाल करने गई तो हमारे मुअल्लिम मुहम्मद मसालू जोलो साहब ने उन सभी परिवारों को भी मस्जिद में दावत दी कि वह आकर हमारा मुस्लिम चैनल और हमारे खलीफा और ईमाम महदी (अलैहि सलाम) की तस्वीर देखें।... नमाज़ के बाद जब एम.टी.ए. चलाया गया तो उसमें खुत्बा आ रहा था। गैर-जमाअत दोस्त बड़े गौर से ये सब कुछ देखते रहे। मुअल्लिम ने उनसे कहा कि खुत्बा इंग्लिश में चल रहा है, मैं आपके लिए तर्जुमा कर देता हूँ। यह आपका हक़ है कि आपको यह पता चले कि खलीफा क्या कह रहे हैं। इस पर उसने कहा कि मुझे समझ नहीं आ रहा, लेकिन मैं अल्लाह की क़सम खाकर कह सकता हूँ कि ये झूठ नहीं बोल सकते! अगर ये जमाअत अहमदिया के खलीफा हैं तो अहमदिया जमाअत कभी झूठी जमाअत नहीं हो सकती और मैं अभी और इसी वक़्त अहमदियत क़ुबूल करने का ऐलान करता हूँ।

फिर नाईजीरिया के मबलीघ कहते हैं कि एम.टी.ए. देखने के लिए बहुत सारी जगहों पर जो डिशें लगाई गई हैं, वहां खुत्बे और दूसरे प्रोग्राम देखे जाते हैं। तो कहते हैं कि एक शख़्स ने कहा कि मुझे जमाअत के बारे में बहुत सारे एतिराज़ात थे और दिली तसल्लि नहीं होती थी, लेकिन ईमाम जमाअत अहमदिया का खुत्बा सुना और स्वाभाविक तौर पर मेरा दिल तसल्लि पा गया। मुझे असली इस्लाम मिल गया है और सारे एतिराज़ात ख़त्म हो गए और मैंने जमाअत में शमूलियत इख़्तियार कर ली।

(ख़ुत्बा जुमा 24 मई 2024)

इसी तरह एक बच्चे की मिसाल है। मसोदोनिया के मबलीघ इनचार्ज लिखते हैं कि पिछले दिनों बोस्निया के दौरे के दौरान मेरी एक दोस्त से तआरुफ़ हुआ। पाकिस्तानी दोस्त थे, तबलिग़ी गुफ़्तगू हुई। मुलाकातों का सिलसिला जारी रहा। उसने बताया कि कुछ वक्त पहले दुबई एयरपोर्ट पर उनकी मुलाकात एक फैमिली से हुई थी जिनकी एक तीन-चार साल की बच्ची कह रही थी कि हमें सब को नमाज़ पढ़नी चाहिए और सच्चा बोलना चाहिए। जब मुझे पता चला कि इस फैमिली का ताल्लुक़ जमाअत अहमदिया से है तो मैंने उस बच्ची से पूछा कि तुम्हारी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी ख़्वाहिश क्या है? तो कहने लगी कि लंदन में प्यारे हज़ूर से मिलना चाहती हूँ। कहते हैं कि इस बात ने मुझ पर बहुत गहरा असर छोड़ा कि इतनी छोटी उम्र है और उसकी सबसे बड़ी ख़्वाहिश खलीफा से मुलाकात करना है।

(ख़ुत्बा जुमा 29 मई 2020)

सामिन-ए-क़राम ! ख़िलाफ़त से वाबस्तगी के लिए ख़लीफा-ए-वक्त से ख़ुद को जोड़ा जाएगा। और इसका एक अहम ज़रिया एम.टी.ए. है। इन वाक़ियात से ज़ाहिर है कि सारी दुनिया एम.टी.ए. की मार्फत किस तरह ख़लीफा-ए-वक्त से जुड़ रही है और कैसे बरकात-ए-ख़िलाफ़त से फ़ायज़ हो रही है। इसलिए अहबाब जमाअत को चाहिए कि अपने घरों में एम.टी.ए. का निज़ाम जारी करें। लाइव ख़ुत्बे जुमा और ख़िताबात को नियमित तौर पर ख़ुद सुनें और अहल-ए-ख़ाना को भी सुनाएं। हज़रत अनवर का प्रोग्राम "THIS WEEK WITH HUZOOR" जो हर हफ़्ते नशर होता है, ख़ुद देखें और अपने बच्चों को भी देखने की तलीक़ करें। ख़लीफा-ए-वक्त की ख़िदमत में नियमित तौर पर दुआ के लिए ख़त लिखते रहें। सैयदना हज़रत अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) की सेहत और सलामती के लिए हर नमाज़ में दुआ करें। निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त और उसके इस्तिहकाम का तक़ाज़ा है कि अपने घरों में निज़ाम-ए-जमाअत का तक़दुस क़ायम करें। फिर देखें! कैसे आपके घरों में नेक और पाक तब्दीलियाँ आती हैं और कैसे बरकतों का नज़ूल होता है।

सामिन-ए-क़राम!

"हम इस बात का भी एतेराफ़ करते हैं कि हम निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त और इस्तिहकाम के लिए आख़िरी दम तक जद्दो-जहद करते रहेंगे। और अपनी औलाद दर औलाद को हमेशा ख़िलाफ़त से वाबस्तगी रखने और उसकी बरकातों से मस्तफ़ीद होने की तलीक़ करते रहेंगे ताकि क़यामत तक ख़िलाफ़त अहमदीया महफ़ूज़ चलती जाए।"

अल्लाह करे कि हर अहमदी मर्द और औरत अपने अहद को पूरा करने वाला हो। ख़िलाफ़त से वफ़ा और मुहब्बत में उँचे मियार क़ायम करने वाला हो। अल्लाह तआला हमें हमेशा ख़िलाफ़त से वाबस्ता रखे और इसके फ़ज़ल से फ़ायज़ फ़रमाता चला जाए। आमीन।

हमारा ख़िलाफ़त पर ईमान है, ये मिल्लत की तन्जीम की जान है
इसी से हर एक मुशकिल आसान है, ग़रेज़ाँ है इससे जो नादान है
रहेंगे ख़िलाफ़त से वाबस्ता हम, जमाअत का क़ायम है इससे भरम।

वा आख़िरु द'वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन।

★ ★ ★

"वैश्विक युद्ध के दुष्प्रभावों से सुरक्षित रहने के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के निर्देश"

(लेखक: तारिक अहमद, इस्लाह व इरशाद विभाग, नूर-उल-इस्लाम, क़ादियान) भाषण जलसा सालाना क़ादियान 2024

مَنِ اهۡتَدٰی فَاِنَّمَا یَهۡتَدِیۡ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیۡهَا ؕ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَۃٌ وِّزۡرَ اُخۡرٰی ؕ وَمَا کُنَّا مُعَذِّبِیۡنَ حَتّٰی نَبۡعَثَ رَسُوۡلًا

(سورۃ بنی اسرائیل آیت نمبر 16)

अनुवाद: जो मार्गदर्शन प्राप्त करता है, वह अपने ही हित के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करता है, और जो पथभ्रष्ट होता है, वह अपने ही विरुद्ध पथभ्रष्ट होता है। और कोई भी भार उठाने वाला, किसी और का भार नहीं उठाएगा। और हम किसी समुदाय को दंड नहीं देते जब तक कोई संदेष्टा न भेज दें (और प्रमाणिकता पूर्ण न कर दें)।

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"उस दिन आकाश से एक स्पष्ट धुआँ उतरेगा और उस दिन धरती पीली पड़ जाएगी, अर्थात तीव्र अकाल के संकेत प्रकट होंगे। इसके पश्चात जब विरोधी तुम्हारा अपमान करें, तो मैं तुम्हें सम्मान दूँगा और तुम्हारा आदर करूँगा। वे यह चाहेंगे कि तुम्हारा कार्य अधूरा रह जाए, परंतु ख़ुदा तआला नहीं चाहता कि वह तुम्हें तब तक छोड़े जब तक तुम्हारा हर कार्य पूर्ण न कर दे। मैं दयालु हूँ और हर कार्य में तुम्हें सुविधा प्रदान करूँगा। हर दिशा से तुम्हें आशीर्वाद दिखाऊँगा।"

(हकीकतुल वही, रूहानी ख़ज़ाइन, खंड 22, पृष्ठ 98)

एक अन्य स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"हे सुनने वालो! ध्यान रखो कि यदि ये भविष्यवाणियाँ केवल सामान्य रूप से पूरी हुईं, तो समझ लो कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हूँ। परंतु यदि इन भविष्यवाणियों की पूर्ति ने संसार में हलचल मचा दी, भय के कारण लोगों को पागल कर दिया, और अनेक स्थानों पर इमारतों तथा प्राणों की क्षति हुई, तो उस परमेश्वर से डरो, जिसने मेरे लिए यह सब कुछ प्रकट किया।"

(तजल्लीयात-ए-इलाहीया, रूहानी ख़ज़ाइन, खंड 20, पृष्ठ 396)

दोस्तो जागो कि अब फिर ज़लज़ला आने को है
फिर ख़ुदा कुदरत को अपनी जल्द दिखलाने को है
यारो कुछ करो उस का ईलाज
आसमां हे ग़ाफ़िलो अब आग बरसाने को है

महोदयगण!

हर व्यक्ति आज के युग में असुरक्षा का शिकार है और शांति तथा सौहार्द का ह्रास अपनी आँखों से देख रहा है और कानों से सुन रहा है। आज का विश्व व्याकुलता और बेचैनी की स्थिति में है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में युद्ध की ज्वाला धधक चुकी है। वर्तमान युग में ख़ुदा तआला का प्रकोप एक और वैश्विक युद्ध के रूप में प्रकट हो सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसी युद्ध की भयावहता और दुष्परिणाम केवल एक पारंपरिक युद्ध या वर्तमान पीढ़ी तक ही सीमित नहीं रहेंगे। वस्तुतः इसके भयानक प्रभाव आने वाली कई पीढ़ियों तक अनुभव किए जाते रहेंगे।

आख़िरी ज़माने के इमाम, हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पूरी ज़िंदगी मुसलमानों को और तमाम दुनिया को बार-बार चेतावनी दी कि अगर उन्होंने तौबा न की और सच्चे ख़ुदा, उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और समय के ईमाम पर ईमान न लाया, तो अल्लाह तआला के कठोर अज़ाब में गिरफ्तार होंगे।

महोदयगण!

कुरआन-ए-करीम में यह उल्लेख है कि क़ौम-ए-नूह शिर्क और मूर्तिपूजा की वजह से तूफ़ान के ज़रिए हलाक कर दी गई। तकब्बुर और नाशुक्री की वजह से क़ौम-ए-आद तेज़ आँधी की चपेट में आकर नष्ट हो गई। क़ौम-ए-समूद, अल्लाह तआला की निशानी ऊँटनी को नुकसान पहुँचाने के कारण ज़ोरदार चीख़ और भूकंप से तबाह हुई। बदफैली और समलैंगिकता के कारण क़ौम-ए-लूत की ज़मीन उलट दी गई। नापतौल में कमी और धोखाधड़ी की वजह से असहाबुल ऐकह पर भीषण गर्मी और भूकंप आया।

मगर इस दौर में वह सर्वशक्तिमान ख़ुदा एक अरसे से ख़ामोश रहा और उसकी आँखों के सामने ही पिछली तमाम क़ौमों की घृणित हरकतें की जाती रहीं। जब हम आज की दुनिया पर नज़र डालते हैं तो यह कहना बिल्कुल सही होगा कि पिछली क़ौमों पर जिन बुराइयों की वजह से ख़ुदा का ग़ज़ब भड़का, वे सारी बुराइयाँ आज के दौर में मौजूद हैं। कुफ़्र और शिर्क अपनी चरम सीमा पर हैं, ख़ुदा के नबियों को न केवल झुठलाया जा रहा है, बल्कि उनकी तौहीन में बेतहाशा गुस्ताख़ी की जा रही है। ज़ुल्म और सितम की इन्तिहा हो चुकी है, बेहयाई इस हद तक बढ़ गई है कि शर्म और पर्दा जैसे दुनिया से ग़ायब हो चुके हैं।

महोदयगण!

इतिहास एक बार फिर उन काले अध्यायों के पन्नों को पलट रहा है और ख़ुदा की क़हरी जलालियत का प्रकटन हो रहा है। इस ज़माने की हालत का चित्र खींचते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि इस मुल्क की बारी भी क़रीब आती जा रही है। नूह का ज़माना तुम्हारी आँखों के सामने आजाएगा और लूत की ज़मीन का वाक़िआ तुम अपनी आँखों से देख लोगे। मगर ख़ुदा ग़ज़ब में धीमा है। तौबा करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। जो ख़ुदा को छोड़ता है वह एक कीड़ा है, इंसान नहीं। जो उससे नहीं डरता वह ज़िन्दा नहीं, बल्कि मुर्दा है।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 22, सफ़ा 269)

"मौत की राह से मिलेगी अब तो दीन को कुछ मदद
वरना दीन ऐ दोस्तों! इक रोज़ मर जाने को है"

महोदयगण!

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ाए अज़ाम की भविष्यवाणियों से हमें इस हक़ीक़त का भी इल्म होता है कि तीसरी वैश्विक तबाही के चरम पर इस्लाम की सार्वभौमिक विजय और प्रभुत्व की शुरुआत होगी और फिर बड़ी तेज़ी से इस्लाम पूरी दुनिया में फैलना शुरू हो जाएगा। लोग भारी तादाद में इस्लाम को क़बूल करेंगे और यह समझ जाएंगे कि सिर्फ़ इस्लाम ही सच्चा धर्म है और यह कि इंसान की निजात केवल हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पैग़ाम के ज़रिए ही मुमकिन है।

अतः जब ज़माना इंसान को मुसीबतों और कठिनाइयों में डाले हुए है, तो ऐसे में एक मोमिन को पहले से बढ़कर अल्लाह तआला की ओर लौटने की ज़रूरत है। और अल्लाह तआला के रास्ते को दिखाने के लिए उसने अपना भेजा हुआ एक नबी भेजा है। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَاعۡتَصِمُوۡا بِحَبۡلِ اللّٰهِ جَمِیۡعًا وَّلَا تَفَرَّقُوۡا ۪ وَاذۡکُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ عَلَیۡکُمۡ اِذۡ
کُنۡتُمۡ اَعۡدَآءً فَاَلَّفَ بَیۡنَ قُلُوۡبِکُمۡ فَاَصۡبَحۡتُمۡ بِنِعۡمَتِهٖۤ اِخۡوَانًا ۚ وَکُنۡتُمۡ عَلٰی شَفَا
حُفۡرَۃٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنۡقَذَکُمۡ مِّنۡهَا ؕ کَذٰلِکَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَکُمۡ اٰیٰتِهٖ لَعَلَّکُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ﴿۱۰۴﴾

(सूरत आले इमरान, आयत नंबर 104)

अनुवाद: "और सब के सब अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़े रहो और आपस में विभाजित न हो। और अल्लाह की उस नेअमत को याद करो जो उसने तुम पर की जब तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे, फिर उसने तुम्हारे दिलों में मेल पैदा कर दिया और उसकी नेअमत से तुम भाई-भाई बन गए। और तुम आग के गड्ढे के किनारे खड़े थे, तो उसने तुम्हें उससे बचा लिया। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें स्पष्ट करता है ताकि तुम हिदायत पा सको।"

और आज वही ख़ुदा का भेजा हुआ फ़रिस्तादा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह की सूरत में मुख़्तलिफ़ तरीकों से, मुख़्तलिफ़ ज़रियों से, मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में मुख़्तलिफ़ बातों की तरफ़ तवज्जो दिलाते हुए हमारी रहनुमाई कर रहा है। यह रहनुमाई, जो अल्लाह तआला और उसके रसूल मअसूम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की तालीमात पर मबनी है, हमें हर तरह की आफ़ात से बचाने और हमारी ज़िंदगी को सँवारने का एक ऐसा ज़रिया है जो हमेशा के लिए जारी रहने वाला है और अगर हम इस पर अमल करने वाले हों तो बेहतरीन नतीजे देने वाला है।

अतः इंसान के लिए तीसरे विश्वयुद्ध के दुष्परिणामों से बचने का कोई रास्ता नहीं है सिवाय इसके कि वह अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करे और अल्लाह तआला को अपना मददगार बनाए।

पिछले दो दशकों से हमारे प्रियतम और पूज्य नेता हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दुनिया को तीसरे विश्वयुद्ध के ख़तरों से बार-बार सावधान कर रहे हैं और जमाअत के प्रत्येक सदस्य को दुआओं के साथ अपनी आत्मिक सुधार और नैतिक प्रशिक्षण की ओर विशेष ध्यान देने की ताकीद कर रहे हैं, ताकि वे इस विश्वव्यापी विनाश के भयानक दुष्प्रभावों से स्वयं को और अपनी आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित रख सकें।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ 7 अक्तूबर 2016 के जुमा के ख़ुत्बे में फ़रमाते हैं:

"इसलिए आज की दुनिया की जो हालत है, वह सोच में डालने वाली है कि इसका अंजाम क्या होगा। पिछले दिनों एक सज्जन ने कहा कि दुनिया बहुत तेज़ी से विनाश की ओर जा रही है, तो हमारा क्या होगा। इसका जवाब तो हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम ने एक शेर में भी दे दिया है और विस्तार से यह भी फ़रमाया कि:

आग है पर आग से वो सब बचाए जाएँगे
जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुलअजाएब से प्यार

(दुर्र-ए-समीन उर्दु, पृष्ठ 154)

इसलिए असल बात यही है कि हम अल्लाह तआला से अपने संबंध को मज़बूत करें, और जहाँ अल्लाह तआला का हक़ अदा करें, वहाँ उसके बंदों के भी हक़ अदा करने वाले बनें। उन नेकीं को अपनाने की कोशिश करें जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने निर्धारित नियमों के अंतर्गत नेकी क़रार दिया है, और उन बुराइयों से बचने की कोशिश करें जिन्हें अल्लाह तआला ने बुराई ठहराया है और जिन्हें उसने क़ुरआन करीम में स्पष्ट रूप से बयान किया है। हमें हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने के बाद अपने विश्वास और आचरण दोनों दृष्टियों से अधिकाधिक सुदृढ़ बनने की कोशिश करनी चाहिए। यही वे बातें हैं जो हमारी नजात (उद्धार) का कारण बनती हैं और यही वे बातें हैं जो अल्लाह तआला को भी प्रिय हैं।... इसलिए हमें हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम की बातों को सामने रखते हुए अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों के पालन की समीक्षा करनी चाहिए और यह समीक्षा करते रहना चाहिए।"

मस्जिद फ़ज़्ल लंदन के सौ वर्ष पूरे होने पर आयोजित विशेष कार्यक्रम के अवसर पर भी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हमें विनाश के दुष्प्रभावों से बचने के लिए विशेष रूप से "हक़ूक़ुल्लाह" और "हक़ूक़ुल-इबाद" (अल्लाह और उसके बंदों के अधिकार) की अदायगी की ओर ध्यान दिलाया। आप फ़रमाते हैं:

"निश्चित रूप से हम एक अत्यंत अशांत समय से गुजर रहे हैं और दुनिया में नफरत की आग फैली हुई है। ऐसे में हमें अपने आचरण और चरित्र पर नज़र डालने की आवश्यकता है। हमें चाहिए कि एक ख़ुदा तआला की रचना होने के नाते हम सब एक-दूसरे के साथ प्रेम और स्नेह को बढ़ावा दें और पारस्परिक सम्मान के रिश्तों को मज़बूत करें। यही वह ज़रिया है जिससे हम दुनिया को स्थायी शांति की ओर ले जा सकते हैं, और यही वह ज़रिया है जिसके माध्यम से मानवता अपने सृष्टिकर्ता के चरणों में आ सकती है। एक मुसलमान होने के नाते हमारा ईमान है कि यह जीवन अस्थायी है और इसके बाद की परलोक की ज़िंदगी ही असली और सच्ची ज़िंदगी है, जहाँ हमें अपने तमाम कर्मों का हिसाब देना होगा। इस दृष्टिकोण से हमें यह सोचना होगा कि हम अपने कल के लिए क्या भेज रहे हैं? दुनिया जिस तेज़ी से विनाश की ओर बढ़ रही है, हमें इसे रोकने के लिए अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए। यह जो परमाणु विनाश का रास्ता है जिस पर दुनिया बड़ी गति से चल रही है, अगर समय रहते इसे न रोका गया, तो आने वाली पीढ़ियाँ इसकी भारी कीमत चुकाएँगी, और इसके भयावह परिणामों से दुनिया ऐसी तबाही की शिकार होगी कि आने वाली नस्लें अपंग और विकलांग पैदा होंगी। इसलिए आज हमें यह देखना है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए कैसी ज़मीन और कैसी दुनिया की बुनियाद रख रहे हैं। अल्लाह करे कि उसकी मोहब्बत और उसकी मख़लूक़ की मोहब्बत हर इंसान के दिल में घर कर जाए। निःसंदेह, यही वह उद्देश्य है जिसके लिए इस मस्जिद फ़ज़्ल की स्थापना की गई थी। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हम सौ साल बाद भी उसी उद्देश्य के लिए प्रयत्नशील हैं और आज का यह कार्यक्रम भी उसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए आयोजित किया जा रहा है। अल्लाह करे कि हम अपने विचार और संप्रदाय से ऊपर उठकर इस समाज की भलाई के लिए काम करने वाले बनें। अल्लाह करे कि हम इस सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य को प्राप्त करने वाले बन सकें।"

(अल-फ़ज़्ल, 8 नवम्बर 2024)

क्यों न आवें ज़लज़ले, तक़्वा की राह गुम हो गई
इक मुसलमान भी मुसलमान सिर्फ कहलाने को है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 15 मार्च 2024 के जुमा के ख़ुत्बे में भी तीसरे विश्व युद्ध और उसके भयानक परिणामों से बचने के लिए हमारे तक़्वा (धार्मिकता) के स्तर को ऊँचा करने की आवश्यकता की ओर ध्यान दिलाया। आप फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला युद्ध और इसके ख़तरनाक परिणामों से बचाए। युद्ध की स्थिति में जाहिर है कि अहमदी भी इससे प्रभावित होंगे। अल्लाह तआला उन्हें इससे महफ़ूज़ रखे। इससे बचने के लिए भी हर अहमदी को अपने तक़्वा के स्तर को ऊँचा करना होगा। यही हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ दे।"

हज़रात! अहमदियों का हौसला इतना बुलंद होना चाहिए कि वे केवल अपनी और अपने संबंधियों की सुरक्षा की ही चिंता न करें, बल्कि यह जमाअत के हर व्यक्ति की वैश्विक ज़िम्मेदारी है कि वे सम्पूर्ण मानवता के अस्तित्व को बचाने के लिए प्रयास करें। इस सन्दर्भ में हज़ूर अनवर फ़रमाते हैं:

हज़ूर अनवर ने ईद-उल-फ़ित्र के ख़ुत्बे में, जो 2 मई 2022 को दिया गया, फ़रमाया:

"दुनिया आजकल तबाही की तरफ़ जा रही है और दुनिया को बचाना भी हमारी ज़िम्मेदारी है। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि दुनिया में बंदों के हक अदा करने की तरफ़ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अगर इंसानों के आपसी हक़ अदा किए जाते तो हम इराक़, शाम, अफ़ग़ानिस्तान में तबाही न देखते। यह भी एक ग़लतफ़हमी है कि परमाणु हथियार इस्तेमाल नहीं किए जाएंगे, जबकि इस बारे में बातें हो रही हैं और कोई भी इसकी गारंटी नहीं दे सकता। ख़ैर, इसका अंजाम बेहद ख़तरनाक हो सकता है। अब यह अहमदियों की ज़िम्मेदारी है कि लोगों को हुक़ूक़ुल-इबाद की अदायगी की तरफ़ ध्यान दिलाएँ। सोशल मीडिया पर फालतू बातों में वक़्त ज़ाया करने की बजाय, लोगों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाने की दावत दी जाए और यह समझाने की कोशिश की जाए कि सिर्फ़ ख़ुदा के हुक्मों की अदायगी से ही दुनिया में अमन क़ायम हो सकता है। यही तरीक़ा तब्लिग़ के नए रास्ते भी खोलेगा।"

(ख़ुत्बा ईद-उल-फ़ित्र फ़रमूदा 2 मई 2022, प्रकाशित अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल 6 मई 2022, पृष्ठ 16)

सैय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, अहमदी डॉक्टर्स असोसिएशन से मुख़ातिब होते हुए फ़रमाते हैं:

"हम जिस अशांत दौर में जी रहे हैं, उसमें जंग के काले बादल हमारे सिरों पर मंडरा रहे हैं। मुख़्तलिफ़ देशों के बीच विवाद इतनी शिद्दत से बढ़ रहे हैं कि सामने से जंगी आग अपना मुँह खोले खड़ी है। अल्लाह सबको इससे महफ़ूज़ रखे। इस जंग से बचने की दुआ के साथ हमें ऐसे क़दम भी उठाने चाहिए जिनसे हम इंसानियत को इस साफ़ नज़र आने वाली तबाही से बचा सकें। इस सिलसिले में मैं अमेरिका और बाकी सभी असोसिएशनों से यह कहना चाहता हूँ कि इस मामले में तेज़ी से असरदार, मुकम्मल और हर तरह की आपात स्थितियों से निपटने की भरपूर योजना बनाएँ।"

(अल-फ़ज़्ल, 21 नवंबर 2024)

सैय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने जुमा के ख़ुत्बे 3 मई 2024 में तीसरी जंग के बुरे असर से बचने के लिए तकब्बुर (घमंड) से बचने की हिदायत दी। फ़रमाया:

"बहरहाल, इन हालात ने घमंडी लोगों के घमंड तोड़ने के भी साधन पैदा कर दिए हैं और अब ऐसा लग रहा है कि अल्लाह तआला ने भी उनके घमंड तोड़ने के उपाय शुरू कर दिए हैं। कब पूरी तरह यह काम मुकम्मल होता है, यह अल्लाह बेहतर जानता है लेकिन बहरहाल, अब उनका घमंड टूटना शुरू हो गया है... अल्लाह तआला दुनिया की बड़ी ताक़तों को अक़्ल दे और इंसाफ़ से काम लें।"

हज़रात! आज दुनिया जिस तीसरी जंग के दहाने पर खड़ी है, उसकी सबसे बड़ी वजह दुनिया से अद्ल व इंसाफ़ का फ़ुक़दान (अभाव) है। सैय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के बड़े-बड़े मंचों पर जाकर उन्हें इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाया है कि जब तक इंसाफ़ के तक़ाज़े पूरे नहीं किए जाएँगे, दुनिया में अमन क़ायम नहीं हो सकता। यह नसीहत केवल दूसरों के लिए नहीं है, बल्कि सबसे पहले जमाअत के अफ़राद ही इन नसीहतों के मुख़ातिब हैं। जमाअत के अफ़राद को चाहिए कि वे हर स्तर पर इंसाफ़ क़ायम करें, चाहे वह दुनियावी मामलात हों या दीनी। इंसाफ़ के उसूलों पर चलें, तभी दुनिया में अमन आएगा और यही इंसाफ़ जब हमारे क़ौल और अमल की जड़ बनेगा, तब हम इस जंग के असरात से भी महफ़ूज़ रखे जाएँगे।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तीसरी जंग के ज़ाहिरी असरात और रेडिएशन से बचाव के लिए होम्योपैथिक दवाएँ भी बताई हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने रहमत और एहतियात के तौर पर *Carcinosin* और *Radium Brom* के होम्योपैथिक नुस्ख़े को एक ख़ास तरीक़े से इस्तेमाल करने का हुक्म दिया है। साथ ही

यह भी फ़रमाया कि दुआ करें कि अल्लाह तआला हर ख़ास-ओ-आम को अपनी हिफ़ाज़त में रखे। आमीन।

सैय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जुमा के ख़ुत्बे 22 नवंबर 2024 में जंगी हालात की शिद्दत से आगाह करते हुए फ़रमाया:

"इस वक़्त मैं यह भी कहना चाहता हूँ, जैसा कि सब जानते हैं, कि यूरोप में भी हालात बड़ी तेज़ी से जंग की तरफ़ जा रहे हैं। यूक्रेन और रूस की जंग फैलने का ख़तरा बढ़ता जा रहा है। यूरोप के बाक़ी देशों को भी धमकियाँ मिल रही हैं। अक़्सर जो अक़्ल वाले और अमन पसंद लीडर हैं, वे इस बारे में परेशान भी हैं। बहरहाल, दुआ करें कि अल्लाह तआला अहमदियों और अमन पसंद लोगों को इस जंग के असरात से महफ़ूज़ रखे और ये लोग जंग में ऐसे हथियार इस्तेमाल न करें जिनसे आने वाली नस्लें प्रभावित हों। मुसलमान देशों के लिए भी दुआ करें कि अल्लाह उन्हें भी अक़्ल और समझ दे और हक़ को पहचानने की तौफ़ीक़ दे। दूसरी बात यह कहना चाहता हूँ कि जो हालात तेज़ी से बिगड़े हैं और बिगड़ते जा रहे हैं, उनके चलते पहले भी कुछ हद तक लोगों में सजगता आई है लेकिन मैं एक बार फिर याद दिला दूँ कि घरों में दो-तीन महीने का राशन रखने की कोशिश करें। लेकिन सबसे अहम बात यही है कि अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल करने की कोशिश करें, उसकी रज़ा पाने की कोशिश करें, उससे रिश्ता जोड़ने और उसमें आगे बढ़ने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। आमीन।"

प्रिय श्रोताओं! ऐसे समय में जब दुनिया आग के किनारे पर खड़ी है, हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हमें इस विनाशकारी प्रभाव से सुरक्षित रहने के लिए अपने आचरण से इस्लाम की तालीम फैलाने की ओर ध्यान दिला रहे हैं, ताकि वैश्विक युद्ध के पश्चात एक स्वर्ग जैसा समाज स्थापित हो सके, जिसके रक्षक जमाअत के लोग हों। हज़ूर फ़रमाते हैं:

''आजकल इस्लाम के खिलाफ, मुसलमानों के खिलाफ बहुत बातें की जाती हैं, लेकिन जब यहां के माहौल में प्रेम, मोहब्बत और भाईचारा देखेंगे और हमारे ऊंचे नैतिक आचरण देखेंगे, हमारा अल्लाह तआला से संबंध देखेंगे तो बहुत से ऐसे लोग हैं जिनके दिमागों से यह शक और भ्रम दूर हो जाएंगे कि मुसलमान गलत काम करने वाले हैं, गलत तालीम देने वाले हैं। अतः इन दिनों में अपने कथन और आचरण से इस माहौल को ऐसा शांतिपूर्ण वातावरण बनाएं, बल्कि हमेशा अपनी ज़िंदगियों में इसे लागू करें, जिससे दुनिया पर ऐसा असर हो कि लोग कहें कि यही लोग हैं जो इस्लाम की असली तालीम पर अमल करने वाले हैं और इस्लाम की असली तालीम ही है जो दुनिया को सच्चा अम्न और सलामती दे सकती है। अतः यह एक खामोश तबलीग़ भी है जो बिना किसी साहित्य, बिना किसी दलील के आप लोग कर रहे होंगे। अगर हम अपनी ज़िंदगियों में असली इस्लामी तालीम का असल नमूना पैदा कर लें तो अपनी बैअत का अहद पूरा करने वाले बन जाएंगे। हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत तभी लाभ देगी जब हम दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देंगे, केवल खोखले नारों पर निर्भर रहने वाले नहीं होंगे।''

(ख़ुत्बा जुमा, 23 अगस्त 2024)

हज़ूर आगे फ़रमाते हैं:

''अतः इस उद्देश्य को हर अहमदी को याद रखना चाहिए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो अपने लिए पसंद करते हो, वह दूसरों के लिए पसंद करो। तो इस तालीम के अनुसार हर अहमदी का फर्ज़ बनता है कि इस तबलीग़ को, इस संदेश को जो इस्लाम का प्यार और मोहब्बत और अम्न से रहने का संदेश है, सुलह और मेल-मिलाप का संदेश है, दुनिया को बताएं और परिचित कराएं और फैलाएं, क्योंकि यही मानवता की रक्षा की गारंटी है, इसके अलावा कोई और चीज़ नहीं। अन्यथा आने वाली नस्लें विनाश और बर्बादी की खाई में गिरती चली जाएंगी और इन युद्धों की वजह से यह भी असंभव नहीं कि भविष्य में जन्म लेने वाली नस्लें अपंग, लंगड़ी और अपूर्ण पैदा हों।''

(18 अक्टूबर 2024)

प्रिय श्रोताओं! सैयदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

''बहुत ही सौभाग्यशाली वह व्यक्ति है जिसे दुआ पर ईमान है क्योंकि वह अल्लाह तआला की अजीब से अजीब क़ुदरतों को देखता है और ख़ुदा तआला को देखकर ईमान लाता है कि वह क़ादिर करीम ख़ुदा है।''

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 265-266, एडीशन 1984)

सैयदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तीसरी विश्वयुद्ध के विनाशकारी प्रभाव से बचने के लिए जमाअत के लोगों को हमेशा दुआओं की ओर प्रेरित किया है। हज़ूर अनवर का शायद ही कोई खुत्बा या तक़रीर हो जिसमें वह हमें दुआ की तरफ ध्यान न दिलाते हों। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने खुत्बा जुमा 5 अप्रैल 2024 में फ़रमाते हैं :

''युद्धों की आग से महफ़ूज़ रहने और उसके बाद के असरात से सुरक्षित रहने के लिए बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला हमें इससे बचाए। और अब ऐसा लग रहा है कि यह युद्ध सामने खड़ी नहीं, बल्कि अब तो शुरू हो चुकी है... अहमदियों को चाहिए कि वे खुद को अल्लाह के क़रीब करें और दुआओं में बेक़रारी पैदा करें ताकि इन शर से बच सकें। यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला इंसानियत को बचा ले और हमें दुआओं में भी अपना हक अदा करने की तौफ़ीक़ दे।''

जलसा सालाना जर्मनी 2024 के मौके पर सैयदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने विशेष दुआओं की प्रेरणा दी है। जिसकी पाबंदी के परिणामस्वरूप इंसान एक सुरक्षित क़िले में रहकर स्वयं को बचा सकता है। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

''मैं यहां एक तहरीक भी करना चाहता हूं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तीसरे रहमहुल्लाह का एक रुईया था कि उनको किसी बुज़ुर्ग ने कहा कि अगर जमाअत का हर फ़र्द, हर बड़ा दो सौ (200) दफ़ा यह दुरूद शरीफ़ पढ़े...''

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

और फिर आपने फ़रमाया कि जो लोग मध्यम आयु के हैं, अर्थात पंद्रह से पच्चीस वर्ष के लोग, वे भी कम से कम सौ (100) बार यह दुरूद शरीफ़ पढ़ें। बच्चे भी कम से कम तैंतीस (33) बार पढ़ें। छोटे उम्र के जो बच्चे हैं, उन्हें उनके माता-पिता तीन (3), चार (4) बार यह पढ़वाएं और साथ ही सौ (100) बार इस्तिग़फ़ार (أَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّأَتُوْبُ إِلَیْہِ) भी पढ़ें। इसी तरह मैं यह भी शामिल करता हूँ कि सौ (100) बार

رَبِّ کُلُّ شَیْءٍ خَادِمُکَ رَبِّ فَاحْفَظْنِیْ وَانْصُرْنِیْ وَارْحَمْنِیْ

का विर्द भी करें। इन दिनों में विशेष रूप से और सामान्यतः हमेशा के लिए इसे अपनाएं। आपको स्वप्न (दृष्टांत) में यही दिखाया गया था कि अगर ऐसा करोगे तो तुम एक सुरक्षित क़िले में महफ़ूज़ हो जाओगे जहाँ शैतान कभी दाखिल नहीं हो सकता और उस क़िले की दीवारें लोहे की बनी होंगी, जिनकी ऊँचाई आसमान तक पहुंचेगी। अतः कोई भी सुराख़ नहीं बचेगा जिससे शैतान हमला कर सके।

(उद्धृत: रिपोर्ट मजलिस मशावरत जमाअत अहमदिया 1968, दिनांक 5, 6, 7 अप्रैल 1968, पृष्ठ 233)

इन दिनों में जबकि शैतान हर चाल से हम पर व्यक्तिगत रूप से भी और समष्टिगत रूप से, समग्र रूप से दुनिया में हमले करने की कोशिश कर रहा है, उससे बचने का एकमात्र उपाय यह है कि विशेष रूप से दुआओं पर ज़ोर दें। और यह केवल जलसा के दिनों तक सीमित न हो, बल्कि हमेशा के लिए यह दुरूद शरीफ़ और अल्लाह का ज़िक्र, यह विर्द, अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बना लें। और इस पर हर एक को बच्चे को, बड़े को, औरत को, मर्द को सभी को ध्यान देना चाहिए।

(ख़ुत्बा जुमा, 23 अगस्त 2024)

इसके अलावा हज़ूर एक और ख़ुत्बे में फ़रमाते हैं:

''दुनिया की हालत, जैसा कि आप जानते हैं, दिन-ब-दिन ख़राब होती जा रही है। यह तबाही की ओर जा रही है। अमेरिका और दूसरी बड़ी ताक़तें इंसाफ़ से काम नहीं लेना चाहतीं। युद्ध लगातार बढ़ता चला जा रहा है। अल्लाह तआला अहमदियों और मासूमों को इसके भयानक और विनाशकारी असर से बचाए। इसके लिए अल्लाह तआला से संबंध में हमें बढ़ना होगा और दुआओं की तरफ़ बहुत ज़्यादा ध्यान देना होगा। इस ओर हर अहमदी को ध्यान देना चाहिए।''

(4 अक्टूबर 2024)

प्रिय श्रोताओं! दुनिया जो विनाश की ओर बढ़ रही है, उसकी एक अहम वजह आख़िरी ज़माने के ईमाम हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इनकार भी है। इसलिए लोगों को हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की ओर बुलाने की ज़रूरत है। इस संदर्भ में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

''दुनिया में मुसलमानों की सामान्य स्थिति के लिए भी दुआ करें। ये लोग भी ज़माने के ईमाम को मानकर अपना सम्मान दोबारा प्राप्त कर सकें। दुनिया में युद्ध की जो सामान्य स्थिति बन रही है, उसके लिए भी दुआ करें। जिस दिशा में दुनिया जा रही है, यह युद्ध तो लगता है कि अब ज़रूर होनी है, लेकिन अल्लाह तआला हर अहमदी और हर मासूम को उसके शर से सुरक्षित रखे।''

(ख़ुत्बा जुमा, 28 जून 2024)

अंत में मैं हज़ूर-ए-पुर्नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के एक इरशाद पर ही अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ। हज़ूर अनवर फ़रमाते हैं:

''दुनिया बड़ी भयानक तबाही की तरफ़ बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है। न मुसलमानों में इंसाफ़ रहा है, न ग़ैर-मुसलमानों में इंसाफ़ रहा है और न ही केवल इंसाफ़ नहीं रहा बल्कि सभी ज़ुल्मों की हदें पार कर दी गई हैं। अतः ऐसे समय में दुनिया की आंखें खोलने और ज़ुल्मों से बाज़ आने की ओर ध्यान दिलाकर तबाही की खाई में गिरने से बचाने का किरदार केवल जमाअत अहमदिया ही निभा सकती है। इसके लिए जहाँ हम में से हर एक को अपने-अपने दायरे में अमली कोशिश करनी चाहिए, वहीं अमली कोशिश के साथ हमें दुआओं की ओर भी बहुत ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है। मुसलमान देशों की नाइंसाफ़ियों और कर्मों की सज़ा ने जहाँ उन्हें आंतरिक फसादों में डाल रखा है, वहीं बाहरी ख़तरों ने भी बहुत तेज़ी से उन्हें घेर लिया है। बल्कि ये ख़तरे उनके दरवाज़ों तक पहुंच चुके हैं। प्रतीत होता है कि एक बड़ा युद्ध मुंह खोले खड़ा है और दुनिया अगर इसके परिणामों से अनभिज्ञ नहीं है तो लापरवाह अवश्य है। अतः ऐसे में मसीह मोहम्मदी के ग़ुलामों को अपना किरदार निभाते हुए दुनिया को विनाश से बचाने के लिए दुआओं का हक़ अदा करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। अल्लाह तआला हमें इसका हक़ अदा करने वाला बनाए और दुनिया को तबाही से बचा ले। आमीन।''

(फ़रमूदा: 26 अप्रैल 2013, मक्तूबा अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 17 मई 2013, पृष्ठ 7)

अल्लाह तआला हम सभी को इसकी तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन।

वा आख़िरु द'वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन।

★ ★ ★

पृष्ठ 9 का शेष

प्रातः 8 बजे आप इस्लामाबाद पहुँचे। वहाँ पुरुषों, महिलाओं तथा बच्चों की बड़ी संख्या ने आपका सजीव स्वागत किया और "आपका स्वागत है!" कहकर प्रसन्नता व्यक्त की।

एक आंतरिक मार्ग पर एक द्वार भी स्थापित किया गया था, जिस पर "स्वागत है, आपका हार्दिक अभिनंदन है" तथा "जी आया नूं" जैसे स्वागत-पत्र लगे हुए थे। इसके अतिरिक्त रंग-बिरंगी विद्युत सजावट द्वारा प्रकाश व्यवस्था की गई थी।

अहमदिया समुदाय के सदस्य अपने प्रिय नेता का स्वागत करने के लिए प्रातः पाँच बजकर पैंतालीस मिनट से ही इस्लामाबाद (टिलफोर्ड) पहुँचना आरंभ हो गए थे। आने वालों में पुरुषों और महिलाओं के साथ-साथ बड़ी संख्या में बच्चे भी सम्मिलित थे। इस्लामाबाद और उसके आसपास की शाखाओं ऑल्डरशॉट, ऐश, फ़ार्नहैम, बोर्डन और गिल्डफ़ोर्ड के अतिरिक्त लंदन और अन्य कुछ शाखाओं से भी लगभग पाँच सौ के निकट श्रद्धालु एकत्रित हुए थे, जो एक अनुमान के अनुसार अपने प्रिय मार्गदर्शक के स्वागत के लिए उपस्थित थे। इस अवसर पर बच्चे और बच्चियाँ अपने हाथों में छोटे ध्वज लेकर हर्षोल्लास के साथ उन्हें लहराते हुए अपने आका का स्वागत कर रहे थे।

जैसे ही हज़रत खलीफ़ा (खुदा तआला उनकी सहायता और रक्षा करें) वाहन से बाहर पधारे, श्रद्धालुओं ने अत्यंत जोश और भावना से ओत-प्रोत होकर नारे लगाए। दूसरी ओर बच्चियों का एक समूह मधुर स्वर में स्वागत गीत "तलअल-बद्रु अलैना मिं सनीय्यतिल विदा" गा रहा था।

एक बालक, अज़ीज़ मनीफ़ अहमद यासिर पुत्र लुक़मान अहमद यासिर को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि वह हज़रत खलीफ़ा की सेवा में पुष्पगुच्छ भेंट कर सके।

हज़रत खलीफ़ा ने करुणा और स्नेहपूर्वक पुरुषों तथा महिलाओं, जो दो भागों में खड़े थे, के पास जाकर उनके नारों और अभिवादन का उत्तर हाथ उठाकर दिया और सभी को "सलामुन अलैकुम" कहा, और फिर अपने निवास स्थान की ओर चले गए।

हज़रत खलीफ़ा (खुदा तआला उनकी सहायता करें) की अमेरिका यात्रा में, हज़रत बेगम साहिबा (खुदा तआला उनकी रक्षा करें) के अतिरिक्त जिन सदस्यों को काफ़िले में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनके नाम निम्नलिखित हैं

मुनीर अहमद जावेद साहिब (निजी सचिव), मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब (अतिरिक्त वित्त सचिव यूके), आबिद वहीद ख़ान साहिब (प्रेस एवं मीडिया कार्यालय यूके के प्रभारी), सखावत अली बाजवा साहिब (विशेष सुरक्षा विभाग), महमूद अहमद ख़ान साहिब (विशेष सुरक्षा विभाग), ख़्वाजा अब्दुल क़ुद्दूस साहिब (विशेष सुरक्षा विभाग), मिर्ज़ा लईक़ अहमद साहिब (विशेष सुरक्षा विभाग), अब्दुल माजिद ताहिर (अतिरिक्त प्रचार सचिव यूके)

अमेरिका से डॉक्टर तनवीर अहमद साहिब इस संपूर्ण यात्रा के दौरान काफ़िले के साथ नियुक्त रहे। अमेरिका के प्रमुख (अमीर साहिब) ने उन्हें यात्रा प्रारंभ होने से दो दिन पूर्व ही यूनाइटेड किंगडम भेज दिया था, जहाँ से वे काफ़िले के साथ रवाना हुए और इस्लामाबाद (यूके) वापसी तक पूरे समय साथ रहे।

अमेरिका से मुनअम नईम साहिब, चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमेरिका, इस संपूर्ण यात्रा के दौरान यात्रा प्रबंधों के उत्तरदायी के रूप में काफ़िले के साथ नियुक्त रहे। उन्हें भी अमीर साहिब अमेरिका द्वारा यात्रा प्रारंभ होने से दो दिन पहले यूके भेजा गया था, जहाँ से वे काफ़िले के साथ रवाना हुए और इस्लामाबाद (यूके) वापसी तक साथ ही रहे।

निम्नलिखित सौभाग्यशाली व्यक्तियों को अमेरिका में प्रवास के दौरान काफ़िले में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। ये श्रद्धालु हज़रत खलीफ़ा के आगमन से दो-तीन दिन पूर्व अपने निजी प्रबंध द्वारा अमेरिका पहुँचे थे, और वहाँ से हज़रत की अनुमति अनुसार काफ़िले में सम्मिलित हुए:

डॉक्टर अब्दुल मोमिन जदरान साहिब, मोहम्मद अहमद साहिब, नदीदम अहमद अमीनी साहिब, मलिक सज्जाद अहमद साहिब

एमटीए इंटरनेशनल यूके के निम्नलिखित सदस्य अमेरिका से कुछ कार्यक्रमों के सीधा प्रसारण, कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग और कवरेज के लिए इस यात्रा में सम्मिलित हुए:

मुनीर औदा साहिब (निर्देशक एमटीए प्रोडक्शन), तौक़ीर अहमद मिर्ज़ा साहिब, अदनान ज़ाहिद साहिब, ज़कीउल्लाह अहमद साहिब, कर्नल शाहिद अहमद साहिब

एमटीए अफ़्रीका की ओर से अफ़्रीकी देशों और वहाँ की मीडिया में इस यात्रा की कवरेज के लिए उमर सफ़ीर साहिब (निदेशक एमटीए अफ़्रीका) को सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

रिव्यू ऑफ़ रिलीजन्स के अंतर्गत इस यात्रा की पत्रकारिता और प्रचार हेतु आमिर सफ़ीर साहिब (संपादक पत्रिका "रिव्यू ऑफ़ रिलीजन्स") को भी इस यात्रा में भाग लेने का सम्मान प्राप्त हुआ।

मुख्य फ़ोटो विभाग (मख़ज़न-ए-तसावीर) से उमैर अलीम साहिब (प्रभारी विभाग) तथा ग़दीर अहमद साहिब को इस यात्रा में सम्मिलित होने का अवसर मिला, और उमैर अलीम साहिब संपूर्ण यात्रा के दौरान काफ़िले के सदस्य के रूप में साथ रहे।

इसके अतिरिक्त फरहाद अहमद साहिब (प्रचारक, एमटीए न्यूज़) ने प्रेस एवं मीडिया कार्यालय यूके की ओर से इस यात्रा में भागीदारी की।

खुदा तआला इन सभी सेवकों के लिए इस सेवा को शुभ एवं स्वीकार्य बनाए।

20 से 22 अक्टूबर 2018

अमीरुल मोमिनीन हज़रत खलीफतुल मसीह अल-खामिस (ईदाहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) का अमेरिका व ग्वाटेमाला दौरा, अक्टूबर-नवंबर 2018

मस्जिद बैतुस्समद के उद्घाटन समारोह के बाद अतिथियों के विचार, वाशिंगटन से ह्यूस्टन प्रस्थान, एक दिन ठहरने के बाद ग्वाटेमाला में आगमन

20 अक्टूबर 2018, शनिवार (अंतिम भाग)

मस्जिद बैतुस्समद के उद्घाटन समारोह पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के संबोधन के बाद अतिथियों की प्रतिक्रियाएँ (पिछले से जारी):

• एक महिला ने कहा: "मैं हर रविवार को चर्च में विश्व शांति के लिए प्रार्थना करती हूँ। हज़रत अनवर ने कहा है कि हमें एक-दूसरे के निकट आना चाहिए, एक-दूसरे को समझना चाहिए न कि धर्म, विश्वास या राष्ट्रीयता के आधार पर डरना चाहिए। हमें ऐसा ही होना चाहिए। मैं इसीलिए यहाँ आई हूँ। मेरी इच्छा थी कि मैं हज़रत अनवर से मिल सकूँ, पर यहाँ बहुत से लोग हैं, शायद यह संभव न हो।"

• एक छात्रा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के संबोधन ने हममें नई जान डाल दी है। यहाँ आकर मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है। उन्होंने कहा कि हम सभी मनुष्य हैं और जब हम सब एक समान हैं तो हमारे बीच किसी प्रकार की घृणा के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। उन्होंने यह भी कहा कि हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए कार्य करना है। ये बातें मेरे विश्वास को और मजबूत करने वाली हैं। यह अत्यंत प्रभावशाली संबोधन था।"

• कैप्टन जोसेफ कॉन्गर ने कहा: "कुछ समय से मेरा इस समुदाय से संपर्क है और यह बहुत सहयोगी समुदाय है। यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का संबोधन बहुत प्रभावी था। शांतिपूर्ण समाज के लिए हमें उच्च नेतृत्व की आवश्यकता है - जैसा कि हज़रत अनवर का अस्तित्व है।"

• राज्य सचिव जॉन रॉबिन स्मिथ ने कहा: "हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मिलकर बहुत अच्छा लगा। डिनर पर उनके समीप बैठना एक सम्मान की बात थी। उनका शांति स्थापना और अन्य धर्मों के सम्मान का संदेश शानदार था। पिछले चार वर्षों से मैंने देखा है कि अन्य धर्मों से संवाद करने के बहुत लाभ हैं। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के सुझाव निश्चित रूप से समाज में शांति और सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। ऐसे कार्यक्रम

समाज में शांति स्थापित करने के लिए अनिवार्य हैं।"

• पादरी जो मैथ ने कहा: "मैं आपके खलीफा की व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। उनके आने से वातावरण में एक विशेष प्रभाव छा गया था। उनका संदेश प्रेम और सच्चाई से परिपूर्ण था। आज की अज़ान ने भी हृदय को छू लिया। यह बिल्कुल सही समय पर आयोजित कार्यक्रम था। मैं बाल्टीमोर में अहमदिया मस्जिद में कई बार गया हूँ और मैं देख सकता हूँ कि जो उन्होंने कहा, वह वास्तव में व्यवहार में दिखता है। यह मस्जिद सभी के लिए खुली है। विभिन्न धर्मों के लोगों का यहाँ शांति पर चर्चा करना वह आवश्यक बात है जिसकी हमारे शहर और सम्पूर्ण विश्व को आवश्यकता है।

एक महिला अतिथि ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा: सबसे पहले तो यह एक अत्यंत उत्कृष्ट संध्या थी। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की उपस्थिति अत्यधिक प्रभावशाली थी। उनके प्रत्येक वाक्य में ऐसा आकर्षण था कि मैं उन्हें सुनकर आनंदित हो रही थी। मैं अपने क्षेत्र में कई बार प्रार्थना-स्थल जा चुकी हूँ, किंतु हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की वाणी सुनकर यह अनुभव हुआ कि वे अंतरात्मा से बोल रहे हैं। वे प्रार्थना-स्थल को शांति, प्रेम और सौहार्द्र का स्थान कह रहे थे और मैं स्वयं इसकी साक्षी हूँ। यहाँ आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। मैं कई अन्य वैश्विक नेताओं से भी मिल चुकी हूँ, किंतु हज़ूर अनवर के व्यक्तित्व में एक विशेष आकर्षण है। उनके शब्द हृदय से निकले प्रतीत हो रहे थे, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनमें कोई छिपा हुआ राजनीतिक उद्देश्य नहीं था, जो मुझे अत्यंत सराहनीय लगा। जो कुछ वे कह रहे थे, वह उनके अंतर्मन की सच्ची अभिव्यक्ति थी। प्रतीत हो रहा था कि यह व्यक्ति वही कह रहा है जो उसकी आत्मा की पुकार है। हज़ूर अनवर अत्यंत करुणाशील हैं, उनकी वाणी कोमल है और वे निःस्वार्थ भाव से संसार में शांति की स्थापना चाहते हैं। उनके कथनों में कहीं भी कोई गुप्त स्वार्थ अथवा उद्देश्य नहीं था।

बाल्टीमोर की महापौर कैथरीन प्यू ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से भेंट कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। आपके व्यक्तित्व में जो पहली अनुभूति हुई वह यह थी कि आपकी उपस्थिति से एक आत्मिक वातावरण उत्पन्न होता है। आपने जो शांति का संदेश दिया है, वह इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। केवल हमारे नगर में ही नहीं, बल्कि हमारे प्रांत, सम्पूर्ण अमेरिका तथा समस्त विश्व को इस संदेश की अत्यंत आवश्यकता है। मेरा विश्वास है कि यह संदेश प्रत्येक व्यक्ति को सुनना चाहिए। यदि हम इसे सुनें, तो हमें ज्ञात होगा कि संसार की समस्त समस्याओं का एकमात्र समाधान शांति है, और हम परस्पर प्रेम करना सीखेंगे। मुझे आज यहाँ आकर और हज़ूर अनवर से मिलकर अपार हर्ष हुआ है। उन्होंने सबको साथ लेकर चलने का जो संदेश दिया है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब हम वंचितों के लिए कोई भी कदम उठाएँगे, उसका लाभ हम सभी को मिलेगा। पारस्परिक प्रेम और सौहार्द्र का यह संदेश हम सबके लिए अत्यंत आवश्यक है। हमारे समाज में हिंसा के उपकरणों का अत्यधिक प्रचलन हो गया है; हमें एक-दूसरे को शिक्षित करना होगा, यह समझाना होगा कि जीवन मूल्यवान है, इसकी रक्षा करनी चाहिए, और हमें एक-दूसरे के अधिकारों की भी रक्षा करनी चाहिए, तभी समाज में सच्ची शांति स्थापित हो सकेगी।

एक तंत्रिका-चिकित्सक रॉबर्ट ड्यूबेरी भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उन्होंने कहा: यहाँ आकर मुझे अत्यंत आनंद की अनुभूति हुई। आपके आध्यात्मिक मार्गदर्शक का भाषण अत्यंत प्रेरणादायक और हृदयस्पर्शी था। उन्होंने सम्पूर्ण मानवता के लिए एक सार्वभौमिक संदेश प्रस्तुत किया। यदि उनके व्यक्तित्व को एक शब्द में वर्णित करना हो, तो उन्हें "शांति का मूर्त रूप" कहा जा सकता है।

बाल्टीमोर काउंटी पुलिस विभाग से श्री क्रिस कील ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा: आज का कार्यक्रम अत्यंत प्रभावशाली था। मैं सन् 2015 से इस समुदाय को देख रहा हूँ और यह निरंतर प्रेम, सौहार्द्र और शांति का प्रचार कर रही है। आज पहली बार मैंने आपके मार्गदर्शक से भी यही बातें सुनीं और मुझे यह समझ में आया कि इस मूल संदेश का स्रोत क्या है। आपके मार्गदर्शक के उत्कृष्ट चरित्र से यह गुण प्रकट होते हैं और प्रत्येक अनुयायी में गहराई से समा जाते हैं, जिन्हें वे अपने आचरण से प्रमाणित करते हैं। आपकी उपस्थिति यहाँ अत्यंत लाभकारी रही। विगत कुछ वर्षों से यहाँ के हालात कुछ कठिन रहे हैं और शांति व्यवस्था बनाए रखने वाली संस्थाओं को कुछ समुदायों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। यह अत्यंत सुखद है कि इतनी महान विभूति यहाँ पधारी हैं और उन्होंने सबको शांति का संदेश दिया है तथा एकजुटता की प्रेरणा दी है। हज़ूर अनवर के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता उनकी विनम्रता और आत्मिक निष्ठा है।

एक अतिथि ने अपनी अनुभूति साझा करते हुए कहा: इस कार्यक्रम से पूर्व भी मुझे हज़ूर अनवर से भेंट का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने आपके व्यक्तित्व में अत्यंत सरलता और विनम्रता देखी है। जैसे ही आप पधारे, आपके व्यक्तित्व में गरिमा और प्रभाव स्पष्ट अनुभव हुआ। आप प्रत्येक व्यक्ति की बात को ध्यानपूर्वक सुनते हैं। आपसे मिलकर यह अनुभव होता है कि आप मानवता के प्रति गहरा संवेदनशीलता और करुणा रखते हैं।

एक महिला ने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा: मैं हज़ूर अनवर के निकट नहीं थी और पहली बार उन्हें छायाचित्र-पटल (स्क्रीन) पर देखा। उन्हें देखते ही ऐसा प्रतीत हुआ मानो उनके व्यक्तित्व से ईश्वर का प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा हो। मैंने अनेक लोगों को इस विषय में टिप्पणी करते देखा है, और मैं स्वयं इसकी साक्षी हूँ। उनकी उपस्थिति में ऐसा प्रतीत होता है मानो ईश्वरीय प्रकाश की वर्षा हो रही हो।

श्री चक हार्ट (सार्जेंट, बाल्टीमोर काउंटी) ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए: जमाअत अहमदिया के मार्गदर्शक का भाषण अत्यंत विचारोत्तेजक और सशक्त था, जिसमें उन्होंने सामाजिक एकता, समाज में शांति की स्थापना और प्रार्थना-स्थल की मूल भावना पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने उन आपत्तियों और भ्रांतियों का भी उत्तर दिया जो आज के समय में मुसलमानों के संबंध में प्रचलित हैं। उनके संबोधन से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वास्तव में ज्ञान ही वह शक्ति है जो अज्ञानता का अंत करता है।

सुश्री मैरी मेरूची ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मैं आपकी संस्था के शिक्षाविभाग के लिए सम्मान-चिन्ह बनाती हूँ, अतः मेरा पहले से ही इससे एक परिचय रहा है। मैंने हज़रत खलीफ़तुल मसीह को दूरदर्शन के माध्यम से देखा था, किंतु आज पहली बार प्रत्यक्ष रूप में देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। उन्होंने अपने भाषण के माध्यम से जो संदेश हमें प्रदान किया, वह अत्यंत सुंदर, विचारोत्तेजक और इस संवेदनशील समय की पूर्णतः अनुकूल आवश्यकता है।"

मिस्टर रस एडवर्ड्स, सरकारी सूचना प्रौद्योगिकी संविदाकार ने कहा: आज मैंने पहली बार जमाअत अहमदिया के किसी आयोजन में भाग लिया। आपके खलीफ़ा का संदेश मुझे अत्यंत प्रिय लगा, जिसमें उन्होंने गैर-मुस्लिम जनों को यह आश्वासन दिया कि जमाअत अहमदिया की यह प्रार्थना-स्थली इस नगर में शांति का एक प्रतीक बनेगी।

मिस ग्रेस बायरली ने कहा: मैं एक सेवा-निवृत्त प्रोफ़ेसर हूँ और तीस वर्षों तक यहूदी तथा मुस्लिम समुदायों के साथ कार्य कर चुकी हूँ। आज जब मैंने इस्लाम के खलीफ़ा को देखा और उनका भाषण सुना, तो ऐसा प्रतीत हुआ मानो हमारी कैथोलिक समुदाय के धर्मगुरु पोप ही हमसे संबोधित हो रहे हों। खलीफ़ा का भाषण ऐसा लग रहा था जैसे वह अंधकार के परदों को चीर रहा हो। अतः मेरी आशा है कि लोग खलीफ़ा का संदेश सुनकर अज्ञानता को त्याग देंगे और इस नवीन युग की ज्योति में प्रवेश करेंगे।

मिस एन एचपी (नर्स) ने अपने भाव इस प्रकार प्रकट किए: आपके खलीफ़ा का भाषण सुनने से पहले मैंने उनके विषय में इंटरनेट पर जानकारी प्राप्त कर ली थी। इसीलिए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि खलीफ़ा की जो छवि मैंने इंटरनेट पर पढ़ी थी, वह उनकी वास्तविक शख़्सियत से पूरी तरह मेल खाती है एक कोमल स्वभाव और उत्तम चरित्र के स्वामी। उनका भाषण सरल भाषा में था, किंतु हृदयों को गहराई से छू जाने वाला। जो संदेश उन्होंने हमें अपने संबोधन से दिया, यदि उस पर अमल किया जाए, तो निश्चय ही हमारे नगर में और सम्पूर्ण समाज में शांति की स्थापना संभव है।

मिस्टर बिल मिलन (सेवानिवृत्त प्रिस्बिटेरियन पादरी) ने कहा: आज के इस आयोजन में आपकी जमाअत द्वारा जो आतिथ्य-सत्कार प्राप्त हुआ, उससे मैं अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ। आपके खलीफ़ा का भाषण सुनकर अच्छा लगा कि आप लोग धर्म के विषय में खुले हृदय से संवाद करने के इच्छुक हैं। साथ ही, खलीफ़ा साहिब ने अपने वक्तव्य में उन समस्याओं की भी चर्चा की, जिनसे आज की मुस्लिम दुनिया जूझ रही है। भाषण के अंत में खलीफ़ा साहिब का यह संदेश कि हमें मिल-जुलकर, अपने आचरण और प्रार्थनाओं के माध्यम से, एकजुट होकर शांति की स्थापना के लिए प्रयास करना चाहिए एक ऐसा अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश है, जिसमें हमारी पृथ्वी की रक्षा का मार्ग निहित है।

मिस ऐलेन क्रॉफर्ड (सेवानिवृत्त उच्च विद्यालय शिक्षिका) ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए: खलीफ़ा साहिब को देखकर मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि जैसे उनका व्यक्तित्व निष्कलंक है, वैसा ही उनका संदेश भी पूर्ण निष्ठा से युक्त है। खलीफ़ा की ओर से संसार में शांति स्थापित करने के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं, वे हम सबके लिए अनुकरणीय हैं। एक बात जिसने मुझे खिन्न किया, वह यह है कि खलीफ़ा साहिब को विशेष रूप से गैर-मुस्लिमों को यह आश्वासन देना पड़ा कि इस्लाम एक शांतिप्रिय धर्म है और इससे या मुसलमानों से भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है। किंतु मैं इस विश्वास के साथ यह भी कहना चाहती हूँ कि हज़ूर इस बात से अवगत होंगे कि हममें से अधिकांश लोग इस्लाम को एक शांतिपूर्ण धर्म ही मानते हैं।

★ ★

माली क़ुर्बानी के संबंध में जमाअत के सदस्यों के अनुपम उदाहरण और ख़ुदा तआला की विशेष कृपाएँ
(हुज़ूर अनवर के ख़ुत्बात-ओ-ख़ताबात की रोशनी में)

(रफ़ीक़ अहमद बेग, नाज़िर बैतुल्-माल आमद , क़ादियान तक़रीर जलसा सालाना क़ादियान 2024)

لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ (آل عمران آیت ۹۳)

यह तिलावत की गई आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम कभी भी सच्ची नेकी को नहीं पा सकते जब तक कि उन चीज़ों में से खर्च न करो जिन्हें तुम पसंद करते हो। और तुम जो कुछ भी खर्च करते हो, अल्लाह उसे अच्छी तरह जानता है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसकी तफ़्सीर बयान करते हुए फ़रमाया: "لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ"

यह आयत क़ुरआन करीम में सूरह बक़रः में उस स्थान पर है जहाँ पहला रुकू शुरू होता है। वहाँ मुत्तक़ी की निस्बत फ़रमाया गया है: "وَمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ", अर्थात् जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है, वे उसमें से खर्च करते हैं। यह तो पहले रुकू का वर्णन है। फिर इसी सूरह में कई स्थानों पर "इनफाक़ फी सबीलिल्लाह" (अल्लाह की राह में खर्च करने) की बड़ी ज़ोरदार ताकीद की गई है।... अतः तुम सच्ची नेकी नहीं पा सकते जब तक कि माल में से खर्च न करो। "مِمَّا تُحِبُّوۡنَ" का अर्थ मेरी दृष्टि में 'माल' है, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الۡخَیۡرِ لَشَدِیۡدٌ" (सूरह अल-आदियात: 9) अर्थात इंसान को माल से बहुत मोहब्बत है। अतः सच्ची नेकी पाने के लिए ज़रूरी है कि अपनी पसंदीदा चीज़, अर्थात माल, में से खर्च करते रहो।

(ज़मीमा अख़बार "बद्र", क़ादियाँ, 1 और 8 जुलाई 1909, हवाला: "हक़ाएकुल फ़ुरक़ान", जिल्द अव्वल, पृष्ठ 500, 501)

प्रिय श्रोतागणों! अल्लाह तआला ने इस युग में हमें ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की अज़ीम नेअमत से नवाज़ा है, जिसके ज़रिए हमारी तर्बियत और तज़्किया के साधन उपलब्ध हो रहे हैं। क़ुरआन करीम में तज़्किया-ए-नफ़्स (आत्मिक शुद्धि) का एक महत्वपूर्ण माध्यम इनफाक़ फी सबीलिल्लाह अर्थात अल्लाह की राह में खर्च करना बताया गया है। हज़ूर अनवर अक्सर जमाअत के लोगों को अल्लाह की राह में माल खर्च करने की बार-बार ताकीद फ़रमाते हैं। "इनफाक़ फी सबीलिल्लाह" की यह तहरीक और तरग़ीब कभी आयात-ए-क़ुरआनी और उनकी गहराई वाली तफ़्सीर के ज़रिए होती है, तो कभी आर्थिक क़ुर्बानियों की तरफ़ ध्यान दिलाने के लिए सहाबा-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मिसाली मालियाती क़ुर्बानियों का दिल को छू लेने वाला तज़किरा फ़रमाते हैं।

प्यारे आका के ख़ुत्बात और ख़िताबात में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा और आलमी जमाअत अहमदिया के मुखलेसीन की मालियाती क़ुर्बानियों की ईमान अफ़रोज़ दास्तानें हमारे ईमान और यक़ीन को मज़बूत करती हैं। इन मालियाती क़ुर्बानियों के ये वाक़िआत सहाबा की क़ुर्बानियों की याद ताज़ा कर देते हैं। क़ुर्बानियों के इन वाक़िआत को देखकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह शेर खुद-ब-खुद ज़ुबान पर आ जाता है:

"मुबारक वो जो अब ईमान लाया,
सहाबा से मिला जब मुझ को पाया।"

यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की एक भारी दलील है कि आपकी जमाअत के अफ़राद में नेकी, तक़वा और तज़्किया में ग़ैर-मामूली तरक़्क़ी पाई जाती है। इसलिए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"जो कुछ तरक़्क़ी और तब्दीली हमारी जमाअत में पाई जाती है, वह ज़माना भर में इस वक़्त किसी और में नहीं है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द दस, पृष्ठ 243, एडीशन 1985, मक्तूबा इंग्लैंड)

और आपने यह भी फ़रमाया:

"मैं ख़ुदा की कसम खा कर कह सकता हूँ कि कम-अज़-कम एक लाख आदमी मेरी जमाअत में ऐसे हैं जो सच्चे दिल से मुझ पर ईमान लाए हैं और नेक अमल बजा लाते हैं। मैं देखता हूँ कि मेरी जमाअत ने जितनी नेकी और सलाहियत में तरक़्क़ी की है, यह भी एक मोजिज़ा है। हज़ारों आदमी दिल से फ़िदा हैं, अगर आज उन्हें कहा जाए कि अपने तमाम अमवाल से दस्तबरदार हो जाओ, तो वे दस्तबरदार हो जाने के लिए तैयार हैं।"

(सीरतुल महदी, हिस्सा अव्वल, पृष्ठ 145)

प्रिय श्रोतागणों! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के लोगों की यह फ़िदाइत और मालियाती क़ुर्बानी के बेमिसाल नमूने सिर्फ़ आपके मुबारक दौर तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि आज भी "इनफाक़ फी सबीलिल्लाह" (अल्लाह की राह में खर्च करने) के बेमिसाल मंज़र देखे जा रहे हैं। इसलिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"तो आपसे सीधे फ़ैज़ पाने वालों ने यह मक़ाम हासिल किया और आपसे ख़ुशनूदी की सनद प्राप्त की। लेकिन क्या यह इख़्लास और वफ़ा वक़्त के गुज़रने के साथ ख़त्म हो गया? यक़ीनन नहीं। जैसा कि मैंने कहा, आज भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में ऐसे लोग मौजूद हैं मर्दों में से भी, औरतों में से भी और बच्चों में से भी जो इख़्लास और वफ़ा में आगे बढ़े हुए हैं। यह चंद लोग और चंद ख़ास जगहों तक महदूद नहीं हैं, बल्कि हज़ारों मिसालें हैं जो दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों में फैली हुई हैं, जो لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ की सही समझ रखते हैं। जो क़ुर्बानियों में लगातार आगे बढ़ते चले जा रहे हैं। जिनमें पुराने भी हैं और वो भी जो हाल ही में जमाअत में शामिल हुए हैं बल्कि कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें शायद चंद महीने ही हुए हों। जिनकी प्राथमिकताएँ पहले दुनियावी ख़्वाहिशात थीं, लेकिन अहमदियत क़ुबूल करने के बाद वे दीन की ख़ातिर अपना पसंदीदा माल या जो कुछ भी उनके पास है, क़ुर्बान करने को तैयार हो गए। यह वह इंक़लाब है जो इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पैदा किया। लोगों की प्राथमिकताएँ बदल दीं। और आज भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अल्फ़ाज़ उन पर सादिक़ आते हैं कि ऐसे लोग हैं जिनकी क़ुर्बानियों को देखकर हैरत होती है।"

आज हमारी जमाअत में हममें से बहुत से लोग ऐसे हैं जो इस बात की गवाही देते हैं कि उनके बुज़ुर्गों ने मुश्किलें सह कर अपनी पाक कमाई में से जो क़ुर्बानियाँ दीं, अल्लाह तआला ने उनकी नस्लों के माल और जान में बेहिसाब बरकत डाल दी।

हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु का एक वाक़िआ है, जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आपके बारे में लिखा है लेकिन हर बार पढ़ने से ईमान में ताज़गी पैदा होती है और क़ुर्बानी की एक नई रूह उत्पन्न होती है। आप फ़रमाते हैं :

"अगर मैं इजाज़त देता तो वे सब कुछ इस राह में फ़िदा करके, अपनी रूहानी रिफ़ाक़त की तरह जस्मानी रिफ़ाक़त और हर दम सोहबत में रहने का हक़ अदा कर देते। उनके कुछ ख़तों की चंद सतरें बतौर नमूना नाज़रीन के सामने पेश करता हूँ :

'मैं आपकी राह में क़ुर्बान हूँ। मेरा जो कुछ है, मेरा नहीं, आपका है। हज़रत पीर-ओ-मुर्शिद, मैं पूरी सच्चाई से अर्ज़ करता हूँ कि मेरा सारा माल-ओ-दौलत अगर दीन की इशाअत में खर्च हो जाए तो मैं मुराद को पहुँच गया। अगर 'बराहीने अह्मदिया' की तबीअ (छपाई) में ताख़ीर की वजह से ख़रीदार परेशान हैं, तो मुझे इजाज़त दीजिए कि यह अदना सी ख़िदमत बजा लाऊँ कि मैं अपने पास से उन सबकी कीमत अदा कर दूँ। हज़रत पीर-ओ-मुर्शिद, यह नाकारा और शर्मिंदा अर्ज़ करता है कि अगर मंज़ूर हो तो यह मेरी सआदत होगी। मेरी ख्वाहिश है कि 'बराहीन' की तबीअ का सारा ख़र्च मुझ पर डाल दिया जाए, और फिर जो भी आमद हो, वह रकम आपकी ज़रूरतों में खर्च हो। मुझे आपसे निस्बत-ए-फ़ारूक़ी है और मैं सब कुछ इस राह में फ़िदा करने को तैयार हूँ। दुआ फ़रमाइए कि मेरी मौत सिद्दीक़ों की मौत हो।'"

(फत्ह-ए-इस्लाम, *रूहानी ख़ज़ाइन*, जिल्द 3, पृष्ठ 36)

(यानी वे पैसे भी दे रहे हैं और यह भी कह रहे हैं कि इसके बाद जो आमद होगी, वह भी इसी काम को जारी रखने के लिए खर्च हो।)

फिर हज़रत मुन्शी ज़फ़र अहमद साहिब की मालियाती क़ुर्बानी का एक अज़ीमुल-शान वाक़िआ मिलता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लुधियाना में एक ज़रूरी तबलीग़ी इश्तिहार छपवाने के लिए साठ रुपये की ज़रूरत पेश आई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मुन्शी ज़फ़र अहमद साहिब से इसका वर्णन किया कि क्या आपकी जमाअत इस रकम का इंतेज़ाम कर सकेगी? हज़रत मुन्शी ज़फ़र अहमद साहिब ने अर्ज़ किया: हज़रत, इंशा अल्लाह कर सकेगी। इसलिए उन्होंने जमाअत के किसी फ़र्द से वर्णन किए बग़ैर अपनी बीवी का एक ज़ेवर बेचकर साठ रुपये हासिल किए और हज़रत साहिब की ख़िदमत में पेश कर दिए।

कपूरथला की जमाअत के एक और मुख़्लिस सहाबी, हज़रत मुन्शी अरोड़े ख़ान साहिब, अपने दोस्त मुन्शी ज़फ़र अहमद साहिब से इस बात पर छह महीने तक नाराज़ रहे कि उन्होंने उन्हें मालियाती क़ुर्बानी में हिस्सा लेने से महरूम रखा और अकेले ही सारी क़ुर्बानी पेश कर दी। अल्लाह! अल्लाह! ये वो फ़िदाई लोग थे जिन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अता किया गया। ज़रा ग़ौर फ़रमाइए कि हज़रत साहिब जमाअत से मदद तलब फ़रमाते हैं, लेकिन एक अकेला और ग़रीब शख़्स खड़ा

होता है और जमाअत से वर्णन किए बग़ैर अपनी बीवी का ज़ेवर बेचकर पूरी रकम का इंतेज़ाम कर देता है। और फिर हज़रत साहिब के सामने यह नहीं कहता कि यह रकम मैं दे रहा हूँ या जमाअत ताकि हज़रत साहिब की दुआ पूरी जमाअत को पहुंचे।

और इसके मुक़ाबिल में दूसरा फ़िदाई यह जानकर कि हज़रत साहिब को एक ज़रूरत पेश आई और मैं इस ख़िदमत से महरूम रह गया, इस क़दर बेचैनी महसूस करता है कि अपने दोस्त से छह महीने तक नाराज़ रहता है कि तुमने हज़रत साहिब की इस ज़रूरत का मुझसे वर्णन क्यों नहीं किया।

(*अल-फज़ल*, 4 सितंबर 1914, हवाला: *अस्हाब-ए-अहमद*, रिवायात हज़रत मुन्शी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी, पृष्ठ 61, 62)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

''पाँचवाँ ज़रिया जो अल्लाह तआला ने असल मक़सद को पाने के लिए निर्धारित किया है, वह मुजाहिदा (प्रयास और संघर्ष) है। अर्थात्, अपने माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करना, अपनी ताक़तों को अल्लाह की राह में लगाना, अपनी जान को अल्लाह की राह में देना और अपनी अक़्ल को अल्लाह की राह में इस्तेमाल करना यही उसका रास्ता तलाश करने का तरीक़ा है। जैसा कि वह फ़रमाता है... अपने मालों, अपनी जानों और अपनी तमाम शक्तियों के साथ अल्लाह की राह में खर्च करो। और जो कुछ हमने तुम्हें अक़्ल, इल्म, फ़हम और हुनर आदि दिया है, वह सब कुछ अल्लाह की राह में लगा दो। जो लोग हमारी राह में हर तरह से कोशिश करते हैं, हम उन्हें अपनी राहें दिखा दिया करते हैं।''

(इस्लामी उसूल की फ़लासफ़ी, रुहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 10, पृष्ठ 418, 419)

फिर आप अपनी एक रुईया (स्वप्न) और एक इल्हाम (प्रकाशना) का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं:

''मैंने एक रुईया में देखा कि एक दीवार पर एक मुर्ग़ी बैठी है। वह कुछ बोल रही है। सारे जुम्ले याद नहीं रहे लेकिन आख़िरी जुम्ला जो याद रहा वह यह था: *"इन कुंतुम मुस्लिमीन"* अगर तुम मुसलमान हो। इसके बाद मेरी नींद खुल गई। मेरे दिल में खयाल आया कि इस मुर्ग़ी ने ये क्या अल्फ़ाज़ बोले हैं। फिर इल्हाम हुआ: *"अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाह इन कुंतुम मुस्लिमीन"* अल्लाह की राह में खर्च करो, अगर तुम मुसलमान हो। फ़रमाया कि मुर्ग़ी का ख़िताब और इल्हाम का ख़िताब, दोनों हमारी जमाअत की तरफ़ है। चूँकि इन दिनों रुपयों की ज़रूरत है लंगर (सामूहिक रसोई) में भी बहुत खर्च है और इमारत पर भी बहुत खर्च हो रहा है, इसलिए जमाअत को चाहिए कि इस हुक्म की तरफ़ तवज्जो दें। फिर फ़रमाया कि मुर्ग़ी अपने अमल से दिखाती है कि अल्लाह की राह में कैसे खर्च करना चाहिए, क्योंकि वह इंसान की ख़ातिर अपनी सारी जान क़ुर्बान करती है और इंसान के लिए ज़बह् की जाती है। इसी तरह वह मुर्ग़ी मेहनत और मशक़्क़त के साथ हर रोज़ इंसान के लिए अंडा देती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: सो हमारी जमाअत के मोमिन अगर हमारी आवाज़ नहीं सुनते तो उस मुर्ग़ी की आवाज़ को तो सुनें। लेकिन सब बराबर नहीं होते। कितने ही मुखलिस ऐसे हैं जो अपनी ताक़त से ज़्यादा सेवा में लगे हुए हैं। अल्लाह तआला उन्हें अज्र-ए-ख़ैर दे।''

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 582, 583, "बदर", 8 दिसम्बर 1905)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ''दो आदमियों के सिवा किसी पर रश्क नहीं करना चाहिए एक वह जिसे अल्लाह तआला ने माल दिया और उसने उसे राहे-हक़ में खर्च कर दिया; और दूसरा वह जिसे अल्लाह तआला ने समझ, दानाई और इल्म व हिकमत दी जिससे वह लोगों के फैसले करता है और लोगों को सिखाता है।''

(बुख़ारी किताबुज़्-ज़कात बाब: इनफाक़ुल माल फी हक़्क़िही)

तो यह इल्म व हिकमत भी एक नेअमत है। हमारे मुखालिफ़ जो हर वक़्त इस बात पर कुढ़ते रहते हैं कि जमाअत के अफ़राद चंदा क्यों देते हैं चंदा हम अपनी जमाअत को देते हैं, तुम्हें इससे क्या? कभी यह शोर होता है कि फलाँ दुकानदारों का बायकॉट कर दो कि उनसे चीज़ें नहीं ख़रीदनी क्योंकि वह मुनाफ़े में से चंदा देंगे। कहते हैं, ''तुम्हारे पैसों से चंदा जाएगा।'' हमारे "शिज़ान" जूस के ख़िलाफ़ अक्सर बड़ा मोर्चा उठता है कि ये चंदा देते हैं। और हुकूमत को भी ये मशवरा दिया जाता है और मुखालिफ़ीन का यह मुतालबा होता है कि जमाअत के तमाम फंड हुकूमत अपने कब्ज़े में ले ले। तो ये बेचारे हसद की आग में जलते रहते हैं, क्योंकि इनकी सूखी ज़मीन में यह बरकत आ ही नहीं सकती। और फिर सिवाय हसद के इनके पास कुछ नहीं बचता।

हम तो इस बात पर ख़ुश हैं कि अल्लाह के हुक्मों पर अमल कर रहे हैं, और इस बात से कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हम पर रश्क किया है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम तो हर वक़्त इसी फ़िक्र में रहते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से कोई तहरीक हो और हम उस पर अमल करें। अमीर तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार खर्च कर देते थे, लेकिन ग़रीब भी पीछे नहीं रहते थे। वे भी अपना हिस्सा डालते रहते थे चाहे वह शबनम के क़तरों के बराबर ही क्यों न हो।

हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब सदक़ा करने का हुक्म देते तो हम में से कोई बाज़ार जाता और वहाँ मेहनत-मज़दूरी करता और मज़दूरी के तौर पर जो कुछ भी, जैसे थोड़ी अनाज आदि मिलती, वह उसे सदक़ा कर देता। यह कोशिश होती कि हम इस नेक काम में हिस्सा लें, और कमाकर हिस्सा लें। और रावी बयान करते हैं कि उनमें से कुछ ऐसे थे जिनके पास एक-एक लाख दिरहम थे जो पहले मज़दूरी करके चंदा दिया करते थे।

(बुख़ारी किताबुल इजारा बाब: मन आज़र नफ़्सहु लियह्मिल अला ज़हिहि सुम्मा तसद्दक बिहि...)

तो यह है बरकत क़ुर्बानी की। इसलिए जो लोग यह ख़याल करते हैं कि वे बहुत गरीब हैं, कुछ कहते हैं कि हालात इज़ाज़त नहीं देते कि चंदा दे सकें, इसलिये मुआज़रत (माफ़ी) करते हैं, उन्हें सोचना चाहिए कि चंदा न देकर वे अल्लाह तआला के फ़ज़ल और वादों से महरूम हो रहे हैं। पाकिस्तान में भी ग़रीबी बहुत ज़्यादा है, लेकिन वहाँ अल्लाह के फ़ज़ल से लोग हर तहरीक में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं, चंदा देते हैं... तो जो अहमदियों को इस राज़ का इल्म है, वे इतनी बढ़-चढ़ कर चंदा देते हैं कि कभी-कभी उन्हें रोकना पड़ता है, लेकिन उनका जवाब यह होता है, ''क्या आप लोग हमारी थैलियों का मुँह बंद करना चाहते हैं? हम ने अपने ख़ुदा से एक सौदा किया हुआ है, आप इसके बीच में रुकावट न डालें।''

यह इज़्हार दुनिया के हर जगह, हर क़ौम में नज़र आता है, और अहमदी समाज में हर क़ौम में नज़र आना चाहिए। जिनमें कमी है, उन्हें भी इस तरफ़ तवज्जो देनी चाहिए। और अल्लाह के फ़ज़ल से बड़ी तादाद ऐसी है जो इस रवैये का इज़्हार करती है, चाहे वह अफ़्रीका के गरीब मुल्क हों या अमीर मुल्क। यह न कोई समझे कि अफ़्रीका के गरीब लोग सिर्फ़ अपने ऊपर ही खर्च करवा रहे हैं, उनमें भी बड़े-बड़े उच्च क़ुर्बानी करने के मानक क़ायम करने वाले हैं और अपनी तौफ़ीक़ के मुताबिक़ दूसरों को भी चंदा देने वाले हैं। अब घाना की मिसाल देती हूँ, हमारे बड़े उच्च क़ुर्बानी करने वाले भी हैं, एक हमारे यूसुफ़ ऑड वसी साहब हैं, जो लोकल मिशनरी भी थे, बल्कि अब भी हैं, लेकिन ऑनरेरी। वे कुछ दवाइयाँ आदि भी बनाते थे, शायद उनका छोटा सा कारोबार था। और वे बीमार भी थे, उनकी टाँग में एक गहरा ज़ख़्म था जो हड्डी तक चला गया था, बड़ी तकलीफ़ में रहते थे। तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चौथें रहमहुल्लाह के इलाज और दुआ से अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया, ज़ख़्म ठीक हो गया। और इसके बाद उन्होंने पहले से बढ़कर जमाअत की ख़िदमत करना शुरू कर दिया। और कारोबार में भी, क्योंकि उन्हें कुछ जड़ी-बूटियाँ बनाने का शौक़ था, तो ऐसी दवाइयाँ बनाई जिनसे कारोबार खूब चमका और पैसे की इतनी फ़रावानी हुई कि जिसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे, लेकिन यह पैसे पर बैठ नहीं गए, बल्कि अपने वादे के मुताबिक़ जमाअत के लिए बेइंतिहा खर्च किया और कर रहे हैं। विभिन्न इमारतें और मस्जिदें बनवाईं। और बड़ी-बड़ी शानदार मस्जिदें बनवाईं, छोटी-छोटी मस्जिदें नहीं। और अब भी हम हमेशा क़ुर्बानी के लिए तैयार हैं।

तो जमाअत अहमदिया में जो विभिन्न माली क़ुर्बानी की तहरीकें होती हैं, ये अल्लाह तआला के क़रीब ले जाने और दिलों को पाक करने की कड़ियाँ हैं। अल्लाह तआला अपने रास्ते में खर्च करने का हुक्म देते हुए फ़रमाता है: *وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللهِ* (अल-हदीद: 11), ''तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते?'' तो अपनी ज़िंदगियों को संवारने के लिए माली क़ुर्बानियों में हिस्सा लेना बेहद ज़रूरी है, बल्कि यह भी तंवीह (चेतावनी) है कि जो अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, वे अपने आप को हलाक़त में डाल रहे हैं। जैसे कि वह फ़रमाता है:

وَأَنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ (अल-बकरा: 196), ''और अल्लाह के रास्ते में माल खर्च करो और अपने हाथों से अपने आप को हलाक़त में न डालो।''

तो जैसा कि मैंने कहा, ये माली तहरीकें जो जमाअत में होती हैं, या ज़रूरी चंदों की तरफ़ जो तवज्जो दिलाई जाती है, ये सब ख़ुदा तआला के हुक्मों के मुताबिक़ हैं। तो हर अहमदी को अगर वह अपने आप को हक़ीकी तौर पर हज़रत मसीह मआूद अलैहिस्सलाम की जमाअत से मन्सूब करता है और करना चाहता है, अपनी ईमान की हिफाज़त के लिए माली क़ुर्बानियों की तरफ़ तवज्जो देनी चाहिए। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक बड़ी तादाद ऐसी है जो इस क़ुर्बानी में हिस्सा लेती है...

जैसा कि मैंने कहा, जमाअत में बहुत तादाद है जो दिल खोलकर चंदा देने वाली है और अल्लाह की राह में खर्च करती है, लेकिन ऐसे भी लोग हैं जो अच्छी-ख़ासी आमदनी होती है तो हिले बहाने तलाश रहे होते हैं। बहुत से अपने ख़र्चे शामिल करने के बाद कहते हैं कि असल आमदनी तो हमारी यह है, इस पर हम चंदा देंगे, या इसके

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 15-22 May 2025 Issue No. 20-21

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

मुताबिक़ हम चंदा देंगे, हमारी आमदनी कोई नहीं है, हालात बहुत ख़राब हैं। तो उन्हें भी सोचना चाहिए, नाशुक्राई नहीं करनी चाहिए। इस नाशुक्राई के कारण जो अच्छे--ख़ासे हालात ठीक हैं, वह भी ख़राब हो सकते हैं। अल्लाह तआला को धोका नहीं दिया जा सकता। अल्लाह तआला तो यही कहते हैं कि मेरी राह में वही माल खर्च करो जो तुम्हें सबसे ज़्यादा पसंद है, अपनी ज़रूरतों को पीछे डालो और अल्लाह की राह में खर्च करो। हज़रत अक़्दस मसीह मऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: ''ख़ुदा की रज़ा तुम किसी तरह पा ही नहीं सकते जब तक तुम अपनी रज़ा छोड़कर, अपनी लज़्ज़तों को छोड़कर, अपनी इज़्ज़त को छोड़कर, अपना माल छोड़कर, अपनी जान छोड़कर उसकी राह में वह सख्ती न उठाओ जो मौत का नज़ारा तुम्हारे सामने पेश करती है। लेकिन अगर तुम वह सख्ती उठा लोगे तो एक प्यारे बच्चे की तरह ख़ुदा की गोद में आ जाओगे और तुम उन रास्तबाज़ों के वारिस किये जाओगे जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। और हर एक नेअमत के दरवाज़े तुम पर खोले जाएँगे... लेकिन अगर तुम अपने नफ़्स से दरहक़ीक़त मर जाओगे तब तुम ख़ुदा में ज़ाहिर हो जाओगे। और ख़ुदा तुमारे साथ होगा। और वह घर बरकती होगा जिसमें तुम रहोगे और उन दीवारों पर ख़ुदा की रहमत नाज़िल होगी जो तुम्हारे घर की दीवारें हैं और वह शहर बरकती होगा जहाँ ऐसा आदमी रहता होगा।''

(रिसाला अल-वसीयत, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 20, पृष्ठ 308-307)

क़ुर्बानियों के कुछ नमूने मैं इस वक़्त पेश करता हूँ। जैसा कि हज़रत मसीह मऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मुश्किल से बदन पर लिबास होता है लेकिन इख़्लास और वफ़ा में बढ़े हुए हैं, इस की एक मिसाल देता हूँ। अफ्रीका के मुल्क माली के एक मुखलिस का वाक़िया बयान करते हुए वहां के मुबल्लिग लिखते हैं कि उनकी पोस्टिंग माली के रीजन सिगो (Segou) में हुई। एक दिन नमाज़ जुमे की अदाईगी के बाद मु'लिम साहब ने एक शख़्स को विनीत से मिलवाया कि ये मौलवियों के सबसे बड़े ख़ानदान से हैं और उन्होंने बै'त की है। उन्होंने कहा कि मैं चंदा देने आया हूँ क्योंकि मैंने आज रेडियो में ख़लीफ़तुल मसीह का ख़िताब चंदे के बारे में सुना है। कहते हैं विनीत ने उन्हें इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह की बरकात बताने के लिए आयत لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ सुनाई, तो वह बहुत हैरान हुए और कहने लगे कि मैंने रेडियो पर जो ख़िताब सुना था उसमें भी यही आयत सुनी थी। सोचा था कि पाँच हज़ार सिफ़ा चंदा दूँ, मगर बाद में शैतान ने दिल में वसवसा डाल दिया कि सिर्फ़ दो हज़ार सिफ़ा ही काफ़ी है, लेकिन अब जब आपने यही आयत दोबारा सुनाई है तो मेरे दिल को यक़ीन हो गया कि यह अल्लाह तआला का ही नज़ाम है और अब मैं पाँच हज़ार सिफ़ा ही चंदा दूँगा। चूँकि उन्होंने पाँच हज़ार सिफ़ा चंदा दिया तो अल्लाह के फ़ज़्ल से नवमबैयिन माली क़ुर्बानी में भी अब बहुत आगे बढ़ रहे हैं। (पृ. 47)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस ने 6 नवम्बर 2011 को आईवरी कोस्ट के एक नवमबैय का यह इमां-आफ़रोज़ वाक़िया बयान फ़रमाया। हमारे आईवरी कोस्ट के मुबल्लिग साहब लिखते हैं कि हमारे एक दोस्त आलिद वुद्रागो साहब (Alido Oudrago) ने 2009 के आख़िर में बै'त की और बै'त के पहले दिन से ही अपनी आमदनी का हिसाब करके बाक़ायदा शरह के मुताबिक़ चंदा अदा करना शुरू कर दिया। इस दौरान उन्होंने चंदे की बे-शुमार बरकातों का मुआयना किया। एक दिन जमाअत के पुराने मेंबर्स के साथ इन बरकातों का वर्णन कर रहे थे। उन पुराने मेंबर्स में से एक जिन्होंने 2004 में बै'त की थी, इन वाक़ियात को सुनते हुए अपना चंदा दो हज़ार फ्रैंक से बढ़ाकर पाँच हज़ार फ्रैंक सिफ़ा करने की हामी भर ली। कहते हैं कि अभी अदा करना शुरू नहीं किया था कि उन्होंने देखा कि उनकी आमदनी में भी गैर--मामूल इज़ाफ़ा हुआ है, चूँकि वह पुराने मेंबर मेरे पास आए और सारा वाक़िया बयान करके कहा कि उन्होंने पाँच हज़ार फ्रैंक सिफ़ा की हामी भरी थी मगर अब से मैं पाँच हज़ार के बजाय दस हज़ार फ्रैंक सिफ़ा माहाना अदा करूंगा और फिर इस हिसाब से अदा करना शुरू कर दिया। और इस तरह बेहिसाब और मेंबर्स हैं जो चंदे में आगे बढ़ रहे हैं।

9 नवम्बर 2012 के ख़ुत्बे जुमा में हज़रत ने फ़रमाया; कि किर्गिस्तान से हमारे मुबल्लिग लिखते हैं कि एक किर्गिज़ दोस्त जो मार्ट साहब ने 2006 में बै'त की थी, बहुत ही नेक फ़ितरत नौजवान हैं। बै'त के फौरी बाद हमारे मुबल्लिग ने चंदे के बारे में समझाने के लिए जरा मज़ाक करते हुए कहा कि दूसरे लोग तो अपनी जमाअत में शामिल करने के लिए पैसे देते हैं, जबकि हमारी जमाअत में दाख़िल हो तो हम उससे पैसे लेते हैं। जिस पर उन्होंने कहा कि माहाना तीन सौ किर्गिज़ चंदा आम अदा किया करूंगा। कुछ अरसे के बाद ही उन्होंने चार सौ कर दिए, फिर कुछ वक्त गुजरने के बाद आठ सौ कर दिए। फिर कुछ मुद्दत के बाद ख़ुद ही बिना किसी के कहने के एक हज़ार सुम माहाना अदा करना शुरू कर दिया।

अमीर साहब फ्रांस मरोक्को के दौरे पर गए तो कहते हैं वहां नौ अहमदी अज़ाब को क़ुर्बानी और इख़लास से भरा हुआ पाया। और ख़िलाफ़त से उन्हें बेइंतिहा मोहब्बत थी। और जब उन्हें माली क़ुर्बानी के बारे में बताया गया और जब हज़रत मसीह मऊद अलैहिस्सलाम के इकतेबास पढ़ कर सुनाए तो फिर कहते हैं कि कुछ दिनों के बाद एक दोस्त सदर साहब के पास आए और एक बड़ी रकम उन्हें अदा कर दी और कहा कि मैं जब से अहमदी हुआ हूँ, उस वक्त से लेकर अब तक यह चंदा है, क्योंकि चंदे के बारे में मैंने हज़रत मसीह मऊद अलैहिस्सलाम के अरशादात और ख़लीफ़े-ए-वक्त की नसीहतों को नहीं सुना था। अब मैंने सुन लिया है तो अब मैं पीछे नहीं रह सकता।

नाइजर से असगर अली भट्टी साहब लिखते हैं कि पिछले साल अक्टूबर 2011 में तब्लीग़ के दौरान विनीत ग़िदाब्राव (Gida Braoo) गाँव में पहुँचा। नमाज़-मग़रिब के बाद तब्लीग़ की गई और नमाज़-ए-इशा के बाद मेरे दौरे की जो विभिन्न वीडियोज़ थीं, वो दिखाई गईं। जलसे दिखाए, मस्जिदों के बारे में प्रोग्राम दिखाए, तब्लीग़ी मसाई के बारे में प्रोग्राम दिखाए, इसी तरह ईमाम महदी की आमद के बारे में बताया, बैतुल--माल के नज़ाम के बारे में बताया। यह सब कुछ वीडियो में था तो जब वीडियो ख़त्म हुई तो एक ईमाम साहब वहां उठे जो हाउसा लोगों को ख़िताब हुए और मस्जिद से बाहर चले गए। कहते हैं हम परेशान थे लेकिन थोड़ी देर बाद वो वापस आए और उन्होंने कहा कि हमें अब पता लगा है कि ईमाम महदी आ गए हैं और बैतुल-माल का नज़ाम क़ायम है। मैं इन सब को ले कर गया था इस लिए कि इस नज़ाम में हमें हिस्सा लेना चाहिए और चंदों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। चूँकि उन्होंने वहां फौरी तौर पर रकम इकट्ठी की और वो हमारे मिशनरी को अदा की और फिर साथ ही उन्होंने बै'त फॉर्म भी भर दिए।

दारुस्सलाम तंजानिया के एक अहमदी दोस्त ईसा साहब बताते हैं। उन्होंने नब्बे के दशक में अहमदियत क़ुबूल की थी। इससे पहले वह ईसाई धर्म से ताल्लुक़ रखते थे, लेकिन अहमदियत क़ुबूल करने के बाद उनके इमाँ में काफी तरक़्क़ी हुई। अब माशा अल्लाह, वह मोसी हैं और माली क़ुर्बानी करने वालों में से हैं। हमेशा अपनी और अपनी फैमिली का चंदा वादे से ज्यादा अदा करते हैं। जमाअत की तालीमात को निभाने में पुराने अहमदियों से बहुत आगे हैं। अल्लाह के फ़ज़्ल से, वह दार-उल--सलाम तंजानिया के रीजनल प्रेसीडेंट हैं। कहते हैं कि जब से मैंने अल्लाह की राह में क़ुर्बानी शुरू की है, अल्लाह के बहुत से अफ़्ज़ाल अपने ऊपर नाज़िल होते देखे हैं। इतनी बरकतें नाज़िल हुई हैं, जो बेशुमार हैं। मिसाल के तौर पर कहते हैं कि पहले मेरे पास एक घर था, लेकिन अब अल्लाह के फ़ज़्ल से तीन घरों का मालिक हूँ। मेरी औलाद भी बेहतरीन जगह पर तालीम हासिल कर रही है।

नाइजीरिया की एक जमाअत ओकीने (Okene) के सदर साहब कहते हैं। विनीत कुछ अरसे तक माली मुश्किलात का शिकार रहा, जिसकी वजह से काफी परेशानी हुई। फिर एक दिन मुझे ख़याल आया कि मैंने तीन माह से चंदा अदा नहीं किया। हो

शेष पृष्ठ 12 पर

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad